तृतीय तरंग

श्रीनाथजी के कीर्तन के राग :—

चैत्र बदी प्रतिपदासों अक्षय तृतीया तक के मंगला श्रृंगार ग्वाल राजभोग तक—भैरव, रामकली, बिलावल, देवगन्धार, विभास। राजभोग सन्मुख में—सारंग। यह काल्हू में हू गायो जाय है। उत्थापन भोग आरती में—नट पूर्वी गौड़ी। शयन में—कान्हरा, इमन, नायकी, केदारा. अडाना, विहाग। अक्षय तृतीया से नायकी राग बन्द है जाय और कल्याण गायो जाय।

चैत्र वैशाख से रथयात्रा पर्यंत ऊपरवारे राग गाये जांय। जेठी पूनम से लेकर रथयात्रा के पूर्व दिन तक में राग विशेष में गवें। और समै नहीं। सुवा, बिलावल—सोरठ।

रथयात्रा सौं श्रावण शुक्ला पूनम तक मल्हार राग हिंडोरा के समय सब राग गवें, तथा बधाई में भी सभी राग गाये जाय। पलना में केवल बिलावल एवं रामकली गायो जाय। बाललीला में रामकली बिलावल आसावरी। ढाढी तथा राधाष्टमी में सभी राग गवें। अन्य राग भी गवें जैसे—

आसावरी, देव गन्धार, बिलावल, सारंग, जैतश्री, मालव, मारू, जैजेवन्ती कान्हरा, इमन। दान में—सभी राग गाये जांय। विशेष—बिलावल, धनाश्री, खट् ललित, देवगंधार, विभाष, टोड़ी, सारंग, नट, पूर्वी गोडी, कल्याण, इमन, कान्हरा, केदारा, अडाना, जेजैवन्ती, विहाग। सांझी में—गोड़ी पर्वी—मुरली में—बिलावल, रामकली, खट् सारंग, गोड़ी, अडाना, कान्हरा। अन्नकूट में—देवगन्धार, बिलावल, राजभोग सरेपं—गौंड सारंग, भी होय है। नट, सारंग कल्याण, मालव, इमन, कान्हरा, अडाना।

रास में—भैरव, बिमास, रामकली, बिलावल, सुघराई, खट्, टोड़ी, आसावरी, सारंग मालव, पूर्वी, जेजैवन्ती, नट, मारू, गौड़ी, कल्याण, इमन, कान्हरा, अडाना, केदारा बिहाग।

इन्द्रमान भंग में—भैरव, बिलावल, रामकली, धनाश्री, सारंग, नट पूर्वी, सोरठ, मालव, कल्याण, कान्हरा, अडाना, केदारा ।

गोचारण के पदन में—देवगन्धार—बिलावल, सारंग, गोड़ी, पूर्वी, कान्हरा, अडाना, केदारा । **प्रबोधिनी में**—बिलावल मालव अडाना । **शीतकाल में**—सारंग राग नहीं गायो जाय । **व्रतचर्या चीरहरण में**—भैरव, विभाष, रामकली, ललित, मालकोस, देवगन्धार, खट्, बिलावल, इमन, सुधराई, टोड़ी, आसावरी जैतश्री, धनाश्री, पंचम । उपरोक्त रागन के अलावा-काफी, सोरठ, मल्हार, रायसा, बसन्त काफी । ये सब राग श्रीनाथजी के पाटोत्सव सों खुलें ।

यहां रागन के लिखवे को कारण यह है कि जो रितु में जो परिपाटी में सेवाक्रम में प्रभु सुख में जो राग गवें वे आचार्यननें प्रणालिका सों संबद्धकरी है । तासों श्रीनाथजी के घरकी प्रणालिका बांधी तामें ये रागहू गवें । और न गवें । जो जा समै के हैं वे वा रितु में ही गवने चाहियें । तासों ही प्रणालिका बांधी । यामें ये प्रणालिका गोस्वामी तिलक श्री गोवर्धनेशजी महाराज तथा गोस्वामितिलक श्री लाल गिरधारी जी प्रधान रहे । कारण आपश्री ने पद निर्माण करिकै गाय बजाय कै प्रभु रिझाए ।[1]

हिडोरान में—अष्टनिधि वर्णन—**मथुरानाथजी**, द्वारकानाथजी, **बालकृष्णजी** नवनीतप्रिय के झूला वर्णन याम्रो नाहीं कि ये यशोदोत्संगलालित तथा कुमार पौगंड लीला के सरूप है । तासों पांच स्वरूपन के वर्णन के हिंडोला में कई पद है । गोकुलनाथजी गोकुलचन्द्रमाजी विट्ठलेशराय जी मदनमोहन जी तथा नटवरजी श्री गोवर्धनधर ।

विट्ठलराय—(मल्हार)

विट्ठलराय लाल गिरधरन झुलावत सुरंग हिंडोरे ।
सुन्दर वदन निहारत फिर-फिर चितवत नयना जोरे ।
अतिसोभित सिरपाग संवारी केसर के रंग बोरे ।
कर्णफूल अरु चिबुक बदन पर झलकत थोरे-थोरे ।
तैसी संग राधिका रानी लागत छवि तन गोरे ।
श्री विट्ठलगिरधरन झुलावत जुवतिन के चित चोरे ।

१—श्रीजी के कीर्तनन के मुखिया श्री गंगादासजी की पुस्तक से उद्धृत । यह गोस्वामितिलक श्रीगोवर्धनलाल जी महाराज ने लिखवाई । वल्लभ दास बीनकार की कृपा से प्राप्त ।

गोकुलनाथ जी—(विहाग)

बिहारीजू वारी हों सारी संभारू हां हां नेक होले-होले झूलों
पटली पग ठहरात नाहिं नथहरात पीडूरी फहरात दुकूलो
टूटयो हार गजरा गिरि गयो छूट गई कबरी खस्यो सीस फूलो ।
श्री गोकुलनाथ जू प्यारे तिहारी संभार नाहिन अहो आज हूलो

चन्द्रमाजी—

झूले श्रीगोकुलनाथ आलीरी ।
झूलत गोकुलचन्द हिंडोरे झुलावत सब ब्रज की नारी ।
संग सोभित वृषभाननन्दनी पहरे कंसूभी सारी ।
पचरंग डोरी गहि लीनी डांडी सरस सँवारी ।
आसकरण प्रभु मोहन नागर झूलत गोवर्धन धारी ।

मदनमोहनजी—

झूलत गोकुलचन्द हिंडोरे नटवर वेष किये ।
झूलत मदनमोहन पिय राजत संग राधिका लीने ।"

मल्हार वर्णन

चतुर्भुजदास की मल्हार—

सखीरी देख सोभा बन की ।
इत मोहन मुख मधुर मुरली उत गरजन नव घनकी ।
उत ही स्याम [illegible] इत राजत सांवल तन की ।
उत बग पंगति हीरावलि मुक्ता गिरधर गरे लसन की ।
इत ही रुचिर बनमाल बनी उर उतहि रहन इन्द्र धनु की ।
उत दामिनी चपला चमकत इत फरकन पीत बसन की ।
उत धुरवा इत धातु विचित्र रुचि सुभग श्रीअंग लसन की ।
उत बूंदे द्रुम वेली सींचत इत प्रेम नीर बरखन की ।
अति आनन्द निरख दोऊ सुख गावत विहंगम गन की ।
चतुर्भुज प्रभु गिरधरन रसिकवर करि बिनती बिलसन की ।

या पद में घन एवं घनश्याम को एक्य । एवं वर्षा रितु को समस्त परिकर प्रभु की तुलना में सिद्ध कियो है ।

परमानन्ददासजी को—

देखो माई भीजत रस भरे दोऊ ।
नन्द नन्दन वृषभान नन्दनी होड़ परी है जोऊ ।
सुरंग चूनरी श्यामजू की भीज रही रस भारी ।

गिरधर पाग उपरना भीज्यो या छवि ऊपर वारी ।
बातहि बात होड़ भई भारी ललितादिक समुझावें ।
दोऊ मिल झगरत मानत नाहीं सखि सब बूंद बचावें ।
इत मोहन हारे सिर नावे हंसी सकल ब्रजनारी ।
परमानन्द प्रभु यहि विधि क्रीडत या सुख की बलिहारी ।

नन्ददासजी कौ—

आयो माधव नरेस देस-देस में आनन्द भयो मन्मथ अगवानी सहायकों बुलायो ।
मोरन की टेर सुनि कोकिला कुलाहल तेतोई दादुर हिलमिल सुर गायो ।
चढ़्यो घन मत्त हाथी पवन महावत साथी अंकुश अंकुश दे दे चपला चलायो ।
दामिनी धुजा पताका फहरत सोभा बाढ़ी गरज-गरज धौंसा बजायो ।
आगे-आगे धाय-धाय बादर बर्षत आय कारन कीन्हु सब ठौर-ठौर छिरकायो ।
हरी-हरी भूमि पर बूंदन की सोभा बाढ़ी बरन-बरन रंग बिछौनो बिछायो ।
बांधे है बिरही चोर कीनी है बलन रोर संयोगी साजन सों मिल समुझायो ।
नन्ददास प्रभु नन्दनन्दन को आज्ञाकारी अति सुखकारी ब्रजवासी मन भायो ।

कृष्ण चन्द्र मावस की अंधियार दूर की बानी है—

भींजत आये गेह लाल गाई ।
हाथ लकुटिया कामर ओढ़ें मूरत कीन सनेह ।
निसि अँधियारी हाथ नहिं सूझत पवन झकोरत मेह ।
सूरदास दामिनी के दमके लखी सांवरी देह ।

कुम्भनदासजी कौ—

देहो कान्ह कांधे को कम्बर ।
रिमझिम-रिमझिम घन बर्षत है भीजे कसूंभी अम्बर ।
घन गरजत डरपत हो मोहन देख मेघ को डम्बर ।
कुम्भनदास प्रभु गोवर्धनधर लाल ग्वाल को सम्बर ।

छीतस्वामि कौ—

एरी यह नागर नन्दलाल कुंवर मोरन संग नाचें ।

कटि तट पट किंकिणी कल नूपुर रुनझुन करे नृत्य करत चपल चरन घात घात सांचो ।

उदित-मुदित सघन-गगन मोरत घन दे दे टेर कोकिला कलगान करत पंचम स्वर जाचों ।

छीतस्वामि गोवर्धननाथ संग श्रीवल्लभ हर बिलास वृन्दावन प्रेम माह राचो ।

गोविन्द स्वामि कौ—

ओन्हर चहुं दिसिते घन घोरे आईजु स्याम जलद घटा ।
दम्पति अति रस रंग भरे बांह जोरि फिरत कुसुम बीनत कालिन्दी तटा ।
नन्ही-नन्ही बूंदन बरखन लाग्यो तैसिय चमकत बीज छटा ।
गोविन्द प्रभु पिय प्यारी उठ चले ओढ़े लाल पट दौर लियो जाय वंशीबटा ।

कृष्णदास कौ—

ब्रज पर स्याम घटा जुरि आई ।
तैसिय दामिनी चहु दिस कौंधत लेत तरंग सुहाई ॥
सघन छांह कोकिला कूजत चलत पवन सुखदाई ।
गुंजत अलिगन सघन कुञ्ज में सौरभ की अधिकाई ॥
बिकसित स्वेत पांत बगलन की जलधर सीतलताई ।
नव नागर गिरधरन छबीलो कृष्णदास बलि जाई ॥

जन भगवान की रूप माधुरी घटा श्री स्वामिनीजी पर—

राधे रूप की छटा पोषत चातक मदन गोपालें ।

दामिनी वारों दसनन उपर छूटी अलकन पर धुरवा वारों बगपंगति मुक्ता मालें ।

इन्द्र धनुष पचरंग सारी पर वार डारों ओर जावक पर बूड़त लाल ।
जन भगवान मदन मोहन पर तन-मन पिक वारूं सुनि-सुनि बचन रसाल ।

वृन्दावन चन्द की मल्हार—

अंग-अंग घन कान्ति मोतिमाल बग पांति इन्द्र धनुष बनमाल शोभा छिन-छिन है ।

दामिनी दमक पीताम्बर की चमक मुरली की घोर मोर नाचे रैन दिन है ।

वृन्दावन चन्द रीझे-रीझे मोर दीजे कहा रीझहू न दीजे रीझेको न गिन है ।

धरती ते चन्द्रिका लीन शिरधारी गिरधारी हँस बोले नाथ मोर तेरो रिन है ।

प्रश्न—श्रीजी में नित्य नियमित श्रावण में ही दिवाल गिरी चन्दोवा टेरा वन्दनमाल फिरती आवे तथा और दिन क्यों न आवे ?

उत्तर—राधारानी स्वामिनी कुञ्जेश्वर की रानी आदि आप के सरूप है और आप राज राजेश्वरी ठकुरानी है तासों आप की सेवा क्रम में राजलीला तथा वैभवादि सो युक्त होवे सों जब-जब भी आपकी प्रधान सेवा आवे तब-तब दिवालगिरि चन्दोवादि आवें जैसे राधाष्टमी दिवाली इन दिनन में तथा श्रावण के ३२ दिन ताईं आवें। या सेवाक्रम को बन्धान पूज्य स्वनाम धन्य श्री विट्ठलवर गुसांईजी ने प्रारम्भ कियो तासों स्वामिनी भाव में वल्लभ कूँ मानिके सर्व सुख राजकीय वैभव के साथ आपकी सेवा राखी। "राजत गिरधरन संग राधिका रानी" तथा—"आज बनीरी कुञ्जेश्वर रानी।"

सूरदास ने हू वन्दना में लिख्यो है—

"जग नायक जगदीस पियारी जगत जननी जगरानी
नित विहारगोपाललाल संग वृन्दावन रजधानी"

सो **व्रजेश्वरी राधारानी वृन्दावन राजधानी की रानी** की सेवा हू **वही राजकीय वैभव से होवे।** श्रीमद्भागवत में हू चन्दवा दिवालगिरी आदि को वर्णन **द्वारकालीला में दो स्थानन में तथा मथुरा लीला में एक स्थान में मिले है। व्रजमें तो राज लक्ष्मी पांयन में लोटती रही है।** "श्रयति इन्दिरा शश्वदत्रहि" **या भाव सों** चन्दवा दिवाल गिरी टेरादि हैं।

मथुरा के राजप्रासाद वर्णन नवम स्कंध में राम राज्याभिषेक **वर्णन में** "जुष्टेषु जाला मुखरन्ध्र कुट्टिमेष्वाविष्ट पारावत बर्हि नादिताम्।" तथा **द्वारकालीला में प्रासाद वर्णन** रुक्मिणि भवन आदि मिले है। "तस्मिन्नन्तरगृहेभ्राजन्मुक्ता दाम विलम्बिना" तथा "पारिजात वनामोद वायुनाधान शालिना" (१०/६०/४-५)

आगे नारदजी कों गृहस्थ दर्शन में राजभवन में दिखाये—विष्टब्धं विद्रुमस्तंभैर्वैदूर्य फलकोत्तमैः (१०/६९/९-३०)

व्रज साहित्य के कवियन के वर्णन में—

कृष्णदास—रोप्यो हिंडोरना नन्द गृह शुभघरी देख।

कृष्णदास—गोपी गोविन्द के सुरंग हिंडोरना झूलन आई।
सूत्र चहुदिश रचित परदा पद्मराग सुरंग।
घनि हेत हरि हिंडोल शाला रची विविध तरंग।

परमानन्द—गोपी गोविन्द के गुण विमल परम हित गावे गीत।
तहाँ होत मंगल घोष घर-घर जहाँ रमा अनन्त।
वैकुण्ठनाथ दयाल श्रीपति सोहे श्री भगवंत॥

अतः रमा (लक्ष्मी) की राजवैभव भी तुच्छ होवे सों दिवालगिरी चन्दोवा पंखा झालर वन्दनमाल टेरा परदा आदि शुभ्र शैया बिछात ये सब श्रीस्वामिनीजी की सेवा में निहित करि असंख्य सेवक परिचारिकान सों रागरंग, रसधार, भोग, राग, शृंगार आदि सों सजावट बिछात तथा भीतर सब साज आवें। ये बत्तीस दिन आवे। और दिन स्वामिनीजी की सेवा के नहीं। दिवाली, राधाष्टमी तथा श्रावण ये तीन समै ही सेवा होय।

श्रावण भाद्रपद आश्विन ये तीन मास श्रीस्वामिनीजी श्रीराधाजी श्री लाडली जी की सेवा के होवेसें सेवाक्रम लिख्यो जाय है :—

श्रीजगद्गुरू वल्लभ महाप्रभु ने तो बालगोविन्द यशोदोत्संग लालित श्रीकृष्णजी की सेवा करिकैं बाल भावसों ही प्रभु सुख देखि, सेवा भावना सिद्ध करी। जगद्गुरु वल्लभ महाप्रभु के द्वितीय कुमार श्री गुसांईजी विट्ठलनाथजी ने कान्ताभाव एवं बालभाव स्थिर करि अष्टयाम, अष्टनिधि, अष्टसखा की स्थापना करिके स्वामिनीवत् जगद्गुरु कौं मानि सेवा प्रकार तथा ग्रन्थादि प्रणयन कीनो सो या प्रकार है :—

राधा प्रार्थना चतुश्लोकी—

१

श्याम सुन्दर शिखण्ड शेखर स्मेर हास्य मुरली मनोहर।
राधिका रसिक मां कृपानिधे ! स्वप्रिया चरण किंकरी कुरु॥

२

संविधाय दशने तृणं विभो प्रार्थये व्रज महेन्द्र नन्दन।
अस्तु मोहन तवातिवल्लभा जन्म-जन्मनि मदीश्वरी प्रिया॥

स्वामिन्यष्टक—

न मे पुष्याम्भोजो न पुनरमराधीश सदनं।
न योगो न ज्ञानं न विषय सुखं दु:ख कदनम्।
त्वदुच्छिष्टं भोज्यं तव पद जलं पेयमपि तद्,
रजो मूर्ध्निस्वस्मिन्यनुसवनमस्तु प्रतिभवम्॥ १॥

स्वामिनी स्तोत्रम्—

विविध बंध रतिश्रम सीकरा,
कुल कपोलमुदीक्ष हरिं यदी।
स्मरसि मां व्यजनार्थमपिक्षणं,
सुमुखि धन्य तवास्मि तदाह्यहम्॥ १॥

स्वामिनी प्रार्थना—यामें जप होम स्वाध्याय तर्पणादि को संकेत है—

(१)

श्रीराधे प्रियतम दृक् संगम संजातहास दृक् सलिलैः।
भवदीये स्नानं मे भूयात् सततं न पाथोभिः॥

(२)

भूयान्मे व्यवहार स्तावक् ताम्बूल चर्वितेनैव।
पाने करुणाकूलः स्मितावलोकामृता नैव॥

(३)

नियचन भवदंघ्रि प्रणति संख्या प्रहुल्लदैन्येन।
जापस्तु ताप क्लेशैर्विनाद भावेन कीर्तनं भाव्या॥

(४)

अस्तंगच्छत्सूर्यो शिशुलग्नो दिवस दुःख होमोस्तु।
स्वरभ्रष्ट प्रियवार्ता कथनं मे ब्रह्मयज्ञोस्तु॥

(५)

भवतीनां प्रिय संगम संजात मनो महोत्सवेक्षणतः।
तर्पणमिह सर्वेन्द्रिय तृप्तिर्भवता मनोरथास्मान्मे॥

(६)

इत्थंजीवनमस्तु सजनपि भवदंघ्रि चिन्तनोमस्तु।
मरणं भवता देवं नामे शरणं त्वमेवभव:॥

श्रीहरिराय महाप्रभु कृत—राधाष्टकम्:—

पुरा रासारम्भे शरदमल रात्रिस्वपि हरिः,
प्रभावोवल्लीला स्मरण कृत चिन्ता मनुलाम्।
हृदि प्रादुर्भूतं बहिरपि मुकुंदोचितमिव,
स्वतो वारं-वारं पिक मित हृलाम्बाहृति भजे॥
नमे वाञ्छा मोक्षे भृतिषु चतुरात्मा निगदितो,
न शास्त्रीया भक्तिर्न पुनरिह विज्ञान भजिषे।
कदाचिन्मा स्वामिन्यहह भविताले कृपयतु,
स्वतः स्वाचार्याणां चरण शरणे दीन करुणा॥

हरिरायकृत मुख्य शक्ति स्तोत्रम्—

जयतु सदायन्नाम स्वयं निकुञ्ज स्थितो नाथ।
मन्नामैव प्राप्त्यर्थं सा जयति स्वामिनी राधा॥

भाव तनौ भावात्मा स्थिता स्वयं भावेन भाविता सततम्।
श्री वल्लभाभिधाने तद्रूपा वा सदा जयति॥

या श्लोक में श्री हरिराय महाप्रभु ने स्वामिनी रूप में श्रीवल्लभ को मानिके नमन कियो है। तथा सेवा में हू वल्लभ की प्रधानता बताई यासों ही श्रावण भाद्रपद आश्विन की सेवा इनसों रचित बताई है।

स्वामिनी प्रार्थना—

स्वाधीन गोपी जनवल्लभाय,
निः साधनानुग्रह कारणायाः।
कृपारस प्रापित मत्प्रभोः स्वां॥
कदा तवाहं पद पांसुजन्मा॥

अन्त में प्रार्थना—

इति श्री मत्स्वामिन्यतिशयित दीने मयिपरं,
पराधीने पीने खिल भजन दोषैरपि सदा।
कृपा कार्या धार्या हृदि च मम चितं मुररिपु,
प्रियस्वाचार्याणां चरण शरणोहं हरिरतिः॥

आचार्यन की याही भावना सूं प्रेरित है कें ब्रजभाषा साहित्य में अनेक भक्तन ने राधिका स्वामिनी लाड़ली प्यारी श्यामा किशोरी वृषभान नन्दनी लली आदि नामन सूं युगल स्वरूप को अंग सौष्ठव शृंगारादि के साथ नित्यलीलादि वर्णन कियो है उदाहरणार्थ—

सूर—प्रात समें नव कुञ्ज महल में श्रीराधा अरु नन्द किशोर।

परमानन्द—बैठे लाल कालिन्दी तीरा।
ले राधे गिरधर दै पठयो यह परसादी बीरा॥

कुम्भनदास—(ले राधे) गिरधर दे पठई अपने मुख की सुन्दर बीरी।

नन्ददास—नन्द भवन की भूषण माई।
जसुदा को लाल बीर हलधर को (राधा) रमन सदा सुखदाई।

गोविन्द स्वामी—राधत गिरधरन संग राधिकारानी।

कृष्णदास—पौढ़े राधिका के गेह।

नन्ददास—चांपत चरन मोहन लाल।
पलका पौढ़ी कुंवरि राधे सुन्दरी नवबाल।

हरिरायजी—पौढ़े श्याम राधे संग।

सूर—पाछे ललिता आगे **स्यामा** पियारी ।

नन्ददास—**लाडली** ने मनाये लाल आप पाऊ धारो ।

वल्लभ (गोकुलनाथजी)

बैठे हरि राधा संग कुञ्ज भवन अपने रंग…………

प्यारी जब गह्यो बीन सकल कला गुन प्रवीन………

चत्रभुज—गोवर्धन गिरि सघन कन्दरा रैन निवास कियो पिय **प्यारी** ।

हरिराय—सेन काम की लायो सो सावन आयो ।

काम नृपति वृषभान नन्दिनी रसिक राय वरषायो ॥

परमानंद— धन-धन **लाड़ली** के चरन ।

अति ही मृदुल सुगंध सीतल कमल कैसे वरन ।

नख चन्द चारु अनूप राजत जोति जगमग करन ।

नुपुर कुञ्ज विहरत परम कौतुक करन ।

नन्द सुत मन मोद कारी सुरत सागर तरन ।

दास परमानन्द छिन-छिन स्याम ताकी सरन ।

हरिराय—बरसाने बर सरोवर प्रकट्यो अद्भुत कमला सूर ।

कृष्णदास—महारस पूरन प्रकट्यो आन,

कृष्णदास जबतें राधा भूतल प्रकटी विधिको **मान्य** हन्यो ॥

परमानन्द—अमृत निचोय कियो इक ठौर ।

गोविन्द स्वामि—राय गिरधरन संग **राधिकारानी** ।

आज बनी कुञ्जेश्वर रानी ॥

कुम्भन—न्याय री तू अलक लड़ी ।

कुम्भनदास **स्वामिनी** श्रीराधा **है** व्रज युवतिन **मांझ बड़ी** ।

श्रीस्वामिनीजी राधाजी **की सेवा** के ये तीन मास **हैं**, तासों ही **चालीस** दिना पर्यन्त झांझ बजे । बधाई गवे, और प्रिया प्रीतम की अन्तरंग लीला के दर्सन **होय है** । याकी परिसमाप्ति में महाभोग आवे वैसे चारों यूथन में चन्द्रावली जी एवं आप बराबरी की होवे । वसन्त के चालीस दिनन में भी **झांझें** बजें ।

श्रावण

श्रावण—सुहागी श्रावण जहाँ प्राणनाथ व्रजनाथ श्री गोवर्धननाथ हिंडोला झूलें तथा पुष्टि सृष्टी के समस्त वैष्णव भक्त दर्शन कर जीवन सफल करें । भक्तहू गाये है—'यह सुख सावन में बनिआवे ।' **(परमानन्द)** । सो सावन आयो सेन काम की लायो **(हरिराय)** । आयो आयोरी सावन अब मनभावन **(मुरारीदास)** । सावन दूल्हे आयो सखीरी **(सूरदास)** ।

श्रावण कृष्ण पड़वा सों लैके भाद्रपद कृष्णा दूज तक बत्तीस दिन हिंडोला लीला होय है । यह चार यूथाधिपान के मनोरथ हैं जामें **श्री स्वामिनी जी** (राधा) **श्री महाप्रभू श्री चन्द्रावली जी (श्रीविठ्ठलवर) ललिताजी श्रीदामोदरदास** (हरसानी) **जमनाजी यामें चार-चार यूथाधिपान** की सहचरी ह्वैके आठ आठ मनोरथ होय हैं । तथा चार स्थानन में हिंडोरा लीला के वर्णन मिले तथा **सेवाक्रम में हू चार स्थान है नन्दालय** (१) **श्रावण कृष्ण** प्रतिपदासों अष्टमी तक फेर **गिरिराज** पर **श्रावण कृष्ण** सों ६ **श्रावण शुक्ला** पड़वा तक फेर **कुञ्जन** में श्रावण शुक्ला १ सौं **अष्टमी** तक फेर **जमनापुलिन में श्रावण शुक्ला** । ऐसे दूज तांई व्रज में **श्रीगोकुल नाथजी की व्रज** यात्रा में **हिंडोला के** स्थान इतने अद्यावधि **विद्यमान है** । ये ६ स्थान है—

१ **गोवर्धन** २ **करहला** ३ **संकेतवन** ४ **अजनोद पर** ५ **वृन्दावन** ६ **श्री कुण्ड** । और हू स्थान में **कुसराई** (**कृष्णकुण्ड के पूर्व**) **ललिताकुण्ड** पर **कामवन में कुमवारा** में, रीठोरा में, **बरसाने** में, **जांव** में और **गोविन्दकुण्ड** पर या प्रकार सोलह स्थानन पे हिंडोरा लीला है । एक प्राणनाथ श्री गोवर्धनधर दूसरे स्वामिनी जी या प्रकार १६+१६=३२ दिन झूलें झुलावें ।

हिंडोला वर्णन—

श्रीमद्भागवत में हिंडोला वर्णन—

श्रीर्षेण रचिष्यस्याय पादयोः

करोतिमानं बहुधा विभूतिभिः,

प्रेङ्खश्रिता मा कुसुमाकरानुगं ।

विधीयमाना प्रिय कर्म गायति । (२-६-१३)

"**क्वचित् स्यान्दोलिकया**" (१०-१७-१५)

एवं तौ लोकसिद्धाभि; क्रीडाभिश्चेरतुर्वने ।

नद्यद्रि द्रोणिकुञ्जेषु काननेषु सरस्सुच ॥ (१०-१८-१६)

श्रावण कृष्ण पड़वा **हिंडोलारम्भदिवस अच्छेमुहूर्त** सों देहली वन्दन माल अभ्यंग **मंगला** में उपरना **वस्त्र लाल (कसूमल)**, पिछोड़ा, पाग, हरी लाल **खिड़की** की, वस्त्र किनारी के, सुनहरी **ठाड़े वस्त्र** पीरें, पिछवाई **खण्ड** लाल सुनहरी किनारी दुहेरा की, आभरण उत्सव के, जड़ाऊ कर्णफूल चार, मोर चन्द्रिका सादा लूमतुर्रा । सिर पेंच हास **चवल बन** माला कौ श्रृंगार, दिवालिगरी मणिकोठा डोल तिवारी में ।

आजसों भाद्र पद कृष्ण २ तक फिरती आवे चन्दोवा बन्दन माल पड़दा (टेरा) बे सब बदलते रहें। आज से भोग आरती सामिल होय। आरती को खण्ड चढ़े। सयन को जोड़ उतरे। साज सब सोना को। खण्ड पाट शय्या गुलाब दानी पंखा ये सब जड़ाऊ तथा सोना के बंटा तृष्टी आदि सब सोना के आवें। चौकी पे सफेदी नहीं आवें। हरी मखमल जड़ाऊ चौकी पें गादी आवे। राजभोग बाद हिंडोला खाटको। सांज हू रंगीन आवें। तथा निज मंदिर में चन्दोवा पंखा बन्दनमाल टेरा सब रंगीन आवें। शैया मंदिर में हू चांदनी टेरा रंगीन आवें। दुपहर में राज भोग होय चुके बाद डोलतिवारी में चांदी को हिंडोला आवे। यह हिंडोला बत्तीस दिन तक रहे। बाहर ही सब हिंडोला पल्लव के पुष्पन के सोना आदि कलानके आवें। सेवानित्यक्रम की होयके उत्थापन भोग सरे बाद हिंडोला को अधिवासन होय, फिर घंटा झालर संखध्वनी होते भये मंदिर निज सों प्रियाप्रीयतमा डोलतिवारी में युगल छवि गलबौंहियां देते सहचरीन के साथ हिंडोला में पधारि के झूलें। श्रीस्वामीनीजी श्रीनाथजी युगल छवि झूलें। वेणुगीत में झूलें। सखीभाव भावित भीतरियामुखिया संग पधारें। बाहर तबल चौक में कीर्तन झांझमृदंग बाजी सारंगी आदि सों होय। फेर हिंडोला में भोग आवे। प्रथम दिन के समय भये भोगसरे फेर युगल स्वरूपनकों वेणुसहित समस्त गोस्वामि बालक, बहूबेटी, झुलावें पश्चात् युगलस्वरूप भीतर निकुञ्जस्वरूप निज मंदिर में पधारें श्री मदनमोहनजी हिंडोलामें बिराजें तथा श्री बालकृष्ण जी अमुक अमुक दिन बिराज के झूलें। चारों दिवस सेवक वर्ग सखीभावसों परचारग बाल भोगिया दूधधरिया खासा भंडारी पानघरिया फूल धरिया परचारग जलघड़िया पातलमांज्या रसोई पोता, रसोइया आदि सब चंवर करें। प्रथम पद आरम्भ में सम्मुखसों झुलावे फेर बीचबीच में चंवर एवं पंखाकरत जांय। और जब जब पद आरम्भ होय तब तब बीच सों झोटादें दर्शन होते रहें। असंख्य भक्त दर्शन करें। सम्मुख कीर्तनिया खड़े खड़े कीर्तन करें।

समाधानी हुस्ता जी एवं अधिकारी आदि खड़े रहें भीतर खवास की चढ़े रहे। श्रीजी के सम्मुख छोटो हिंडोला आवे एक तीसरा मुखिया भीतर पंखा करत रहे जब चार कीर्तन आठ कीर्तन पूरे होय तब बैठा होय तब के दर्शन करते श्री मदनमोहनजी वेणु बजाते बालकृष्ण जी सम्पुट सों झारी बीड़ा की तृष्टी गादी सहित निकुंज में श्री जी बेला सम्मुख कराय तत् तत् स्थान में बिराजें। फेर वेणु वेत्रधराय नित्यक्रमसो आरती होय। कीर्तनीया हिंडोला के पीछे व्रजवल्लभजी के अष्टसखा कीर्तन करे आरती होय चुके बाद नित्यक्रम की सेवा होय तथा डोलतिवारी में मंदिर वस्त्र होय। बिछात होय यह सेवा ३२ दिन तक होय बीच बीच में उत्सव को क्रमहू आगे वर्णन करेंगे।

सेवानित्यक्रम की होय आज की सेवा श्री ललिताजी एवं चन्द्रावलीजी मिलके करें हैं तासो ही लाल अनुराग के रंग के वस्त्र धरें हैं तथा ठाडे वस्त्र पीरे ताको आशय श्री स्वामिनीजी की आडी सो युगलछबिको झुलावत है आज सो आठ दिन लों नित्य पाग आवेगी तो खिड़की की ही आवत है और सातों घरन के भावहू के शृंगार मानत है प्रथम श्री मथुरानाथजी के घर कों आडीसो गिरधरजी द्वारा होय।

श्रीनाथजी को हिंडोला की विशेषता :—

प्रथम समस्त पुष्टि मार्गीय मंदिरन में हिंडोला में सिंहासन होय है। यहाँ चौकी आवत है ताको कारण यह है कि और घर नन्दालय के होत है। जसोदाजी अपनी गोदी में लेकें प्रभु को झुलावत है। यहाँ निकुञ्जनायक गौलोक नायक है और चारों ओर व्रजललना दर्सन करें और झुलावें। भोग समै हिंडोला यहां होय है और घरनमें सन्ध्याति बाद। ताको आशय है व्रजरानी कन्हैया गाय चराय के आय जाय ताके बाद शैया अरोगाय झुलावन को जात है तथा उत्सवन में तो शयन भोग अरोगाय के झुलावे ले जाय है यहां व्रज के कुञ्ज निकुञ्जन में नित्य लीला संवेष्टित किशोर सरूप भोग समे तासो झूलकर घर पधारत है तासो आरती बाद में होत है और भोग में हिंडोरा झूलत है। पलना डोल आदि में मदनमोहनजी न पधारें श्री नवनीत प्रियजी पधार के झूले सो काहेते और हिंडोलान में श्रीमदनमोहन जी कायको झूलें ?

ताको आशय यह है कि जगद्गुरु वल्लभ महाप्रभू के जेष्ठ पुत्र श्रीगोपीनाथ जी जिनके माथे आचार्य महाप्रभू के सेवक अच्युतदास जी मदनमोहनजी पधारे और गोपीनाथजी ने किशोरसरूप मदनमोहनजी को श्रीजी के समीप पधराये त:सों बड़े भाई गोपीनाथजी के सरूप को उनके समयसो हिंडोरा में श्री मदनमोहनजी झूलतहुते सो अद्यावधि प्रचलित हैं तथा नवनीतप्रिय को पधरावे तथा सेवा क्रमकी वंधान श्रीगुसाई जी विट्ठलनाथ जी ने वाध्यो तासो एक कालावच्छिन्न उभय-लीला दर्शन की सेवा बांधी श्री मदनमोहनजी वेणुधराय झूलत है वैसे सदा वेणु नहीं धरें ताको आशय; मदनमोहन जी वेणुनाद करत मोहित किये सो मदन हूं मोहित भयो तासो आप हिंडोला में झूलत है संग में श्री बालकृष्णजी हू झूलत है जब जब बालकृष्णजी झूलत है तक तब आसन झूला के नीचे आवत है निकुञ्ज लीला में आसन न आवे बाल लीला में आवत है इन मदनमोहनजी के स्वामिनीजी नहीं है सखी प्रियसखी आलीसखी प्रेष्ठसखी ये चार प्रकार के सेवक तथा चार प्रकार की अपरसवारी सखियां श्रीजी को झुलाय चंवर करें सेवा करें। आठ कीर्तनिया कीर्तन करें सखी शाकघर की अपरस खासाजलघरिया रसोइ पोता फूल

...भाग के परचारग साकघरिया आदि।

आलीसखी—तातोठंडोबारो कोठड़ी वारो रसोइया तथा भितरियादि।

प्रेष्ठसखी दोनों मुखिया तथा आज्ञावारेसेवक वर्ग ये सब मिल के प्रभुनको हिंडोला में झुलावे दर्शन करें चँवर करें गोविन्द स्वामिहूगाये है। ये सेवक ३२ होय हैं, तिनके नाम, सेवा कार्य आगे दिये गये हैं। पद या प्रकार होय—

१—मंगला—आई जू श्याम जलद घटा। २—शृंगार होते में अभ्यंग के पाँच तथा महात्म्य के ६ पदगवें। ३—शृंगार सन्मुख में—"गरज गरज रिमझिम रिमझिम"। ४—राजभोग में—छाक के सरे पै। ५—"देखोमाई ठड़े नन्द किशोर"। ६—राजभोग सन्मुख—"सखीरी सांवन दूल्हे आयो"। ७—उत्थापन—"आज की शोभा कहतन आवें।" हिंडोरा झूले भीतर तथा भोग आवे तब वेणु झूले। येही पद तीन दफे गवें। झांझें बजें कमल चौक में सिंहपोल के सन्मुख—

"हिंडोरारोप्यो नन्द अवास।" सन्मुख झूले तब माई री तेसोई सावन। झूलत रंगहिंडोरे राधा आई ब्रजनार रंग मच्यों सिंहद्वार॥ ऊपर वारे ये चार पद गोविन्द स्वामी के प्रथम हिंडोरा में गवें।

आरती में छेल्ली तुक गवें। मदनमोहन जी के मंदिर में भीतर पधारे बाद झांझ हिंडोराधिवासन सें बजें। शयन में—"सोसावन आयो सैन काम की लायो।"

श्री बालकृष्णजी तीन दिन तक झूले चांदी के ही हिंडोरा में तथा जब-जब नये हिंडोरा होय तब तब आप झूलें आपको सरूप तथा भावना या प्रकार है गुसाई जी विट्ठलनाथ जी ने हिंडोला श्रीजीमें फूलन के किये।

बहुरि आप गोपालपुर श्रीविट्ठल द्विजराय।
सुमन हिंडोला कीन वहु गिरधारी मन पाय॥ (स०क०)

अडेलमें यह स्वरूप श्री यमुनाजी सों आचार्य महाप्रभू को प्राप्त भये और आचार्य ने अडेल में एक ब्राह्मणी रहती ताके माथे पधराये (वार्ता ४६)।

आज वही सरूप श्रीनाथजी के संग यहाँ बिराजें। इन के ही पञ्चामृत होंय, मंडप में बिराजें हिंडोला में झूलें।

श्रीनाथजी में हिंडोला के बतीस दिन झूलवे के तथा व्रजललना चार यूथाधिपान के साथ आठ-आठ रूप को वर्णन कछू पुराणन में या प्रकार है—

पद्म पुराणे—

गोप्यस्तु श्रुतयो ज्ञेया ऋषिजा गोप कन्यका:।
देवकन्याश्च राजेन्द्र न मानुष्या: कथंचन॥१॥

श्रुतिरूपा—एक समय मूर्तिमान वेदनने वैकुण्ठ में प्रभून की बहुत समय स्तुती कीनी तब प्रभु प्रसन्न भये और वर मांगवे की आज्ञा किये। तब श्रुतिन ने कही आप कोटि कन्दर्प लावण्य युक्त हैं अरु हमारो मन काम से क्षुभित होय है। हम कामिनी भाव सों आपकी सेवा करनी चाहे हैं। तब काम पूरक प्रभू ने आज्ञा कीनी तुमारो यह दुर्लभ मनोरथ सारस्वत कल्प में व्रज में पूरो होयगो ये वोई श्रुतिरूपा यूथ बन्यो।

ऋषिरूपा—ये मुनियन तें गोपी भई। भगवान राम दण्डकारण्य में पधारे तब आपकी रूपमाधुरी सो मुग्ध होय काम संतप्त वर रूप सों चाहवे लगीं तब वे योग साधन द्वारा गोकुल में गोपियाँ भई॥

पुरा महर्षय: सर्वे दण्डकारण्य वासिन:।
रामं दृष्ट्वा हरिं तत्र भोक्तुमैच्छन् सविग्रहम्॥
ते सर्वे स्त्रीत्वमापन्ना समुद्भूताश्च गोकुले।
हरिं सम्प्राप्य कामेन ततो मुक्ता भवार्णवात्॥ २॥

सीतारूपा—जनकपुर की कन्याएँ राम के सौन्दर्य कों देखकर मोहित भईं और अपने जन्म में उनकों पति रूपसों चाहती हतीं। अपनो तन मन धन सब मनसा समर्पण कियो और स्वप्न में जयमाला डारी तब प्रभु ने सारस्वत कल्प में कात्यायनी व्रतोपरान्त अंगीकृत करबे की आज्ञा दीनी। वे गोपी गोपकन्या भईं।

श्री रामस्य वराज्जाता नवनन्द गृहेषु या:।
कमनीयं नन्द सूनुं दृष्ट्वा ता मोहमास्थिता
मार्गशीर्ष शुभेमासि चक्रु: कात्यायनी व्रतम्॥ (ग० सं०)

देवकन्या अमनादि—आकाशवाणी सुनकें ब्रह्माजी ने भगवान् की आज्ञा देवतान को सुनाई अपने-अपने अंशसों यदुकुल में जन्म ग्रहण कर लीला स्थल सिद्ध करें।

भवद्भिरंशै यदुषपजन्यताम्।
तत् प्रियार्थं सम्भवंतु सुर स्त्रिय:॥

तासोंही यहाँ सब ब्रजललना यमुना यूथ में प्रकटीं।

तुर्यप्रिया—दिनकर दास ग्वाल के यहाँ सुषमा के गर्भ सों जमनावतामें प्रकटीं श्रीजमना महाराणी एवं अनेक देवकन्यादि सब अंशन सों अवतरित होय ब्रज में पधारीं। ब्रज भाषा के पदन में हू वर्णन मिले है :—

ऋषि—"लाल मुनिन के झुण्डन झूलन आई हो हिंडोरे" (कृष्णदास) 'माई झूलें कुवँरि गोपरायन की।' (गदाधर) "हिंडोरारी ब्रज आँगन माच्यो।" रसिक प्रीतम की बानिक निरखत संकर ताण्डव नाच्यो॥ (हरि)

देव—हिंडोरा री ब्रज आगन मांच्यो।

शुक सनकादिक नारद सारद मुनिजन हिंडोरा देखन आये।
नन्द को लाल झुलावत देखे बहुत कष्ट हम पाये।
परमानन्द दास को ठाकुर चित चोर्यो यह कारे।

प्रश्न—प्रभू कों जेमनी दिसि सोंही झोटा क्यों देत है?

उत्तर—वामभाग वृषभाननन्दनी को होयवे सों जेमनीं चन्द्रावली बग्गीजी झुलावें। स्वामिनीजी तो संग ही झूलें तासों।

श्रावण कृष्णा २

आज से लेकर श्रावण कृष्णा ७ तक प्रातः प्रतिदिन बाललीला नित्य कीर्तन के पद होंय। बाललीला में कभी झाँझ नहीं बजें। अतः छः दिन तक झांझन के साथ ये बाललीला के पद गवें ताको आशय यह कि पूर्व में बाललीला संवर्धित किशोरलीला प्रथम जगद्गुरु श्रीवल्लभ महाप्रभु ने बाल गोविन्दोपासना बताई। तासों ही यहाँ प्रथम हिंडोरा के छः दिन बाललीला में झाँझ बजें। मंगला शृंगार बाललीला राजभोग में मल्हार साँझ को हिंडोरान के पद गवें।

आज को शृंगार पीलो पिछोड़ा ठाड़े वस्त्र लाल शृंगार वनमाला को चार कर्णफूल को माणक मोती उत्सव के आभरण भारी शृंगार पाग पीली सोसनी खिड़की की। प्रतिपदा के समान शृंगार। मोर चन्द्रिका सादा लूम तुर्रा शिर पेच। पिछवाई पीरी डोल तिवारी की चन्दोवा पीरो। बाकी दिबालगिरी बगेरे पूर्ववत्। हिंडोला चाँदी को। यह शृंगार चन्द्रवलीजी की आड़ी कों होय है। आज से झाँझे सब समै बजें।

मंगला में—'आज में देखे कुवर कन्हाई' शृंगार होत में—मोहि दधि मथन दे। तथा मल्हार भी गवे-माखन तनक देरी माय। शृंगार सन्मु० 'ब्रज पर नीकी आज घटा'। राजभोग आये पर मल्हार राग में छाक के पद लक्ष्मी तक

गवें फेर बधाई होय। राजभोग सन्मु—अंग-अंग घनकान्ति। उत्थापन—छबीले लाल संग ललना। हिंडोरा—वेणु झूलें तब—'गोपी गोविन्द के सुरंग।'

सन्मुख हिंडोरा में चार—

'हिंडोरामाई झूलन के दिन आये'
'झूलो तो सुरत हिंडोरा झूलाऊँ'
'जुगल किशोर हिंडोरा झूलत'
'झूलै माई युगल किशोर हिंडोरे'

शयन में पीले वस्त्र की मल्हार मान पोढ़वे की सरदी गरमी बरसात ये तीन लोकिक ऋतुएँ मानी गई। इनमें सरदी में धूप आगि सेवन को विधान है। अरु गरमी में जल क्रीडा करवे को। चातुर्मास्य बरसात में वायु सेवन को। पंचतत्व में पृथ्वी में उत्पन्न होवे सों पृथ्वी तत्व तो है ही। ग्रीष्म में जल तत्व, तेज तत्व शीतकाल में। तथा वायु तत्व वर्षा में। अतः वायु के झकोरा सेवनार्थ हिंडोला है। वर्णन चातुर्मास्य में चालु झूलनो। श्रावण में प्रधान रूप सों।

श्रावण कृष्णा ३ जमनाजी की आड़ी की सेवा—

आज बारह महीना में नीले कुल्हे धरें। आज ही क्यों? ताको आशय श्री जमनाजी के आड़ी सों उत्सव माने है; तासों कुल्हे धरें। वस्त्र नीले पिछोड़ा कुल्हे रूपहरी किनारी के। जोड चमक को। कुल्हे को (घेरा) हरो ठाड़े। वस्त्र आभरण हीरा मोती के। कुण्डल वनमाला को शृंगार। आज के दिन ही वि० सं० १४४६ के दिन ऊर्ध्व भुजा को प्राकट्य भयो तथा आज ते टोला में सों छूट के गाय दूध अरोगावे जाती। पिछवाई खण्ड किनारी दुहेरा की। नीले वस्त्र गिरिराज एवं जमनाजी के भाव सों। आज दक्षिणी साड़ी के भाव से वस्त्र धरे तथा पद के भाव को शृंगार होय के पद गवें। दक्षिणी साड़ी में नीली, हरी, रेसमी पटोर होय है। तासों ही पिछोड़ा नीलो। ठाड़े वस्त्र हरे होय हैं। श्रीमद्भागवत के दशम स्कंध के नवम अध्याय के चार श्लोक के आधार पर पद तथा शृंगार :—

एकदा गृहदासीषु यशोदा नन्द गेहनी।
कर्मान्तर नियुक्तासु निर्ममन्थ स्वयं दधि।
क्षौमं वास प्रथुकटि तटे बिभ्रती सूत्र नद्धम्॥ आदि। (१०-६-१—३)

अहो दधि मथत घोष की रानी।
दिव्य चीर पहरे दच्छिन को कटि किंकिनी रून झुन बानी।
सुत के कर्म गावत आनन्द भर बाल चरित्र जान जानी।
स्रम जल बिन्दु विराजे वदन कमल पर मानो सरद बरसानी।

पुत्र सनेह चुचात पयोधर पुलकित अति हरसानी।
गोविन्द प्रभु घुटुवन चलि आये पकरी रई मथानी।

मंगला में—श्याम सुन निमरेइ आयो मेह। **शृंगार में**—'अहो दधि मथत घोष की रानी' **शृंगार सन्मुख**—रही फवि श्याम छबीली पाग। **सन्मुख राजभोग में**—'भयो नेह नयो नेह नयो' **उत्थापन**—'कारे बादर ओन्हार आये।' **वेणु झूलें तब**—गोपी गोविन्दक झूलन आई दूसरी। **सन्मुख**—झूलत श्यामाश्याम। हिंडोरा झूलत लाल विहारी। **शयन में**—श्याम रंग के भाव की मल्हार।

श्रावण कृष्णा ४:—आज को शृंगार ललिताजी के भाव को तथा श्रीचन्द्रमाजी के आड़ी को होय है। वस्त्र हरे पिछोड़ा पाग सुनहरी खिड़की की। ठाड़े वस्त्र लाल माणक मोती को। शृंगार मध्य को कर्णफूल को नागफणी को कतरा सब आभरण माणक मोती के। **मंगला**—गरज-गरज रिमझिम-रिमझिम। **शृंगार होत में**-माधो जु तन कसो वदन। और बाललीला के। **शृंगार सन्मुख**-देखो भाई सुन्दर ताको बाग। **राजभोग में**—सखीरी हरियारो सावन आयो। श्रावण कृष्ण चौथ को हिंडोरा चाँदी को होतो हतो पर अब दरजीखाना को फूलन को होयवे लग्यो है। **उत्थापन**—'ब्रजघोष नारि आईजु बनठन'। **वेणु झूले तब**—'आलीरी झूलत श्यामा श्याम'। **सन्मुख**—'सोहत वन हरियारी सावन।' सेन काम की लायो। माई री झूलत रंग हिंडोरा। रमक-झमक झूलन में ठमक। **शयन में**—हरियारे वस्त्र के भाव की मल्हार।

श्रावण कृष्णा ५ ब्रजमंगलाजी की सेवा—

आज सेहरा के शृंगार भये तथा होय है आज सेहरा धर्यो जाय। अब आश्विन शुक्ला दूज को धरेंगे; इतने बीच में नहीं धरें बाल लीला के भाव सो आज श्री ब्रज मंगलाजी ने संकेत वन में सेहरा धराय झुलाये तथा प्रीया-प्रीतम को झुलाय यह दर्शन किये। पिछवाई चितराम की संकेतवन में विवाह के भाव की। नीचे खण्ड में ब्रह्मादि विवाह कराय रहे हैं। ऊपर सब सखियन के बीच गठजोड़ा बाँधे श्री स्वामिनी जी खड़ी है। मण्डप में वस्त्र अमरसी (केसरी) पिछौरा दुमाला लूमा तुर्रा सेहरा कुण्डल वनमाला को शृंगार। चोटी पटका ठाड़े वस्त्र मेघ श्याम आभरण हीरा-मोती के जड़ाऊ हाँस कवल तथा जड़ाऊ चर्णन वगेरे में। हिंडोरा तखतसिंह जी वारो केसरी ढाक के सुनहरी रुपहरी काम को। दिवालगिरी चन्दवा पड़दा टेरा वन्दनमाल सब बदली जाय।

पद—मंगला में—देखो भाई सुन्दरता को बाग। **शृंगार होते में**—बल बल चरित्र गोकुलराय और भी बाललीला के पद गवे। **शृंगार सन्मुख**—'नयो नेह

नयो मेह' **राजभोग सन्मुख**—'हमारे भाई श्यामजू को राज।' **उत्थापन में**—झूले माइ युगल किशोर। **वेणु झूले तब**—नवल हिंडोरना हो। **सन्मुख में**—हिंडोरना हो झूलत ललना दुल्हा-दुल्ही झूलत दुल्हा-दुल्हन संग। **शयन में**—"लाल भाई भीजत आये मेह।"

श्रावण कृष्णा छठ को—श्याम पिछोड़ा पगा धरें। सोने के आभरण कर्णफूल मध्य को शृंगार यमनाजी की प्रिय सखी श्यामाजी के आड़ी सेवा होय है। ठाड़े वस्त्र गुलाबी पिछवाई खण्ड, श्याम किनारी के मोर सिखा सलमा सितारा की सुनहरी हिंडोला श्याम धरती पै चमेली वारी कपड़ा की याको **पद-मंगला**—"गावत रसिक राय ब्रजनृपति" **शृंगार में**—नन्दजु के लालन की छवि। **शृंगार सन्मुख**—'श्याम घन कारे-कारे बादर पाव' **राजभोग में**—'ब्रज पर श्याम घटा जुरि आई' **उत्थापन**—ब्रजघोष में नारी आई है झूलन बनिठनि। **वेणु**—'आलीरी झूलत श्यामा-श्याम।' **सन्मुख हिंडोरा में**—झूलत राधा प्यारी श्याम। झूलत नन्द किशोर श्याम संग राधा प्यारी झमक-झमक ठमक मेह। **शयन में श्याम गिरिराज के भाव सों**—जब कभी दिन भर बूंदा-बूंदी होय। वर्षादि होय तो चाँदी के हिंडोला में दुपहर के अनोसर में बिछात होयके मणि कोठा डोल तिवारी की दिवालगिरि चन्दोवा पड़दा (टेरा) सब शयनवत् होयके दुपहर में प्रभु भावात्मक झूलें। ये बिछात कही जाय यामें कुञ्जन में एकान्त में प्रिया-प्रीतम विविध क्रिड़ा करें। तासों ये बिछात होय, शयन की तो नित्य होवे ही।

ऐसे ही जितने श्रावण के सोमवार में मनोरथी होय तो शयन में चूरमा बाटी दार विशेष रूप से अरोगें। ये चूरमा बाटी की सामग्री चार प्रकार की होय। १—बालभोग। २—सखड़ी की। ३—दूधघर की। ४—शाकघर की। एकत्र भी अरोगें, पृथक्-पृथक् भी।

श्रावण कृष्णा ७ शृंगार—सूथन पटका को। आज की चन्द्रावलीजीकी प्रिय सखी चन्द्रिकाजी की तरफ की सेवा है। जब-जब भी सूथन पटका धरें तब-तब छड़ी के (धोराके) वस्त्र आवे तथा फेटा दुमाला ही धरें कभी लोलक भी धरें कभी झूमकी के कर्णफूल। पूर्व में लिख आये यह शृंगार ताज बीबी की तरफ को होय है। यह शृंगार एच्छिक है। नेम तो नहीं पर शृंगार होय जरूर। शृंगार गुलाबी सूथन पटका फेंटा रूपहरी के आभरण पन्ना मोती के। मध्य को शृंगार मस्तक पर मोर शिखा वाम भाग किनारी को। कतरा हिंडोरा गुलाब के फूलाब को कभी क्रीट भी धरें।

मंगला में—'खीजत जात माखन खात।' **श्रृंगार होत में**—'बाललीला के चार पद।' **श्रृंगार सन्मुख में**—'श्यामहि देख नाचत बन मोर।' **राजभोग सन्मुख में**—'माईरी श्याम घन तन दामिनी दमकत।' **उत्थापन**—पहरे सुभग सारी बेठी पिय प्यारी। **वेणु झूले**—नवल हिडोरना हो झूलत मदन गुपाल। **सन्मुख—नव**-रंग संग राधे झूलत गिरधर सुरंग हिडोरना हो झूलत रंग छबीलीं गोपाल फूल छबीलो हिडोरा मुदित झुलावे अपने-अपनी ओसरे। **शयन में**—रितु अनुसार।

श्रावण कृष्णा ८ जन्माष्टमी की बधाई बैठी झाँझन की—

"अवाद्यन्त विचित्राणि वादित्राणि महोत्सवे"

नन्द महोत्सव के उपलक्ष में एक मास पूर्व बधाई झाँझन की, तथा आठ दिन गीतनवारी तथा मादल की द्वादश दिन नौबत की या प्रकार चार बधाई बैठें। पवित्रा धरते ही नौबत की बधाई बैठे राखी। धरते ही गीतनवारी तथा मादल की बधाई बैठे।

प्रश्न—जन्माष्टमी बधाई एक मास की क्यों बैठे?

उत्तर—यह उत्सव महोत्सव के रूप सों यशोदाजी तथा रोहिणीजी के पन्द्रह-पन्द्रह दिन तथा स्वामिनीजी सरूप वल्लभ महाप्रभू तथा चन्द्राबलीजी सरूप श्री विट्ठलनाथजी गुसांईंजी की आड़ी की बधाई बैठे। यह भी चार यूथाधिपान के भाव सों चार बधाई बैठे झाँझन की जमनाजी के भाव सों। नौबत चन्द्रवलीजी के भाव सों। मादल स्वामिनीजी के भाव सों। तथा गीतनवारी नन्द कुमारिकान के भाव सों। यशोदाजी रोहणीजी तथा नित्य सिद्धा एवं तुर्य प्रियाजी की आड़ी सों हू वात्सल्य रस एवं कान्ता भाव उभय भाव सों बधाई बैठे।

१—"अहो ब्रज भयो महर के पूत जब यह बात सुनी। या बधाई में जमनाजी की भाँति प्रवाह सों ब्रजवासी व्रजराज नन्द कुमार के घर सब मिलके पधारे तासों झांझ को जमनाजी को भाव है। शिर दधि माखन माट गावत गीत नये। संग झाँझ मृदंग वजावत सब नन्द भवन में गये।

ब्रज ललना नन्दकुमारिका गीत गाती पधारीं ताको **वर्णन या पद :—**

"वे गावें मंगलगीत मिल दस पाँच अली"

यासों ही गीतनवारी आठ दस तथा पाँच हो गयीं है। (गोरवा २), (सोरया २), (सनाढ्य २), (जाट १), (नायन १) कुल आठ।

नौबत—'तव धर धर भेरि मृदंग पटहे निशान बजे'।

"**भेरी**" 'श्रीगोकुल वाजत आज बधाई।

"नन्दमहर घर नौबत बाजत जसुदा नव निधिपाई।"

"बजत बधाई द्वारे नगारे भेरी ढोला"

मादल—१—सुनो बाजे गोकुल मादलरा। २—आज निशि लागत परम सुहाई सदन सुन बाजे **मादलरा।**

प्रश्न—बधाई पहले क्यों बैठे? पुत्र जन्म के पूर्व अथवा वर्ष गाँठ के पूर्व।

उत्तर—यहाँ पुष्टिमार्ग में हर वस्तु आगमकी मानें। यासों ही बसन्त के पूर्व बसन्त मानें तथा आगम में ही चढाव को उत्साह उमंग होय तासों पूर्व में बधाई बैठे।

यह सुख देखो री तुम माई।
बरस गाँठि गिरधरनलाल की बहुरि कुसल सों आई।
आगम के दिन नीके लागत उर सुख लहर उठाई।
ऐसी बात कह ब्रज सुन्दरि अपु अपने मन भाई।

बधाई गानो तथा वजानो। वाद्य प्रमाण—

उद्धवप्रति—

"मज्जन्म कर्म कथनं मम पर्वानुमोदनम्।
गीत ताण्डव वादित्र गोष्ठीभिः मद् गृहोत्सवे।" (११-११-३६)

देहली वन्दन माल चौखटा हुस्ताजी के यहाँ को सिलमासितारा को काच को वस्त्र केशरी पिछोरा कुल्हे जोड़ मयूर पक्ष पाँच को। चौटी हाँस त्रवल कुण्डल कठला, ठाड़े वस्त्र, मेघ श्याम, पिछवाई खण्ड लाल सुनहरी जन्माष्टमी की वनमाला को भारी शृंगार। आज को सेवा रस उल्लासिका जी को है।

मंगला में पद—आजगृह नन्द महर के वधाई। **शृंगार होत में**—अहो व्रज भयो महर के पूत। याकी छेलीतुक तथा कुछ भाग सन्मुख शृंगार में गवे। राज-भोग आये पर आज सों छाक बन्द। केवल बधाई गवे। हरिजू की जन्म बधाई **भाग सरबेवे**—गावो मंगल चार वधाई। **राजभोग सन्मुख**—धन्य जसोदा भाग तिहारो। **उत्थापन में**—आज अति उमंग रही व्रजनारी। **वेणु झूले तब**—श्रीगोकुल राय की पोरी रच्यो है। **सन्मुख**—गोविन्द स्वामी के चार पद प्रथम दिन वारे गवें। **शयन में**—ऊधाई गवे। आज हिंडोरा लाल धरती सफेद फूल की आवे। पहले तखतसिंह जी वारो आवतो हतो। अब कोई नियम न होवे सों एच्छिक है।

श्रावण कृष्णा ९—द्वितीय गृह के दो आचार्यन के जन्मोत्सव पै वस्त्र वहाँ से आवें पंचरंगी लहरिया पाग पिछोड़ा आदि वस्त्र गोस्वामि द्वितीय गृहाधिप श्रीरघुनाथजी (जन्म संवत् १७६२) को आज जन्म दिन है। तथा आज ही के दिन श्री कृष्णरायजी

(जन्म संवत् १८५७) दोनों उत्सवन के वस्त्र पचरंगी लहरिया धरें पहले सातों घर के गोस्वामि बालक स्वयं श्रीनाथजी कों अपने जन्म दिन पर तथा उत्सवादि में सेवा शृंगार कर विविध सामग्री सों भोग अरोगावते तथा घर के स्वरूपन कों करके बाद में श्रीजी की सेवा मंगला से शयन पर्यन्त करते। तासों ये वस्त्र-शृंगार अद्यावधि प्रचलित हैं। पिछवाई लहरिया की या चितराम की वस्त्र पचरंगी लहरिया के पिछोड़ा पाग पर तीन किलंगी को सिरपेच यह शृंगार बारह महीना में आज ही होंय। तीन किलंगी तथा ऊपर नागफनी को कतरा सलमा सितारे को सिरपेंच। आभरण हीरा मोती के जड़ाऊ वनमाला आदि को। शृंगार ठाड़ो वस्त्र हरो। आज की सेवा श्री चन्द्रावली की आड़ी की होय।

मंगला—मंगल रूप निधान। **शृंगार होत में**—बधाई तथा मल्हार। **शृंगार में**—बधाई आसावरी की। **राजभोग**—आये पै सरेपै बधाई। **सन्मुख में**—गहर-गहर गाजे बदरा समूह साजे। **उत्थापन**—'झूलत श्यामा श्याम।' **वेणु**—आलीरी झूलत नन्द कुमार। **सन्मुख**—१—मचक-मचक झूले लचक-लचक। २—गौर श्याम घोरन को लहरिया। ३—झूलत ललित कदम्ब तरे। ४—सुखद ब्रजवन सुखद यमुना तट। **शयन में**—लहरिया के भाव के।

लहरिया—कई प्रकार के श्रीजी धरें कुछ नाम तथा तरज-डूंगर साईं, राजा साईं, भोपाल साईं पचरंग छिरंग तथा मोदडाभाँत लहर भाँत मान नाईं।

हिंडोरा चार स्थान में—साहित्यकन ने नायक चार माने हैं। चार नायक के रूप में प्रभु श्री गोवर्धनधर चार स्थानन में या प्रकार लीला करें :—

नन्दालय में धीर शान्त—

यह सुख सावन में बनि आवे दुल्हे दुल्हनि संग झुलावे।
नन्द भवन में रोपो हिंडोरो गोप वधू मिल गावे॥
नन्दलाल को राधाजूपे हरिजूपे राधाजी नाम लिवावे।
जसुमति सो परमानन्द तिहि अवसर फेर न्यौछावर पावे॥

धीरोदात्त नायक यमुनाजी के पुलिन में—

झूलत मोहन रंग भरे गोप वधू चहु ओरे।
श्रीयमुना पुलिन सुहावनो वृन्दावन सुभ ठौरे।
राधाजू करे किलकारी ज्यों गरजत घन घोरे।
ता पाछे सब सखीयन मिलजु करत है सोरे।
तेसेइ रटत पपैया बोलत दादुर मोरे।
नन्ददास आनन्द भर निरखत जुगल किशोरे।

धीर ललित गिरिराज पर—

झूलत मदन मोहन राधा संग गिरिवर पर लागत छवि भारी।
पान खात मुसकात परस्पर अरुन अधर कुंतल सटकारी।
मन्द मन्द सुर गावत दोऊ मालव राग मधुर सुर भारी।
रसिकदास प्रभु की या छवि ऊपर कोटि काम कीजै बलिहारी।

धीरोद्धत नायक कुञ्ज -निकुञ्ज में मचकी के हिंडोरा में—

तो झूलों तुम संग जो तुम होरे होरे झुलावो।
तुम तो झोटा देत अटपटे झुलवत बिच-बिच मोहि हरावो।
राग मल्हार भाँति-भाँतिन सों सुर बाँधके गाय सुनावो।
रसिक प्रीतम सो कहत प्यारी तुम तजि चितव न लावो।
झूलत अरुझी वनमाला गरे ग्रीव गाँठ गहि जोरी।
हँसत झुलावत हारी कहो कैसे अब कर छोरी।
जो छोरो तो अधिक सयानो जो न बदो तो झटका गहि तोरी।
कल्याण के प्रभु गिरधरन रसिक तुम काहे को भोंह मरोरी।

हा हा नेक होले होले झूलो बिहारीजू बारी हों सारी समारू।
पटली पग ठहरात पिछुरी पहरात दुकूलो।
टूट्यो हार गजरा गिर गयो छूट गई कबरी, खस्यो शीश फूलो।
गोकुल नाथ प्यारे तिहारी संभार नाहिं न अब लौं॥

श्रावण कृष्णा १० हांडी उत्सव गोस्वामि तिलक श्री गोवर्धनेशजी महाराज कृत—

आज ही आपको प्राकट्योत्सव होय। ये साहित्ययमंज्ञ कलाकार एवं विनोदी तिलकायत हे। आज देहली बन्दनवार। हांडी। वस्त्र लाल रूपहरी किनारी के। प्याला में कमल पाँखड़ी। सूथन, काछनी, पटका गाती को, पाग। मुकुट हीरा मोती को जड़ाऊ तथा आभरण। ये सब उत्सव के। पन्ना मोती माणक हीरादि के वनमाला को शृंगार। ठाड़े वस्त्र स्वेत जामदानी के वेंटा, बदली पिछवाई शृंगार से लेकर उत्थापन भोग तथा चितराम की जामें प्रभु कृष्ण बलदेव गाय चरायवे पधार रहे हैं। ये बड़ी भाव पूर्ण रसमयी पिछवाई है। हिंडोरा काच को पच्चीकारी को पन्ना की तरह हरे, सफेद, लाल किरच को। दिवालगिरि चन्दवा सुनहरी जरी के चारों तरफ हिंडोलाके काच बड़ी आरसी आवे और काच की हांडी झाड़ फानूस। जामें रोसनी होय उत्थापन भोग सरे बाद रोसनी होयके उत्सव भोग पृथक् आवे। जा समें उत्सव भोग सरे ता समय श्रीजी में पिछवाई लाल धरती की

तथा रूपहरी फूल झाड़ फानूस रूपहरी किनारी की कलात्मक आवे। अधिक भोग सरेबाद श्रीजी झूलें प्रिया प्रीतम सहित यह उत्सव नन्दालय के भाव सों गोवर्धनेश जी ने कियो अपने जन्म दिन पर दर्शन खुलेपर हिंडोला के सन्मुख काच की मृदंग तथा फानूस वगैरह ४-४ आवें। आज अन्तरंग भीतर के मुखिया [illegible] चेंवर वगैरह आदि नहीं आवें। रंग बिरंगी रोसनी होय और कांचन की तथा हीरा पन्ना की शोभा बढ़ावें। सेवा नित्य क्रमवत् ही होय। आज झूला में आठ कीर्तन होय तथा भोग आवे। तब गदाधरजी को हिंडोरा गवे और पद भी गवें।

पदन को क्रम—

मंगला—यह सुखदेरी तुममाई। **श्रृंगार होलेमें**—[illegible] देखोमाई सुन्दरता को सार। **श्रृंगार सन्मुख**—नन्दराय के नव निधिआई। **राजभोग** में 'वृन्दावन भुवि वृन्दादिक' **उत्थापन** में—हिंडोरे झूलत गिरधर लाल **वेनुझूलें तब**—ऐसोश्रीपति जुको सुरंग **उत्सव भोग में**—निज सुखपुंज बिलसतसुकुंज सर-सहिडोर नाहो झूलतकुंजतरे। **सन्मुखहिंडोरा में आठ कीर्तन होय**—१. आज लाल झूले तरंग भरे २. ब्रज के आँगन माच्यो ३. राधेजू झूलत रमकझमक ४. मनमोहन रंगवोरे ५. लाल मुनिन के झुनुन ६. नवल लाल के संग झूलत ७. झूले री प्यारो लाल ८. सोतूराखिलेरी झोटातर **शयन में**—झूलो तो सुरतहिंडोरे झुलावो। वधाई हू गवे।

उत्सव नायक श्री गोस्वामि तिलक गोवर्धनेशजी को परिचय—आप गो. ति. विठ्ठलेशरायजी के प्रथम पुत्र वि० १७६३ में नाथद्वारा में प्रकटे। आप सुन्दर सुडौल अच्छे साहित्यिक कलाकार अनेक भाव भावना करिके प्रभु श्री गोवर्धन धरण कों अनेक मनोरथ सों रिझावते। प्रथम हांडीउत्सव रोसनी में नन्दालय में करी। रत्नजटित मणि माणक के हिंडोला में झुलाये। और रोसनी की चमक में प्रियाप्रीतम की रूपमाधुरी निहार अन्तरंग सेवा को प्रारम्भ कियो। अपने ही सर्वप्रथम मेदपाट में सातसरूप पधराये और नाथद्वारा नगर के बिकास में योगदान दियो। अन्नकूट पर समस्त सरूपन कों पधराय के दो महिना तक विविध मनोरथ कियो आपके कोई संतान न भई अतः छोटे भाई पर अधिक स्नेह राखि आपके बाद तिलकायत पदासीन भये। बे गोविन्दजी नाम सूं प्रथम तिलकायत भये। आप तिलकायत पदासीन होयबे पर अनेक मनोरथन की अनेक पद रचना करी तथा श्रीनाथजी के यहां पर पद्धति प्रकार आपने चालू करी। यहां कुछ उनके रचित पद उद्धृत किये जांय। **उष्णकाल को पद (राग सारंग)—**

उसीर महल भवन छायो सुबनि तामें बैठे राधारमन एरी अंस भुजन मेली।
मृगमद घसि अंग लगाय कपूर जल सों चुचाय
अलि बूँदें सीत लगत होऊ करत सुख केली।
गावत सारंगसरस कोकिला सुनत होत विवस
चलत अचल या चल पुलकित द्रुमवेली।
गोवर्धनेश हितविलसत ग्रीपम रितु अति निवास
ललितादिक निरख नैन पावत रस झेली।

वर्षा में झूला वर्णन (मल्हार)

प्यारोप्यारी झूलत सुरंग हिंडोरे।
दुहू ओर सखी झुलावत गावस सुरमण्डल कल घोरे।
देखत बने कहत नहिं आये शोभा सिन्धु हिंडोरे।
जगमगात दामिनी ज्यों भामिनी मृदु मुसकन चितचोरे।
सजलनील घन तन गिरधारी शोभा सिन्धु झकोरे।
युगल किशोर नवल बानक पर **गोवर्धनेश** तन तोरें।

यह पद सर्वत्र छप्पन भोग में आप द्वारा रचित गायो जाय :—

बैठी गोप कुंवर की पांत।
ललित तिपाई पट्टा रतनन के कंचन झारी झलकत कांत।
मानिक थाल विसाल धरे बहु वेला वेली नानाभाँत।
षट्‌रस कन्जन धरे तिनन में देखत जिनके नैन सिरात।
परसत करत रोहनी फिर फिर अति आनन्द मन हियो सिरात।
लपटत झपटत कहत सखन सों देखि यसोमति नन्द मुसकात।
अष्टसिद्ध नव निधि रहत तहाँ उह वन झूठन मन इतरात।
देखत यह सुख सुर पुर वासी भये न व्रजनन नेक सिरात।
जो सुख सम्पति सब ब्रज में छिन छिन पुनि पुनि नेन चुचात।
गोवर्धनेश गिरधर प्रसाद कों ब्रह्मादिक को मन ललचात।

सो या प्रकार आपने अनेक पद रचना करि प्रभु को रिझाये। आपको श्रीनाथजी सानुभाव जतावते।

एक समय आपके छोटे भाई श्री गोविन्दजी जिनकी अवस्था छोटी हती, निपट छोटी अवस्था में पिताश्री लीला प्रवेश कर गये तब सारो भार पालवे को आप पर आयो। उष्णकाल के दिन हते आप श्रीनाथजी के शय्या मन्दिर में ठंडी हवा से नींद आय गयी और श्री गोवर्धननेश तथा श्रीनाथजी के सभी सेवक वर्ग मन्दिर बन्दकर नित्य क्रम सेवोपरान्त ताला मंगल बाद घर चले गये। आचार्य श्री गोवर्धननेशजी हू बैठक में पधारें जब भोजन को समय भयो जब बाबा कूं

अरोगवे बुलाये गये बाबा को कहूँ पता न चलवे पर बहुत चिन्ता भई। सारे नगर में हल्ला भयो या चिन्ता में ही गो० ति० गोवर्धनेशजी को तन्द्रा झपकी आई और झपकी में ऐसो मालूम पड़यो श्री गोवर्धनधर श्रीनाथजी बैठक में पधार रहे हैं। गुलाबी परदनी लटपटी पाग, कर में कमल और आज्ञा कर रहे हैं। बाबा मेरे पास खेल रयो है। चिन्ता न करें। आचार्य श्री कूं प्रसन्नता भई जनाने में तथा परिकर कूं भगवद् आज्ञा कहि सुनाई। यथा समय शंखनाद भये मंदिर खुल्यो बाबा कूं देखें। अहोभाग्यमाने और भाग्य की सराहना करी। यहां कथानक ऐसो भी है कि बाबा सूं लड़े। पर यह प्रमाणिक नहीं। आपके प्राकट्य पौष कृष्ण ११ के पूरे दिन बाललीला के पद गवें। ये तिलकायत बाल भाव भावित माने गये हैं।

गोवर्धनेशजी को झूला को पद—

प्यारे प्यारी झूले सुरंग हिंडोरे।
दुहुँ दिस सखी झुलावत गावत सुर मंडल कल घोरे॥
जुगलकिसोर नवल बानिक पर गोवर्धनेश तृन तोरे॥

आपने तिलकायतपदासीन होयवे पै सप्त स्वरूपोत्सव सर्व प्रथम कियो वि० १७९६ मृगसर सुदी ६ को नाथद्वारा में सातसरूप मथुराधीशजी विट्ठलनाथजी द्वारकानाथजी गोकुलनाथजी गोकुल चन्द्रमाजी मदनमोहनजी बालकृष्ण जी आदि पधारे ताको वर्णन प्रवीण कवि ने कियो है तथा आपने छप्पन भोग धरे। उपरोक्त पद रचना करि समाज कियो तासों आज तक छप्पन भोग में सर्वत्र वह पद गायो जाय है।

मृगसर शुक्ला ८—शृंगार पद तथा भावना—

देहली वन्दन माल पिछवाई। खण्ड कांच के भरत मॉटूकन को गमलान में फूल निकसे लाल धरती के ठाडे वस्त्र। हरे वस्त्र छोटे बूटा के लाल खीनखाप के कुल्हे हीरा की जोड़ चमक को वनमाला को उत्सव को शृंगार कुन्डल शीश फूल जड़ाऊ सूथन मोजा खीन खाप के मंगल में—बहु युग वेदवचन प्रतिपाल्यो शृंगार होते हैं। अन्य बधाई तथा "अब के द्विजवर है" शृंगार सन्मुख —जय जयश्री वल्लभ राजकुमार;

१ छप्पन भोग अरोगत में–२ श्री वृषभान सदन भोजन को ३ बैठी गोप कुँवर की पांत। ४ आजु गुपाल पाहुने आये। और न्योते के पंगत के पद गाये जांय—१ संमुख में–विहरत सातोरूपधरें २ उत्थापम में–नातर लीला होती जूनी। ३ सब मिल गावो मंगल गीत बधाई।

आरती में—हौं चरनातपत्र की छैय्यां। शयन में—आज धन भाग हमारे।

अन्नकूटोत्सव पर सात सरूप पधारे, बिराजे ताकों वर्णन प्रवीण कवि ने सुन्दर ढंग सो कियो तथा सात सरूप पधरायवे कोहु छप्पन भोग को हू निम्न कवित्त संबयान में कीनोहै—

दोहा—श्री वल्लभ की अष्टनिधि-जब मिलि बैठी आनि।
तब की छवि लिखियत अबै—अथ इती लों जानि॥

कवित—आगे नवनीत पिय, बाईं ओर मथुरेश
आगे विट्ठलेश बन्यो ब्यौंत छवि भारी को।
दाहिने धों द्वारकेश गोकुलेश आगेतिहि
दाहिने सरूप मन मोहन विहारी को।
गोकुल के चन्द मथुरेशजू के बाईं ओर
आछो पायो दरस प्रवीन सुखकारी को।
मानोचन्द वृन्दन में चन्द्रमा बिराजे तैसो
राजे सुखकन्द मुखचन्द गिरधारी को॥१॥

शृंगार वर्णन अन्नकूट को—
कुलही जरी की सेत भूषण समेत छवि
देत हरि लेत मनमोहन फुलवारी कों।
तापे लसे तुर्रा गोकर्ण के समान सोहे
सेत जारी बागो अति प्यारो प्रान प्यारी को।
बाम भुजधरें पीत बसन प्रवीन भयो
ज्योंऊ ज्योंऊ होत जोत भूषण उजारी को।
मानो चन्द वृन्दन में चन्द्रमा बिराजे तैसो
राजे सुखचन्द सुखकन्द गिरधारी को॥२॥
रतन खचित चोखटा है चटकीलो जगमगात
उजास त्यों जड़ाऊ पिछवारी को।
सेत जरीबाग सेत कुल्हेही जरी को तुर्रा
गोकर्ण समता में खुलिवो किनारीको।
सूथनहै लाल रंग भूषण अमित अंग
बन्यो दिन दूल्हे पियारो सुकमारी को।
मानो चन्द वृन्दन में चन्द्रमा बिराजे तैसे
राजे सुखकन्द मुखचन्द गिरधारी को॥३॥

आठऊ सरूपन को एक सो शृंगार आठों
करत अहार अन्नकूट भोग भारी को।
रूप को निकेतस चेन नेनन को देत आठों
मन हर लेत वल्लभी सृष्टी सारी को।
ता समे को उच्छाह बखानि को प्रवीन सके
वलि हो कीनी कुवाग देवता विचारी को।
मानो चन्द वृन्दन में चन्द्रमा बिराजे जैसे
राजे सुखकन्द मुखचन्द गिरधारी को ॥४॥

सातऊ घरनि के गुसाई बहूबेटी अवलोकत
सरूप प्यारो रूप मतवारी को।
मंदिर में आनन्द महोदधि उमड़ि रयो
सूर हू सराहे बड भाग नर नारी को।
पुष्टि के प्रवीन जन पावत प्रमोद पूरो
निरख विलास यह विपिन विहारी को।
मानोचन्द वृन्दावन में चन्द्रमा बिराजे तैसे
राजे सुखकन्द मुखचन्द गिरधारी को ॥५॥

मुरज रसाल बाजें ताल तिहू कालगावे
सुजस विलास देव इन्द्र मद हारी को।
जय जय बोले करे भजन कलोले पावे
दर्श अमोले रोले रोल नर नारी को।
गिरवरधरलाल जू उतारे आरती को
देत नोछावर फूल मन कर तारीको।
मानो चन्द्र वृन्दन में चन्द्रमा बिराजे तैसे
राजे सुखकन्द मुखचन्द गिरधारी को ॥ ६ ॥

धन्य यह लीला धन्य गुसाई ए वहू वेटी
करे यह अनुभव व्रज की जिवारी को।
दुर्जन साधु महाराव धन धन खर्च्यो उन
वैभव अपार धन राजधानी सारी की।
धन्य है प्रवीन गऊ ग्वालजू को देखत है
होत है उदोत हरि रूप उजियारी को।
मानो चन्द्र वृन्दन में चन्द्रमा विराजे तैसों
राजे सुखकन्द मुखचन्द गिरधारी को ॥ ७ ॥

आनन्द अखूट लगे लूटन प्रवीन जन
ताते अन्नकूट लुटायो सोज सब भारी को।
बाँटि बाँटि दीनो सब सबन ने लीनो यह
महा प्रसाद दुख मेटत दुखारी को।
सवे हँसे खुलें वेरिऊ प्रवीन मनमोद
लखि लखि लाल की चितोनी छाकवारी को।
मानो चन्द वृन्दन में चन्द्रमा विराजे तैसे
राजे सुखकन्द मुखचन्द गिरधारी को ॥ ८ ॥

वृन्दावन इन्दु को वल्लभ मुखारविन्द
लीनो विप्र वेष भजत न उपकारी को।
तिनके सदन मध राजें विट्ठलेशजू
दोऊ है सरूप मूल रूप अवतारी को।
तिनकी कृपा ते ऐसे अन्नकूट उच्छव में
दरस प्रवीन पायो विपिन विहारी को।
मानो चन्द वृन्दन में चन्द्रमा विराजे तैसो
राजे सुखकन्द मुखचन्द गिरधारी को ॥ ९ ॥

सत्रह सों संवत छियानवे के कातिक में
उच्छव एक ही रूप चौदस दिवारी को।
दूसरे दिन अनुभव रविवार वासर में
भयो अन्नकूट भोग सोज सब न्यारी को।
उमग्यो महोदधि उच्छाह सो प्रवीन मन
हेरतविलास हास पूरन हमारी को ॥
मानो चन्द वृन्दन में चन्द्रमा विराजे तैसे
राजे सुखकन्द मुखचन्द गिरधारी को ॥ १० ॥

उत्सव छप्पन भोग में सप्तस्वरूपन को वर्णन—

सवैया—

केसरिया कुलही निरखे दुलहीन के भाव नये-नये न्यारे।
वागो विराजत लाल जरी को फब्यो पटुका मद मेन को टारे।
भाव सो जो नित सोहत तैसे विराजत हे जु प्रवीन के प्यारे।
लाल गोवर्धनजू बड़ भाग के लाल गोवर्धन धारि पधारें ॥ १ ॥

मंदिर ते इहि मंदिर लों छिरकाव किये है गुनीन सँवारे।
मंगल गीत सुहागिनि गावत विप्रन बेद के मंत्र उचारे।
चहु मोलक अम्बर सों जु बनी वर पालकि बैठे प्रवीन के प्यारे।
लाल गोवर्धनजू बड़ भाग के मंदिर श्री मथुरेश पधारे।। २ ।।

नीको बन्यौ चकडोल अमोलिक भूषण तामें लगे बहु बारे।
उच्छव के पद गावत आवत गायक वृन्द महावन बारे।
वीरी अरोगत आनन्द सों सब भक्तन देवे प्रवीन के प्यारे।
लाल गोवर्धनजू बड़ भाग के मंदिर श्री विट्ठलेस पधारे।। ३ ।।

भूषण अम्बर आछे अनूपम प्रीत के रीत रंगनि सवारे।
भोग अनेक अरोग अरोगी प्रफुल्लित कीने हैं चाहन हारे।
मनोरथ के रथ उपर बैंठ के बड़ी छवि देत प्रवीन के प्यारे।
लाल गोवर्धनजू बड़ भाग के मानि श्री द्वारकानाथ पधारे।। ४ ।।

बालक वृन्द किसोरन भौन को काम करोर बिसारे।
आरति वारि विलोकन की तब कीनी कृपा जु बियोग विडारे।
अम्बर लाल की रतन पालकि माँहि बिराजे प्रवीन के प्यारे।
लाल गोवर्धनजू बड़ भाग के मंदिर गोकुल नाथ पधारे।। ५ ।।

जैसे करे सब लोग लुगाइन बाजे बिचित्र नवीन नगारे।
घोर बिराजत मदला अरु पावड़े मारग झांझ सितारे।
मंगल गीतन गावत आवत पालकि बैठे प्रवीन पियारे।
लाल गोवर्धनजू बड़ भाग के भौन श्री गोकुल चन्द पधारे।। ६ ।।

गावत घोल वधू गुजरातिन की कलकण्ठ के गर्व सुधारे।
बाँधि चहू दिस बन्दन माल औ चित्रित कीने है चारु दुवारे।
पालकि जोति सुजगमग होति तामें विराजे प्रवीन के प्यारे।
लाल गोवर्धनजू बड़ भाग के मन्मथ मोहन भौन पधारे।। ७ ।।

श्री मथुरेश श्री गोकुल चन्द्रमा बैठे बराबरि रूप उजारे।
श्री बिट्ठल मन्मथ मोहन वाम दिसा में विराजत है छवि धारे।
दाहिने गोकुल नाथ विराजन बीच में श्री नवनीत पियारे।
लाल गोवर्धनजू बड़ भाग के मंदिर सात सरूप पधारे।। ८ ।।

बहु भांतन के पकवान करे अरु व्यंजन कीने सबै विधि सारे।
भात दे आदि सवारे हैं भोजन भोग धरे सब भाँति के न्यारे।
द्वार तिवार नोछावर दे गुन गायकजू थकिये है सुखारे।
लाल गोवर्धनजू बड़ भाग के मंदिर सात सरूप पग धारे।। ९ ।।

जीवन के मन पुष्टि के मोद कों बाढ्यो पयोनिधि ताप विवारे।
ताछिन की छवि को छिति में कहि कौन सके कवि लोग बिचारे।
लाल गोवर्धनजी बड़भाग के आनन्द अनुराग उचारे।
लीला अनूप करी ब्रज भूप सु भौन में सात सरूप पधारे।। १० ।।
अम्बर भूषन सोभा सुगन्ध भले विधि प्रान प्रसून सवारे।
मारगसीर सुमास सुखाकर उजरी आठम मंगल वारे।
सतरह सौ अरु छानवे संमत ता समै आनन्द उच्छव भारे।
लाल गोवर्धनजू बड़ भागके मंदिर सात सरूप पधारे।। ११।।

आज के दिन राजभोग में बधाई न गायकें ये मल्हार गायी जाँय। (पदन में गोवर्धनेशजी के स्वरूप स्वभाव कौऊ संकेत है।)

श्री वृन्दावन भुवि कुन्दादिकयुत मन्दानिल रुचिरे।
पुलिनोदित नव नलिनोदर मिलदलिनोदित रस गाने।
कर्णाधिक पुट चरणाम्बुज ध्वनि चारु हरिणाक्षी ललिते।
निज रसमयता प्रकटन प्रसरित प्रकटित रास बिहारें।
गिरधारण रतिहारण कारण मम रतिरस्तु सदारे।

बधाई न होयके ये पद राजभोग सन्मुख गवे ताको आशय है—आचार्य गोवर्धनेशजी साहित्यिक एवं भाव भावित आचार्य हैं अतः वृन्दावन रस रास रसिक शिरोमणि की रसलीला जो होडी उत्सव है वाको प्रभु सेवा में रस कलात्मकता सूं निहित कियो ताको यह वर्णन या प्रकार है—

वृन्दावन की पावन पुनीत कुन्द आदि पुष्पन ते संवेष्टित तथा उनके स्पर्श सों सीतल मंद सुगंधित वायु चल रही है। ता वृन्दावन के समीप ही यमुना तट में विविध प्रकार के कमल विकसित है रहे हैं। उनमें भ्रमर गुञ्जार कर रहे हैं। जो श्रवनन कूं आनन्द देनवारे हैं। तहाँ चरणन की नूपुर धुनि मानो व्रज ललना हरिणाक्षी उनकी गति ते रस प्रकट करि रास विहार में पधार रही हैं। और गोर्वधनधर श्रीनाथजी में उनकी प्रीति सदा बनी रहे।

यहाँ मेदपाट ही वृन्दावन तथा यमुना सरूपा बनास अरु उनके तट पै कमल उनमें भ्रमर गुञ्जार कर रहे हैं। या भावना सों आचार्य रसमय होय सखी भाव सो रास में सम्मिलित होय बिहार करें।

शयन में को भाव—शयन में भी रस भर्यो पद होय है जो कान्ता भाव

भावित सरस रतिप्रीता नायिका स्वरूपश्री गो. ति. गोवर्धनेशजी महाराज अपनी प्रार्थना के साथ श्री विट्ठलजी की वाणी में अपनो सर्वस्व अर्पण कर रहे हैं।

झूलो तो सुरत हिंडोर झुलाऊँ।
मरुवे मयार करौं हित चित के तन मन खम्भ बनाऊँ ।
सुध पटुली बुद्धि हाँडी बेलन नेह बिछौना बिछाऊँ।
अति ओसेर धरो रुचि कलसा प्रीत धुजा फहराऊँ ।
गरजन हीक हिलग मिलबे की प्रेम नीर बरखाऊँ।
श्री विट्ठल गिरधरन झुलाऊँ जो इकले करि पाऊँ ॥

तामें मरुवा खम्भ डांडी पटुली वेलन कलश धुजा आदि होने चाहिये। तो ताको वर्णन या प्रकार है। हित और चित के दो मयार, उपर को और खम्भा तन मन के। बार बार सुधि करनी पटुली। बुद्धि चतुराई वेही चार डांडी। वामें नेह रूपी वस्त्र बिछाय पुनः पुनः सुधि के कलस चढ़ाऊ। प्रेमरूपी धुजा फहराऊ। वे झूला जब सावन को होयतो मेघमण्डल आने ही चाहिए। कहे है, 'तरजन तो हिलग प्रीति की।' एकान्त में बैठिके कोऊ न जाने। केवल वेही जानें या भाव सों आचार्य जी को यह पद होय है—

पूरित हो मन काम सबै यह कीरति वेद पुराननि जारी।
हौं सरनागत के प्रतिपाल दयाल कृपाल हौं आनन्दकारी।
मंगल रूप प्रवीन महा अब कीजिये मंगल कुञ्ज बिहारी।
लाल गुवर्धन लाल गुविन्द के दीजिये लाल गुवर्धनधारी ॥१॥

श्रावण कृष्णा ११—आजको सेवाक्रम श्री चंद्रसखीजी की आडी को है। शृङ्गार दुहेरो मल्ल काछ को। आज गुलाबी एवं पीरे दुहेरा मल्ल काछ धरें। तथा दुहेरा पटुका टिपारा गुलाबी जोड़ चमक को आभरण। गुलाबी मीना की पिछवाई खण्ड चितराम की मोर कुटी की झूलले प्रिया प्रीतम की। हिंडोरा सुनहरी जरी को ठाडे वस्त्र श्याम। मध्य को शृंगार।

मंगला में—आज वन कोउ जिनजाय। **शृंगार होते में**—महा महोच्छव गोकुल आज। **शृंगार सन्मुख**—धननोकुल जहँ गोविन्द आये। **राजभोग**—वृन्दावन कनक भूमी नृत्यत बर। **उत्थापन**—हिंडोराभाई झूलो है ब्रजनाथ। **वेणुझूले**—तब नवल हिंडोर नाही। **सन्मुख**—१. बटवर सुरंग हिंडोरो २. झूलत गिरवरधारी ३. वेह वेह नृत्यतबर ४. राधेके रंगभवन गये हो ब्रजराज।

इन गो० गोवर्धनेशजी महाराज के पुत्र नहीं हुतो ताकी आशिष में प्रदीप कवि ने श्रीनाथजी सों इन दोनों भाईन के पुत्र की कामना करी सो सर्वथा है।

शयन में—जब वर्षा होती होय तब ये पद प्रायः गवें—"राधा के रंगभवन गये री ब्रजराज।"

श्रावण कृष्णा १२—आज की सेवा चतुरंगाजी की। पूर्व में ऐच्छिक शृंगार तथा हिंडोला होते हते गो० ति० गोविन्दलालजी महाराज ने आज सोने को हिंडोला चालू कियो। वि० २०१४ से—कारण वैष्णवजन एक मात्र भाद्र पद कृष्णा १ को ही ति० श्री गोवर्धनलाल के उत्सव को दर्शन कर सकते अतः यह मनोरथ रूप में सदा स्थाई चालू कियो।

वस्त्र भोपालसाई लहरिया के लतावारी पिछवाई। खण्ड तथा भोपालसाई लहरिया की काछनी। पटका। काछनी गोलधरी मुकुट सिलमासितारे को। आभरण नवरत्न के। ठाडे वस्त्र स्वेत। शृंगार वनमाला को। पहले फूल को हिंडोरा भयो होय तो अब सोना को। एक मात्र दिवालगिरी बदली जाय टेरा। वन्दन माल आदि। विशेषभोग आवे। दर्शन के समै पद :

मंगला—आज अति बाढयो है अनुराग। **शृंगार होते** में बधाई तथा मल्हार लहरिया के भाव के। **राजभोग सन्मुख में**—लहरिया के पद होंय। **उत्थान**—झुकि झुकि झूलत लाल बिहारी। **वेणु झूले तब**—हिंडोरा गोपी झुलावत। **भोग आवे तब**—रागमाला गवे। **सन्मुख हिंडोरा में**—गोविन्द स्वामी के पद गवें—

१—मचक-मचक झूलें लचक २—गौरश्याम धोरन को लहरिया ३—झूलत ललित कदम्ब तरे ४—सुखद वृन्दावन सुखद यमुना।

श्रावण कृष्णा १३—(कांकरोली वारे बाल कृष्णलालजी को उत्सव) वस्त्र सामग्री काँकरोली सों आवे। वस्त्रलाल धोती उपरना पाग। पन्ना मोती के आभरण मध्य को शृंगार कर्णफूल को। श्री मस्तक पर मोर चन्द्रिका। सादा पिछवाई। चितराम की हिंडोरा झूलते बीच में श्रीनाथजी झूले अगल वगल स्वामिनीजी श्रीकृष्ण वृक्षन में डोरीन पे श्रीजी हिंडोला फूलपत्ती को चितराम को।[1] ठाडे वस्त्र श्याम। हिंडोरा फूलकर्तवी कली के।

पद—मंगला—"गौरस की माची कीच।"[2] **शृङ्गार होते**—आँगन नन्द के दधिकांदो। **सन्मुख शृङ्गार**—बर सिरे सुहाये मेहा। **राजभोग सन्मुख**—धन्य जसोदा भाग तिहारो। तथा ब्रज को बसबो नीको। **उत्थापन**—जमुना पुलिन हिंडोरो

१—श्री काँकरोली वारे बाल कृष्णलालजी महाराज ने बनवाई।

२—यह पद मंगला में पालीपै होयं। काँकरोली में नन्द महोत्सव के दिन दूध दही चोक में भरके दधिकांदो होय है।

रोप्यो वेणु-झूले नवल हिंडोरना हो माई कब झले । **सम्मुख पूर्वी के चार—** कमलनेन प्यारी आई सकल ब्रजनार झूलत है । भामिनी हिंडोरा झूलत गिरधारी **शयन** में बधाई, मान तथा पौढ़वे के ।

श्रावण कृष्णा १४—शृंगार एच्छिक वस्त्र इकदाली पीली धरती । लाल चूंदडी ।[१] बागा पिछोडा । ठाड़े वस्त्र हरे । आभरण पिरोजा के । कर्णफूल को शृंगार । श्री मस्तक पर जमाव की मोर शिखा । मध्यको शृंगार मालतीजी की ओर सों । पद ऐच्छिक । बधाई, मल्हार, हिंडोरा के । हिंडोरा सादा चांदी को ।

हरियाली मावस—

श्रावण कृष्णा ३०—मेनाजी की सेवा है । खण्ड पाट गादी तकिया ठाड़े वस्त्र पिछोड़ा पाग । ये सब हरे । दिवालगिरी चन्दन । वन्दन माल हरे । साटन के वस्त्र पाग पिछोडा पिछवाई खंड सुनहरी किनारी के मलमल के । आभरण पन्ना मोती के । कर्णफूल को शृंगार जमाव की । पन्ना की चन्द्रिका । हिंडोला हरो । सिल्लू को, चन्दन को, ठाडी जुही की हरी चन्दन जैसी को, आज सामग्री पिस्ता की ।

मंगला में—गरज गरज रिमझिम-रिमझिम । शृंगार होते में—"नैन भर देखो नन्दकुमार ।" "आज बन कौ जिन जाऊ ॥"

शृंगार सन्मुख—हरियारो सावन आयो । **राजभोग में**—धनाश्री की चार बधाई गवें । **राजभोग**—'देखो भाई सुन्दरता को बाग ।' **उत्थापन**—'झूलत फूल भई अतिभारी' । **वेणु झूलवे में**—नवला हिंडोंर नाहो । **सन्मुख**—झूलत श्याम पियारी संग । और भी हरियाली के चार पद गवें ।

विशेषता—

आज दुपहरी में भीतर मणिकोठा में बिछायत प्रथम भई । शयन में तो नित्य ही होय है । पांच बिछायत दुपहर में बैठे । ठकुरानी तीज गोवर्धनलाल को उत्सव राखी पवित्रा । ये पांच बिछायत होंय । कभी दुपहर में वर्षा की झड़ी लगे तभी ऐच्छिक रूप में बिछायत होय । बिछायत हिंडोला में विशेष होय । सर्वप्रथम आज बिछायत । ताको आशय घटान में हूं प्रथम हरी घटा से प्रारम्भ होय । राधारानी राज राजेश्वरी है और राजकीय सामग्री सों जहां लक्ष्मी चर्णन पर लोटे तथा घर-घर वन्दनमाल बांधे तहां राजसलीला में अतरदान गुलाबदान आदि सुगन्ध सौष्ठव एवं समरूप सामग्री समीप में राखि के सेवा सुख करनीही बिछायत है । नीचे उपर सब तरफ एक रंग तथा दर्पण एवं गादी तकिया शय्या की पूरी सेवा जाको दर्शन करके भगवदीय हू गाये है ।

---

[१] [ठकुरानी तीज बिना चूंदड़ी नही धरें]

सखीरी हरियारो सावन आयो ।
हरे-हरे मोर फिरत मोहन संग हरे बसन मन भायो ।
हरि-हरि मुरली हरि संग राधे हरी भूमि सुखदाई ।
हरे-हरे बसन हरित द्रुमबेलि हरि-हरि घास सुहाई ।
हरी-हरी सारी सखी सब [illegible] कीनी हरी रंग भीनी ।
रसिक प्रीतम मन हरि [illegible] है तन मन धन सब दीनी ।

अत: गोस्वामि तिलक श्रीगोवर्धनलालजी महाराज ने चि० बाबा साहेब रसिक शिरोमणी रसराज की रस भरी लीला प्रभु विनियोगार्थ उनके आग्रह सों ये सजावट बिछायत छोटी एवं बड़ी निर्धारित कीनी ।

हरिराय महाप्रभू के पद के भाव सों यह बिछायत तथा गोविन्द स्वामी एवं कृष्णदास सहचरी भाव सों या रस द्रष्टा के वर्णन को भाव लेकर यह बिछायत भई ।

कृष्णदास—

दोऊ जन क्रीडत है बनमांही ।
उमडी घटा घुमडी चहुं दिस ते देखत उर न समाई ।
देखियत घटा धावत कुञ्जन में बीचहि बूंदन आई ।
कृष्णदास नहि और कदम्ब की भीजत कुञ्जन माई ।

गोविन्द स्वामि—

कोन करे घटतर तेरी गुन रूप रस राधा प्यारी ।
त्रिया प्रकृति जेती जग युवती वार फेर डारों तेरे रूप पर ।
-राग मल्हार अलाप [illegible] गुन प्रवीण हे री तूं सुघर ।
गोविन्द प्रभू को तू भावत बलकार कहत भलेंजु भले ब्रजराज कुंवर ।

श्रावण शुक्ला १—वस्त्र हरे सफेद लहरिया के पिछवाई खण्ड पाग पिछोडा ठाड़े वस्त्र लाल आभरण माणक मोती के कर्णफूल नागफणी को कतरा मध्य को शृंगार श्रीरंगाजी की आडी की सेवा । हिंडोला हरी मखमल को पद एच्छिक हरे के कुञ्ज के भाव के ।

श्रावण शुक्ला २—वस्त्र पीरो पिछोडा ठाड़े वस्त्र मेघश्याम श्रीमस्तक पर क्रीट शृंगार बनमाला को कुण्डल हास त्रिवल पिछवाई चितराम की कुञ्जन में झूलतेन की । आभरण हीरा मोती के सब दिवालगिरी चन्दवा वन्दनमाल तथा डेरा बगेरे साकभरियाजी द्वारा श्री गोस्वामि तिलक गोवर्धनलालजी महाराज की सूझ को केवल कपडा पे नन्दगांव बरसाना ब्रजलता, गो. दामोदरलाल गोवर्धन लाल पंखा करते तथा झूल-झूलते । प्रियाप्रीतम सेहरा धरे झल रहे हैं द्वादश कुञ्ज

की आज पत्र फूल को हिंडोरा भयो अधिक भोग आयो वेणुजी झूले बाद भोग आये धूप दीपभये ।

पद—मंगला में—कायकूं गहरु लगावत । श्रृंगार होते में बधाई लथा मल्हार के । **श्रृंगार सन्मुख**—गावो मंगल चार बधाई । **राजभोग में**—माई श्याम धन तन दामिनी । **उत्थापन**—फूले-फूले झूले भाई फूलन हिंडोरे । **वेणु झूले तब**—सुरंग हिंडोरना हो । **भोग आये तब**—निज सुख पुञ्ज वितानसु । **सन्मुख दर्शन में**—हिंडोरे झूलत गिरधर झूलत सांवरी संग गिरधारी झूलो । मेरी प्यारी सुरंग हिंडोर मोरमुकुट की लटकन पर ।

श्रावण शुक्ला—३ (ठकुरानी तीज)—पुष्टि मार्ग में ठकुरानी तीज मानवे की आवश्यकता एवं परम्परा:—

श्री आचार्य हरिराय के उत्सव पद में ठकुरानी तीज बर्नन या प्रकार है—"श्री ठकुरानी तीज हिंडोरा बरसानो मन भावै ।" कुञ्जन कुञ्जन झूला झुलावत सरस मधुर सुरगावे ।" "रहवो मोहि वल्लभ गृह में भावे ।"

कृष्णदास—'सांवन सुद तृतिया उजियारी बैठे हिंडोरे रसिक पिय प्यारी ।'

सूरदास—'सावन तीज हिंडोरे झूले ।' **हरिदास के**—'हिंडोरे व झूलना ऋतु सावन तीज सुहाई ।' **हरिराय महाप्रभु**—'आज सुद सावन तीज सुहाई ।' **गोस्वामी तिलक श्री लाल गिरधारी जी**—'आलीरी सावन तीज सुहाग ।'

अतः यह उत्सव वल्लभाचार्यकालीन भक्तों द्वारा भी वर्णित है ।

अब ठकुरानी कहवे में श्री स्वामिनी जी एवं श्यान सुन्दर आवें या नहीं ? ठक्कर ठाकुर ठकुर इन तीन सब्दन में ऐक्य मानें तो अनुचित नहीं । ठक्कर ठाकुर को अपभ्रंश यथा ठाकुर ठकुर दोनों एक ही है । प्रभुपरक ठाकुरजी प्रभुजी कों तथा 'ठाकुर' गाँव के बड़ेन कों जैसे वृषभान जी नन्द गोप आदि । पदन में ठाकुर के । या प्रकार उदाहरण मिले हैं । नन्ददासजी कहे हैं ।

"वन ठन कहाँ को चले ऐसी को मन भाई ।
नन्ददास प्रभु अब न बनेगी निकस जाय **ठकुराई** ।"

गंगादास हू कहें—
हेरी हेरी मैया हेरी है ।
ठकुराई तिहु लोक की दुरी अहीरन ओट ।

नन्ददास जी रासपञ्चाध्यायी में कहे हैं—
कोटि कोटि ब्रह्माण्ड यद्यपि इकली **ठकुराई** ।
ब्रज देविन की सभा सांवरे अति छवि पाई ।।

परमानन्ददास जी तो कई स्थान में कहे है—
"परमानन्द दास को **ठाकुर** लायो पिल्ला घेर ।"

वन में—
'सुनो ब्रज नाथ राई छांडो लरिकाई ।
'बिन रस प्रीति कहाँ ते उपजे तुम '**ठाकुर**' कित करत वरियाई ।'

ठाकुर की पत्नी **ठकुरायन ठकुरानी** कही जाय । ये राजघरानन में आज भी **ठकुरानी** कही जांय है । अतः या तीज को **ठकुरानी** तीज कहें हैं ।

श्रीगो० द्वारकेशजी के मूल पुरुष के आधार पर कछु भगवदीयनकी ठकुरानी तीज पर विचार—वि० १५४६ फागुण शुक्ला ११ को झार खण्ड में आज्ञा भई और आप सावन शुक्ला तीज कों गोविन्द घाट पधारे । तब जमनाजी ने प्रकट होय दर्सन दिये और वे जहाँ विराजे हुते श्री व्रज की रसलीला दात्री श्री जमना महारानी ठकुरानी है । तासों ही वा घाट को नाम हूँ ठकुरानी घाट कियो और वा दिन सों ही ठकुरानी तीज प्रसिद्ध भई ।

"फेर श्री गोकुल पधारे निरख जमुना हरख ही ।
संग दमलादि कहते तिन पे कृपा रस बरख ही ।।"

और कलिमल तारिणी भवभय हारिणी जमना †महारानी के दर्शन करत ही श्रावण शुक्ला चौथ सों आपने वहां ठकुरानी घाट पै विराज के श्रीमद्भागवत सप्ताह करी । और पूर्ण पुरुषोत्तम सान्निध्य में प्रकट ह्वै दर्शन दिये । तथा ब्रह्मसंबंध की आज्ञा दीनी । अतः वही लीला श्रावण शुक्ला एकादशी कूं वल्लभ महाप्रभु ने सिद्धान्त रहस्य ग्रन्थ में प्रकट करी ।

आगे मूल पुरुष में श्री द्वारकेश जी महाराज आज्ञा करे हैं—

"एक समें चिन्ता चित्त आई । दैवी (जीव) केहि विधि जानी जाई ।।"

अतः ठकुरानी तीज इन कारणन सों प्रसिद्ध है ।

औरहू ब्रज साहित्य में प्रसिद्ध है कि आज के दिन बरसाने की स्वामिनी राधारानी को पाटोत्सव मानें हैं । "**ठकुरायन** श्री राधारानी **ठाकुर** नन्द कुमार" यासों हूँ ठकुरानी तीज प्रसिद्ध भई । राजस्थान में राजघरानेन में याही तीज को विशेष मानें । राजघरानेन की तीज की अनेक कथाएँ हैं । अतः या दिन प्रभु नन्द राजकुमार पुष्टि पुरुषोत्तम हू ठाकुर होई के ठकुरानी तीज मानें । यह वल्लभ वंश में विशेषता है कि लौकिक त्यौहार पर्वन कों प्रभु विनियोग करके अलौकिकता

† श्री द्वारकानाथ जी की प्राकट्य वार्ता अमरेली वारेन की (पृ० ५२)

प्रकट करे हैं। यह त्यौहार सर्वत्र पुष्टि मार्ग में विशद रूप सों भावात्मक रसात्मक मानें हैं।

वार्ता वन यात्रा गोकुल नाथ जी की पृष्ठ २६–सुन्दर शिला है तापे गोवर्धन नाथ जी को मन्दिर ठाकुरजी को चोतरा है तहाँ श्रावण शुक्ला ३ को स्वामिनीजी मानी है सम्पूर्ण व्रज भक्तन कू शृंगार करिवे बुलाये हैं। श्री ठाकुरजी ने ये उत्सव मान्यौ है।

आज देहली वन्दन माल हांडी अभ्यंग, बारा चिरोंजी की लडी वारो वस्त्र चूंदड़ी के चौफनी पाग, पिछोड़ा चन्द्रिका, सादा पिछवाई चितराम की। चारों ओर घटा बरसती भई बिजली चमक रही है। बिजली की चमक सों श्री स्वामिनीजी डरपिके श्री गोवर्धनधर श्रीनाथ जी की ओट में पधारे हैं। पद के भाव सों दामोदरलालजी महाराज द्वारा निर्मित पिछवाई में घुग्गी ओढ़ ओढ़ के ग्वाल बाल बैठे हैं। स्वामिनी जी डरी भई हैं।

पद चत्रभुज दासजी की वाणी में—(मल्हार राग)

श्याम सुन नियरे आयौ मेह।
भीजेगी मेरी सुरंग चूनरी ओट पिताम्बर देय।
दामिनी देख डरपति हों मोहन निकट आपने लेय।
चत्रभुज दास लाल गिरधर सों बाढ़्यौ अधिक सनेह॥

ठाड़े वस्त्र पीरे कर्ण फूल हीरामोती के। आभरण वनमाला को। शृंगार मोर पक्ष की चन्द्रिका शीश फूल शिर पेंच तकिया लाल लूम तुर्रा जड़ाऊ आभरण जड़ाऊ गादी शाज सब जड़ाऊ। वंटा, त्रिष्टी झारी वगैरे जड़ाऊ। सोना को पीरो साज तथा जड़ाऊ शैया मन्दिर में तथा सर्वत्र जड़ाऊ हिंडोला काच की पच्चीकारी को। कमल बेल भाँत को। दिवालगिरि चन्दोवा टेरादि पूर्व दिनवत्।

मंगला—भीजत कब देखो इन नैना। **अभ्यंग में**—पूर्ववत् छः पद होंय। **शृङ्गार में**—यमुना तट श्याम घटन की पांत। सुरंग चूनरी प्यारी पचरंग पहिरे। नवरंग कचुकी तन बाढ़ी। आदि पद चूनरी के भाव सों होय। **शृङ्गार में**—लाल मेरी सुरंग चूनरी देहु। **राजभोग में**—बधाई के। **राज-सन्मुख**—सारी मेरी भीजत है जु नई। श्याम सुन नियरे आयो मेह। **उत्थापन**—एरी हिंडोरना झूलन आई। बोलि है श्याम सुहाई। **वेणु**—राधे देखिये वन शोभा। माई री झूलें कुँवरि गोपरायन की। **दर्शन में**—आलीरी सांवन तीज सुहाई। आज सुद सावन तीज सुहाई। सावन तीज हिंडोरा झूलें। हिंडोरा अब झूलन नई रितु आई। **शयन में**—सुरंग हिंडोरना झूलत राधा संग सहचरी। **पौढ़वे में**—रंगमहल पोढे गोविन्द।

विशेषता श्रीजी में—

श्रीनाथ जी में दो प्रकार की विछात होय है। एक विछात दुपहर में, जो उपर कहि आये। दूसरी बड़ी विछात चार होय हैं तथा अन्य विछात हू रात्री की विशेषता लिये होंय। येऊ चार हैं।

बड़ी विछात—ठकुरानी तीज, राधाष्टमी, शरद, दिवाली।

ठकुरानी ताज, हरियाली, पवित्रा, राखी, गोवर्धनलालजी के उत्सव की दुपहर एवं सायं की ये चार हैं। बड़ी विछात में आज गोल देहली के पास बारहदरी, दिवालगिरि, चन्दोवा परदा जैसी कपड़ा की आवै। गद्दा नीचे की विछात में बारहदरी में शयन में प्रभुपौढ़ें अगल बगल विविध सजावट होय भोग आदि आवे। चन्दन की बरनी अतरदान गुलाबदानी शृंगार साज आरसी आदि। ये सेवा चार वर्ष में जब दिवालगिरि सिद्ध भई तब विशद साज सज्जा सिद्ध वि० सं० १६८६ से वि० १६८८ तक सिद्ध कराय आज के दिन अंगीकार भई। यह सभी प्रति वर्ष सिद्ध होय है। यह सेवा प्रकार तथा दिवालगिरि दर्शनीय है। कला की चातुरी यथा अनेक भावपूर्ण लीलानं को दर्शन होय है। मणीकोठा डोल तिवारी आदि में बारह महीना में ये अनूठी सेवा चिरस्मरणीय लीला दर्शन होय है। आज की सेवा शोभाजी एवं चन्द्रावली जी की आडी की है। **श्रावण शुक्ला ४**—मन्मथमोदाजी की आडी की—वस्त्र डूंगर साईं। लहरिया लाल सफेद मोरसिखा वाम भाग को कतरा बीच कों बीच की दुमाला पिछोड़ा ठाड़े वस्त्र श्याम सोना के कर्ण फूल, मध्य का शृंगार। पिछवाई चितराम की। बरसात रात्रि झूला वारी। हिंडोला कपडा से लहर भाँत चीढन कों सुन्दर कलात्मक पद। नित्य के बधाई मल्हार तथा झूला के लहरिया के भाव वारे।

श्रावण शुक्ला ५ (नागपंचमी)—

पिछवाई चितराम की एक तरफ आन्यौर एक तरफ जतीपुरा। दोनों ओर व्रजवासीन कों ऊर्ध्व भुजा के दर्शन को जाते भये* ठाड़े वस्त्र लाल पाग, पिछोड़ा बेंजनी, मेघ श्याम नागफणी को कतरा। आभरण मोती के मध्य को शृंगार सब साज सादा नित्य को हिंडोरा मोतीन को आज की सेवा हंसाजी की।

मंगला में—बोले माई गोवर्धन पर मुरवा। **शृंगार में**—गिरिराज एवं मोरन के भाव के। **शृंगार सन्मुख में**—गोवर्धन परवत के उपर नाचत मोर। महा-महोच्छव श्री गोकुल गाँव। **राजभोग सन्मुख**—देखो अद्भुत अवगत की। **उत्थापन में**—श्याम संग झूलत राधा गोरी। वेणु झूलें तव—'गोपी गोविन्द

* बालभोगिया वल्लभ दासजी वारी।

के सुरंग हिडोरा । दर्शन में—(मालब राग के) गिरिराज पर झूलत सुरंग हिडोरना । गिरधर झूलत है राधा सुन्दर पर । गृह गृह ते आई । झूलत लाल गोवर्धन धारी । शयन में—ऋतु अनुसार—

वि० १५४४ श्रावण कृष्णा तीज से आज पंचमी तक प्रतिदिन गिरिराज पै दूध अरोगायवे जाते ब्रजवासी ने दर्शन उर्ध्वभुजा के किये । और सर्वत्र ब्रजवासीन ने दर्शन पाय मानता करन लगे । सं० १५३५ में सम्पूर्ण अंग को प्राकट्य भयो।

श्रावण शुक्ला ६—श्रृंगार सूथन पटका को घोराधारो । चूंदड़ी स्वांग । ठाड़े वस्त्र पीरे । दुमाला पै भीमसाई तुर्रा आभरण गुलाबी मीना के । पिछवाई धोरा की । खंड धोरा को । सूथन पटका जैसो श्रृंगार । चित्रलेखा जाकी आप की सेवा । पद—मंगला में—बधाई गवे । श्रृंगार में—बधाई तथा मल्हार । वेणु में, उत्थापन में, झूलवे में, रितु अनुसार मनोरथ होय

श्रावण शुक्ला ७ बगीचा का उत्सव—

देहुली वन्दन माल । हाँडी । पिछवाई चितराम की । कुञ्जद्वार पे मोर नाचते उपर बादल रंग-बिरंगे मुकुट जड़ाऊ नाचते मोर को । मोर आगे निकसतो नीलम को कुण्डल आभरण सब जड़ाऊ वनमाला को शृंगार मयूराकृत कुण्डल ठाडे वस्त्र सफेद वस्त्र लाल मोढडाभात लहरिया के सूथन काछनी पटका गाती को हाल धवल मुकुट पे सिर पेच जड़ाऊ हिंडोला केला के खम्भन में फूलन की झांकी तथा चोबीस केला के खम्भ को बगीचा चारों तरफ डोलतिबारी में उत्सव चोक हिंडोरा में अधिक आयो झूल के फल वारे केलान सो । हिडोरा के खम्भ आड़े आज भीतर के सेवकन के अलावा कोई भी चंवर में पंखामें नहीं आयो । दिवालगिरी चन्दवा ये सब बगीचा के फुहारा चलते कपड़ा के काम के ।

पद मंगला में—राधेरूप की घटा । श्रृंगार में—देखो भाई सुन्दरता कोसार । देखो भाई सुन्दरता को देश । और भी मुकुट के भाव के पद होंय । श्रृंगार सन्मुख—अरी इन मोरन की पाँत देख । राजभोग सन्मुख–वृन्दावन भुवि कुन्दादिक । उत्थापन—आयो आयोरी सावन अब मन भावन । वेणु में—ऐसो श्रीपति जू को चित्त विचित्र । भोग उत्सव को आवे तब—निज सुख पुंज वितान । भीतर झूलें तब—सरसे हिंडोरना हो । सन्मुख आठ पद होंय :—(१) फूल हिंडोरना झूले वृषमान कुमार । (२) फूल हिडोरना बन्यो । (३) आजतो हिडोरा झूले छैया कदम्ब । (४) झूलत नवल वाल । (५) आज लाल फूल रंग हिडोरना । (६) हिडोरा ब्रजआगन माँच्यो । (७) झूलत दोऊ कुंज हिंडोरना । (८) सो तूं राखि ले री झोटा सरल ।

(प्राकट्य वार्ता से)

शयन में—ब्रज के आँगन माच्यो । मानमें राधेरूप की घटा । पोढवे में—रंग महल पोढे गोविन्द ।

श्रीजी के बगीचा की विशेषता एवं भाव ।

प्रश्न—कुञ्ज कह्यो है फेर याको बगीचा क्यों कह्यो है ।

उत्तर—कुञ्ज निकुञ्ज निविऽनिकुञ्ज निभृत निकुञ्ज में हिंडोरा लीला न होयकर केवल कुञ्ज में ही होय है । श्रीजी में तो फागुन शुक्ला ११ को ही कुञ्ज होय है । हिंडोरा जब कुंजन के भाव सों होय तब बगीचाहू में हिंडोरा होनो प्रभु सुखार्थ जरूरी है । कुंज को वर्णन तो चैत्र लीला में हू कियो गयो है ।

बगीचा कहा ? एवं ताको स्वरूप कहा ?

यह बगीचा को उत्सव पुष्टि मार्ग में दो भाव सों मान्यो जाय एक बाल भाव सों दूसरो कान्ता भावसों । एक बगीचा फागुन में तथा एक बगीचा सावन में सब ठिकाने होय है । घूमवे फिरवे पधारें तो वाल भाव सों रसलीलार्थ, कान्ता भाव सों । विशेष में कान्ताभाव ही प्रधान है परन्तु वन यात्रा गोकुलनाथ जी कृत में पृ० ८७ में नन्दघाट के आगे नन्दराय जी को बगीचा है तहाँ श्री नन्दराज कुमार कन्हैया ने शालग्रामजी मुख में पधराये वाबा नन्द के पूजा के । पद में आयो है—"हँसत गुपाल नन्दजु के आगे" ताभाव करि के या मनोरथ को नाम बगीचा रह्यो । दूसरो कान्ताभाव वारो बगीचा गोकुल नाथजी की वन यात्रा पृ० ८० । ताके आगें भूषण वन है जहाँ आभूषण पहरे । ताके आगे गुंजाबन है तहाँ गुँजान की माला धराई । ताके आगे यमुना पुलिन में नाना प्रकार के बगीचा है । तहां मध्याह्न में ब्रज भक्तन सों बिहार करें हैं । कुञ्ज जहाँ सूर्य के दर्शन न होंय तथा सघन वृक्षावलीन सों युक्त । श्रीमद् भागवत में हू कुंज एवं बन, बगीचा पृथक् वर्णित किये है :—
नद्यद्रि द्रोण कुञ्जेषु काननेषु सरस्सुच १०-१८-१६ ।

अतः कुञ्जन सों पृथक ही कानन, बन, उपवन, बगीचादि होय हैं । इन बगीचान में विविध प्रकार के पुष्पलता वृक्ष सों शोभायमान बीच को प्रांगण खाली होय है । जहाँ अंगल-बगल द्वादश चतुर्दश विविध प्रकार की कुञ्जन को वर्णन मिले है :—

कमल कुञ्ज, बासन्ती कुञ्ज, माधवी कुञ्ज, सिताम्वुज कुञ्ज, अरुणाम्वुज कुंज, चम्पक कुंज, विचित्र कुंज, पूर्णेन्दु कुंज, हेम कुंज, श्याम कुञ्ज, हरित कुञ्ज, तुलसी कुञ्ज । जिनके आगे छोटे-छोटे सर तथा चम्पा कदंब आम्र वेतस मोर सरी; गुलाव, केवड़ा, मोतिया, मोगरा, मालती आदिन की लता तुलसी, माधवी, गुंजादि पनस विविध प्रकार के पुष्प होय हैं । ऐसे बगीचान ने प्रभु हिंडोला झूलें हैं । वृक्षावली युत होय है । श्रीमद् भागवत में वैकुण्ठ वर्णन में हू या प्रकार के वर्णन हैं ।

तथा द्वारका वर्णन में बगीचान को वर्णन मिले हैं वो या प्रकार है—

"पुष्पितो पवनाराम द्विजालिकुल नादितम् ।" (१०-६९-३-४)

वैकुण्ठ वर्णन में या प्रकार—मन्दार कुन्द कुरवोत्पल चम्पकार्ण

पुन्नाग नाग बकुलाम्बुज पारिजाताः । (३-१५-१९)

या भाव सों बगीचा होय है। बगीचा में झूलवे बाद रात्रि की बिछात में रतन चौक में चारों तरफ कदली खंभ होय हैं। तब ऐसो मालूम परे जैसो उपरोक्त वर्णन प्रत्यक्ष है गयो होय। पद

देखो भाई सुन्दरता कौ बाग।
हरी ब्रजभूमि हरित द्रुम बेली हरी गिरधर सिर पाग।
हरे हरे मोर हरी शुक सेना भीजि रहे अनुराग।
राजत हरि मन हरन राधिका दास निरखि बड़ भाग।।

यासों श्रावण शुक्ला ७ को ही श्रीजी में बगीचा होय है और वह बगीचा बगीचा कह्यो गयो है। सूरदास जी ने हू कई स्थानों में वर्णन कियो है।

राधेजू देखिये वन सोभा। आदि। वन शोभा के तथा परिभ्रमण के बहुत से पद हैं।

श्रावण शुक्ला ८—श्री नवनीतप्रिय जी बैठक वारे बगीचा में झूलवे पधारे। ऐसे ही फागुन में भी बैठक के बगीचा में खेलवे पधारें। अतः श्रीजी में मुकुट के शृंगार निश्चित होंय। आज पीरे वस्त्र काछनी सूथन पीताम्बर ठाड़े वस्त्र सफेद आभरण पिरोजा के वनमाला आदि को शृंगार होय है। सलमा सितारा की पिछवाई। खण्ड कुंज की तथा मोर कुटी के नृत्य की। ऐच्छिक परन्तु कुंज के भाव की ही आवे। पद या प्रकार—

मंगला—अहो ब्रज भयो महर के पूत। **शृंगार सन्मुख**—रानी सुख पायो सुत जाय। नन्दराम के नवनिधि आई। **राजभोग सन्मुख**—माई री श्यामघन तन दामिनी। **उत्थापन**—झूलन लगे पिय पान खात मुस्कात। **वेणु**—एसो श्री पति जू को विचित्र हिंडोरना। **सन्मुख**—हिंडोरे माई झूलत गिरधर। आज लाल झूलत रंग भरे। मोर मुकुट की लटकन पटकन ओल्हर आई हो घन धटा। **राजभोग में**—"जन्म सुत को होत ही आनन्द भयो ब्रजराज।"

गोकुलनाथ जी की ब्रजयात्रा में पृ० ८७ में नन्दगाँव के आगे नन्दराय जी को बगीचा है। जहाँ नन्द कुमार खेलते। तासों ही बैठक को नन्द को बगीचा मान नवनीत पधारें।

श्रावण शुक्ला ९—वर्तमान गोस्वामि तिलक श्री गोविन्दलाल जी महाराज कृत सप्त स्वरूपोत्सव—

देहलीवन्दन माल। हाँडी। मूंग की दाल को मोहनथाल गोपी वल्लभ। वस्त्र **केशरी गोल काछनी** श्री मस्तक पर टिपारा सूथन केशरी कुल्हे का घेरा चमक को टिपारा ये **गोकर्ण गुलाबी** दुहेरा किनारी। को आभरण जड़ाऊ ठाड़े। वस्त्र मेघश्याम **वनमाला को शृंगार कुण्डल** हास **नबल**। गोस्वामि गोविन्दलाल जी सों विजय **लक्ष्मी बहूजी चि०** दाऊजी चि० इन्द्रदमन जी द्वारा समर्पित आभरण पायल **दो** लडा एवं हीरामोती की माला। पिछवाई गौअन की। श्यामपट पै चितराम **की सब स्वरूप सहित**। जामें श्री बिट्ठलवर द्वारकानाथ जी चन्द्रमाजी मदन **मोहन जी मुकुन्दराम जी** नटवरजी आदि सरूप तथा सब सरूप पंखा मोरछल **करते भये**। झारी **बीड़ा** लिये और गोस्वामि बालक बहू बेढियाँ तिनके सरूप नाम या प्रकार—गो० ति० गोविन्दलाल जी चि० दाऊजी नाथ चि० इन्द्रदमन **बाबा गोस्वामी** रणछोड़लाल जी महाराज मथुरेशजी वारे। गोस्वामि कल्याणराय जी **महाराज बिट्ठलनाथ** जी वारे। गोस्वामी व्रजभूषण जी काँकरोली वारे। सुरेश **बाबा गोकुलनाथ जी** वारे। गोविन्दलाल जी चन्द्रमाजी वारे। मुरलीधर जी मुकुन्द राय **जी** वारे। **घनश्यामलाल** जी मदनमोहन जी वारे। नटवरलाल वारे व्रजराय जी **महाराज** आदि बालक बहू बेटियाँ।

पद मंगला में—सोगोविन्द तिहारो बालक। **शृंगार होते में**—बधाई मल्हार। **शृंगार सन्मुख**—धन्य यशोदा भाग तिहारो। **राजभोग आये पर**—बधाई। **राजभोग सन्मुख में**—ग्वाल देत हैं हेरी घर घर। **दूसरो येभी करे हैं**—विहरन सातो रूप धरे है। **उत्थापन में**—आज वन उमग रही ब्रजनारी। **वेणु में**—गोपी गोविन्द के सुरंग दूसरो। **सन्मुख में**—गोविन्द स्वामी के चार पद। **शयन में**—यह धन धर्म ही सो पायो। **पोढवे में**—नित्य के मान के पद।

विशेषता:—वि० २०२३ श्रावण अधिक में अनुपम भाव एवं रसपूर्ण। **मनोरथ करिके** आज छप्पन भोग अरोगायो तथा बड़ो समाज कियो।

(१) **सावन प्रथम शुक्ला** (८)—को नाथूवास गौशाला में श्री नवनीतप्रिय को पधराय छाक को मनोरथ कियो।

(२) **द्वितीय श्रावण कृष्णा** ९—(अभूतपूर्व नन्द महोत्सव) जामें द्वारकानाथ जी **बिट्ठलनाथ** जी, नटवरजी, श्री नवनीतप्रिय जी, डोलतिवारी में पलना सब साथ झूलें।

(३) **बड़ो मनोरथ—लाल बाग में**—अधिक श्रावणकृष्ण ११ कों। या मनोरथ में लाल **बाग** सब सरूप पधारे। वहाँ झूला झूलें। विविध सामग्री अरोगे। झूला-

झूलते दर्शन भये। जब सें श्री दाऊ जी महाराज ने लाल बाग बनवायो। अद्यावधि समस्त तिलकायत वहाँ भगवान पधराय मनोरथ किये। याकूं लालबाग क्यों कहें ? याकों सरूप कहा है ? लाल बाग नाम कैसें पड़यो ? वाको समाधान यों है—यह लाल बाग ब्रज के स्थल के भाव सों है। ब्रज के बागसों याको नाम लाल बाग धर्यो गयो। (श्री गोकुलनाथ जी की ब्रजयात्रा पृ० ७७) यह लालबाग शेषशायी से आगे तथा सेरगढ के पहले है।

ब्रजभक्तन को शेष शय्या पै पोढे। लक्ष्मी चरण दाबती शेषरूप बलदेव जी चतुर्भुज सरूप शंख चन्द्र गदा पद्म धारे नाभिकमल सो ब्रह्मा दीखते सब देव वन्दन करते उपर पुष्प वृष्टी होत दर्शन कराये ब्रजभक्त कहन लगे हमें तो ब्रज की लीला दिखावो यह लीला मती दिखावो तब ब्रज संबंधी लीला करी।

सो बलदेव जी तो चौगान कों दूर जाते तहाँ अनेक द्रुमवेली छाय रही है तहाँ यमुना जी की पुलिन है। तहाँ श्री ठाकुर जी पधारे। तहाँ श्री ठाकुर जी बलदेवजी सहित बतीस बेर यमुना जी में तैरके पधारे। उनको दोष दूर कियो। तहाँ ते लाल बाग पधारे तहाँ कदम्ब के नीचे बिराजे ब्रज भक्तन ने लाल बाग के शृंगार किये। आभूषण धराये। फेर यमुना जी के टीले पर चढ़िके वेणु नाद कियो तासों ही लाल बाग नाम पड़यो याको सरूप ब्रज की भावना पै है।

प्रथम द्वार पै प्रवेस है। दाख की बेल कुंज के भाव सू है। 'चलो किन देखन कुञ्ज कुटी।' आगे बारह दरी कामवन के भावसों। चौरासी खम्भन की भावनासो। बाईं ओर विमल कुण्ड आगे कमल तलाई तथा मंदिर। ताके पीछे भूल भुलैया ताके पास सावन भादों। ताके पीछे नन्द भवन आदि।

संक्षेप में पाँच हिंडोलान में सरूप विराज के झूलें। वर्तमान गोस्वामि तिलक श्री गोविन्दलाल जी महाराज ने छप्पन भोग के उपलक्ष में अनेक मनोरथन में सात सरूपन के भाव सों बड़े सात मनोरथ किये सो या प्रकार हैं—

१—नाथूवास गौशाला में छाक को मनोरथ नवनीतप्रिय को पधराय के कियो। सो मथुरानाथ जी के भाव सों ये वनलीला प्रिय है। कुमार सरूप "मधु सूदन रूपत्वं गजराज विहारिणे" के भाव सों।

२—नन्द महोत्सव पलना को—यह छठे घर मुकुन्दरायजी निपट बालक तथा नवनीतप्रिय निपट बालक तासों ये मनोरथ श्रीजी के सान्निध्य में भयो।

३—यह बड़ो मनोरथ लाल बाग झूला को। सो यह मदनसोहन जी के भाव सों युगल छबि झूलवे के भाव सों।

४—नवनीतप्रिय के चबूतरा पर हटडी द्वारकानाथ जी के घर की आड़ी सों आवे।

५—छप्पन भोग को मनोरथ श्री गोकुलनाथ जी के भाव सों गोवर्धनधर श्रीजी अन्नकूट अरोगें ता भाव सों।

६—पवित्रा सब सरूपन को संग धराये यह यशस् सरूप चन्द्रमाजी के भाव सों।

७—विट्ठलेशरायजी के यहाँ सब सरूप पधार छप्पन भोग अरोगे यह विट्ठल बर के भाव सों।

आपने अनेक अभूतपूर्व मनोरथ किये। दर्शन हूँ ४८ घण्टा बरावर होते रहे। सामग्री भी अत्यधिक अरोगी। या छप्पन भोग के वर्णन अनेक विद्वानन ने कवीन ने किये यहां लेखक द्वारा रचित कछु छन्द या प्रकार हैं—

कवित्त—

आज को शृंगार नीको सबही सरूपन को
एक सो भयो है सत्य आनन्द बढ़ावनो।
सीस पे धरे है सुभ टिपारा गुलाबी वर
चमक को जु जोड़ घेरा गोकर्ण सुहावनो।
हीरन के भूषण वनमाला शृंगार भारी
मेघ श्याम ठाड़े पट सुन्दर सजावनो।
केशरी धरे हैं गोल काछनी किनारवारी
पायल ओ नूपुर को शब्द मनभावनो ॥ १ ॥

गोवर्धननाथ श्रीजी सन्मुख वहीं दरस देत
गोद में हसत बोले प्रियनवनीत है।
वाम भाग विट्ठलेश स्वामिनी सों बात करें
गोकुल के चन्द पास वेणुरस नीत है।
तिनके ही आगे नटवर वय नृत्य रूप
जेमने सुभाग राजे द्वारकेश मीत हैं।
मदनमोहन पास स्वामिनी विराजें द्वय
बालक मुकुन्द पास सत्य नवनीत हैं ॥ २ ॥

विट्ठलनाथ राजत कटितर हाथ दिये,
स्वामिनी संगनृत्यत रास रस धावे है।
उभय शृंगार भाव रास में दिखाय पुनि,
यामिनी सरदमाँझ आनन्द बढावे है।
कुञ्ज ओ निकुञ्जन में भक्त हेत क्रीडा करें,
पुष्टि सृष्टि जीवन की लीला दरसावे है।
श्रावण सुद नोमी को सातही सरूपसंग,
तिलक गुविन्द जू के आँगन में आवे है ॥ ३ ॥

गोपिन के मंड़ल में विराज रहे राधाजू,
दर्पन ले ठाडी सखी शृंगार यो करावे है।
साहि छिन पहुचे हैं द्वारका के नाथ सत्य,
वरजत सखी तऊ पाछे करि जावे है।
दोनों कर भीच रहे नेन प्राण प्यारी जू के,
दोनों श्री हस्तन संग वेणु को वजावे है।
वोही वर द्वारकेश श्रावण सुद नोमी को,
तिलक गुविन्द जू के आँगन में आवे है ॥ ४ ॥

राजत है द्वारकेश चोरस सुपीठिका सो,
आस-पास ग्वालवाल ध्यान मग्न भावे है।
चार हाथ आयुधजो शंख चक्र गदा पद्म,
निकुञ्जद्वार ठाड़े सत्य बालकृष्ण धावे हैं।
अम्बरीष ठाकुर की बल्लभने सेवा करि,
पद्मनाभ भक्तकाज आनन्द बढावे है।
वोही वर द्वारकेश सातही सरूप संग,
तिलक गुविन्द जू के आंगन में आवे हैं ॥ ५ ॥

ललित त्रिभंगी प्रभु वेणु रस मत्त रहे,
गोपिन के मण्डल में प्रभु दरसावे है।
प्रश्न के उत्तर दे अंगुली दिखाये तीन,
भक्तन बुलाय 'सत्य' मोद को बढावे है।
गोकुल के चन्द्र प्रभु रघु हिय हार सोई,
पुष्टि रसदाता यह नेह वरसावे है।
श्रावण सुद नौमी कों सात ही सरूप संग,
तिलक गुविन्द जूके आँगन में आवै है ॥ ६ ॥

सोम सत्यव्रत फल आपको सरूप सत्य,
मदनमोहन नाम आनन्द बढ़ावे है।
स्वामिनी विराजे द्वय पंजकेस सीस सोहै,
ब्रह्मचारी ये विरुद्धधर्माश्रय भावे है।
वल्लभ के पूर्वजन माला प्रसाद वीड़ा दे,
यज्ञन के फल रूप आप प्रकटावे है।
वोही मदनमोहन श्रावण सुद नोमी कों,
तिलक गुविन्दजूके आँगन में आवे है ॥ ७ ॥

मातु अंक लेले सदा प्यारे श्री मुकुन्दराय,
सुन्दर श्रीहस्त धर्न नीके ही हिलावे है।
कबहूँ मातु मंगल उठाय के निहारे है,
कबहू अलक लोंन मातु हि खिजावे है।
इहिविधि लीला रस देत निज भक्तन कों,
वल्लभ की कृपावल सत्य दर्स पावे है।
श्रावण सुद नोमी को सात ही सरूप संग,
तिलक गुविन्द जू के आंगन में आवे है ॥ ८ ॥

प्रिय नवनीत लाल विट्ठल के लाडले ये,
श्रीजी की सुगोद मांझ कई बार आवे है।
हाथी करें मज्जन कों कबहू सवार होत,
ग्वाल बाल संग लेय ऊधम मचावे है।
एक हस्त मूमि दावि एक कर माखन ले,
घुटुवन चलत जबै सत्य दर्श पावे है।
वो ही नवनीत प्रिय श्रावण सुद नोमी को,
तिलक गोविन्दजू के आँगन में आवे हैं ॥ ९ ॥

श्री मथुरेशजी के ही गोद के सरूप प्रिय,
बालक लिपट लेले नटवर सुहावे है।
एक हाथ माखन है एक हाथ माट लियो,
मातु ढिग आय धाम मोद हि बढ़ावे है।
भीजे रस मन आप गावत सु तान लेय,
छोटे से कन्हैंया सत्य निर्तत रिझावे है।
श्रावण सुद नोमी को सात ही सरूप संग,
तिलक गोविन्दजू के आँगन में आवे है ॥ १० ॥

दोहा—विक्रमाब्द दो सहस के तेइस वर्ष महान ।
अधिक जु श्रावण मास महँ भये मनोरथ जान ।।
छप्पन भोग रचना जु सत कीनी करि आनन्द ।
पढ़े श्रवण करि ध्यान दै होवे परमानन्द ।।

बड़े-बड़े विद्वानन ने यह सप्तसरूपोत्सव वर्णन कियो तथा पद रचे । अतः यहाँ संक्षेप में लिख्यो गयो है ।

श्रावण शुक्ला १०—वस्त्र लाल पिछवाई । लाल खण्ड लाल रुपहरी किनारी के । पाग पिछोरा । ठाड़े वस्त्र पीरे । चन्द्रिका सादा । आभरण पन्ना मोती के । शृंगार मध्य को । कर्णफूल । हिंडोरा चांदी को । दिवालगिरी चन्दोवा तथा टेरा वन्दन माला सब बदले भये पवित्रा की सफेद छाप की पिछवाई आवे । मंगला शृंगार राजभोग में बधाई मल्हार में । तथा झूला में । सुरंग हिंडोरना के पद । श्रा० कृष्णा १३ वारे होंय ।

श्रावण शुक्ला ११ (पवित्रा)

देहली वन्दन माल । अभ्यंग । पिछवाई सफेद धरती में सुनहरी धोरा की । खण्ड भये सो वस्त्र । सफेद केशर की कोर के सादा । कुल्हे रुपहरी किनारी की । सफेद ठाडे वस्त्र लाल जोड मयूरपक्ष को पांच को । पान मध्य को । शृंगार कुण्डल आभरण सब उत्सव के । जडाऊ हीरा पन्ना मोती के । चोटी नहीं । पवित्रा को मुहुर्त सवेरे होंय तो शृंगार में धरे । साँझ को होय तो उत्थापन में धरें ।

पवित्रा गहनाघर, कृष्णभण्डार, खासाभण्डार, समाधान—चार स्थान सों आवें । गहनाघर के तीन सों साठ तार को कलाबतून के रेसमी फुंदना वारे रुपहरी सुनहरी कृष्ण भण्डार के सादा रेसमी । खासा भण्डार के हू रेसमी वैष्णव के आवें । तथा समाधान के परदेस के तथा अन्य वैष्णवन के आवें । इनको राखीन के संग सबन को अधिवासन होय । फेर पंखा की आड़ सों धरें । शृंगार में आरसी दिखाय वेणु धराय; बड़ी कर पवित्रा धरें । अलापचारी होंय । सबन के सन्मुख पवित्रा धरें पवित्रा धरत ही नौवत की वधाई बैठे । सम्पूर्ण पवित्रा भेट धरें । फेर प्रभून कों भेंट । समस्त बालक बहू बेटी पवित्रा धराय के धरें । फिर गोपी वल्लभ उत्सव भोग संग आवे । सांझ होय तो उत्थापन भोग उत्सव भोग भेलो आवे । पिछवाई में पवित्रा टंके भये । रक्षा बंधन तक पवित्रा शृंगार होते ही धरें । नित्य पाँच दिन तक पवित्रा आवें तथा मिश्री भोग नित्य आवे । हिंडोला चांदी को सेवा नित्य क्रम की । आज राजभोग के बाद मणिकोठा में बिछात होय ।

मंगला में—आज बड़ो दरबार देख्यो नन्द तेरो । **अभ्यंग में**—रानीजु आपुन मंगल गावे । मिल मंगल गावो माई । जायो है सुत नीको जसोदा । सोहन फूलन झूली । नन्द महोत्सव बड़ कीजे । चिरजीवोरी लाल । अहो ब्रज भयो है महर के पूत । **शृंगार सन्मुख में**—आनन्द आज नन्द जू द्वार । यदि पवित्रा सवेरे होय तो अलापचारी होयके केवल एक पद होय । उत्थापन हू में यही पद-पवित्रा पहरत राजकुमार । **राजभोग आये पे**—धनाश्री की चार ढाढी गवें । **राजभोग**—सरवे पे नन्दजू मेरे मन आनन्द । नन्दजु तुमारे सुख दुख गये सब । **राजभोग सन्मुख में**—आज सों लेकर जन्माष्टमी ताई ये चार पद होंय—

(१) हेरी हे नन्दरायके आनन्द भयो (२) हां हां सब ग्वाल नाचे गोपी गावे (३) महा मंगल महराने आज (४) नन्द के दधिकांदों आज ।

टेरा आये पीछे आज सो लेके जन्माष्टमी ताईं समाज हथिया पोल तक । कीर्तन राजभोग में होय । फेर सम्पूर्ण होय पीछे दंडवत करें । पवित्रा उत्थापन में धरें तो अलापचारी सारंग में होयके 'पवित्रापहरत राजकुमार' होय । अन्यथा उत्थापन में—'झूलत राधिका लाल हिंडोरे ।' वेणु झूलें तब—ऐसो श्रीपति जूको मनमोहन रंग हिंडोरना ।। ये पद खमाच में होय । सन्मुख में—चार पद गोविन्द स्वामी के जो पहले दिन भये वे ।

आज सों लेकर जन्माष्टमी के दिन तक उपरोक्त चार ही पद फिरते क्यों गवें ? ताको आशय श्रीमद्भागवत के पञ्चमाध्याय में नन्दालय के आनन्द में अठारह श्लोक हैं और अठारह दिन तक नन्द के आनन्द भयो । तासों ही यहाँहू अठारह दिन तक भाद्रपद शुक्ला १० तक बाल क्रीडा—आनन्द, राधाजी की बधाई, आदि में नित्य आनन्द रस वृष्टी होवे । सो चार श्लोकन के ही चार पद यहाँ गाये जांय हैं । वे चार श्लोक एवं उनके भाव के चार पद या प्रकार हैं ।

१—गोप्यो सुमृष्ट मणि कुण्डल निष्ककंठ्यः—[१०-५-११]

सारंग—

हेरी हे आज ब्रजराज के आनन्द भयो । नन्दराय के आनन्द भयो ।
नाचत गोपी करत कुलाहल मंगल चार ठयो ।
राती पियरी चोली पहरे नौतन झूमक सारी ।
चोवाचन्दन अंग लगाये सेन्दुर माँग संवारी ।

---

१ यह परमानन्ददास जी के आनन्द धिमोर होयवे को पद है । याही में परमानन्ददास आनन्दमग्न ह्वै कै लीलामग्न भये । तासों ये प्रथम पदारम्भ में गवें ।

माखन दूध दह्यो भर माजन सफल ग्वाल ले आये ।
बाजंत बेन पखावज महुवर गावत गीत सुहाये ।
हरत दूब दधि अच्छत कुंकुम आंगन बाढ़ी कीच ।
हसत परस्पर प्रेम मुदित मन लागि लागि भुज बीच ।
चहू वेद धुनि करत महामुनि पञ्च शब्द ढमढोल ।
परमानन्द बढ़्यो गोकुल में आनन्द हृदय कलोल ।

२—गोपा परस्परं हृष्ट्वा दधि क्षीर घृताम्बुभिः—[१०-५-१४]

सारंग—

हो हो सब ग्वाल नाचे गोपी गावे—प्रेम मगन कछु कहत न आवे
हमारे राम घर ढोटा जायो—सुनि सब लोग बधाये आयो
दूध दही घृत कांवर ढोरी—तन्दुल दूब अलंकृत रोरी
हरद दूब दधि छिरकत अंगा—लसत पीत पट बसन सुरंगा
लाल पखावज दुंदुभि ढोला—हसत परस्पर करत कलोला
अजिर पंक गुल्फन चढ़ि आये—रपटत फिरत पगन ठहराये
वारि वारि पट भूषण दीने—लटकत फिरत महा रस भीने
सुधि न परे को काकी नारी—हंसि हंसि देत परस्पर तारी
सुर विमान नभ कौतुक भूले—मुदित त्रिलोक बिमोहित फूले

३—गायकाश्च जगु र्नेदुर्भेयो दुंदुभयो मुहु०—[१०-५-५]

सारंग—

आज महा मंगल महराने ।
पंच शब्द धुनि भीर बधाई घर घर वेर खवाने ।
ग्वाल भरे कावर गोरस की वधू सिंगारत वाने ।
गोपी गोप परस्पर छिरकत दधि के माट ढुराने ।
नामकर्ण जब कियो गर्गमुनि नन्द देत वहु दाने ।
पावन जस गावतजु कटहरिया वाही परमेसुर माने ॥

४—विचित्र धातु बर्ह स्रक् चैल पल्लव तोरणैः—[१०-५-६]

सारंग—

आंगन नन्द के दधि कादों ।
छिरकत गोपी ग्वाल परस्पर प्रकटे जग में जादो ।
दूध लियो दधि लियो लियो घृत माखन माट सपूत ।
घर घर ते सब गावत आवत भयो महर के पूत ।

बाजत तूर करत कोलाहल वारि वारि दै दान ।
जियो जसोदा पूत तिहारो मह घर सदा कल्यान ।
छिरके लोग रंगीले दीसे हरदी पीत सुबास ।
मेहा आनन्द पुञ्ज सुमंगल यह ब्रज सदा हुलास ।

यासों ये चार पद भक्तन की वाणी के रूप में अंगीकार भए । चारों भक्त रसलीला में निमग्न भये । या महोत्सव के आनन्द में ओत-प्रोत होयवे सों इन चारन की बधाई फिर फिर राजभोग में गवे ।

परमानन्ददासजी (आचार्य वार्ता ८६,) त्रिलोकदास–कृष्णदास के अंग गायक त्रिलोकदास, कटहरिया वार्ता २१, मेहाधीमर (गुसा० वार्ता १५४) ये चार पदन के रचयिता चार भक्त महाभाग हैं तासौ बधाई में ये चार राखे ।

आज सो लेके जन्माष्टमी तक साकघर की गली पातलघर के आगे समाज शयन में होय । शयन भोग आवे तब सों शयन आरती उतरे तक । बीच में दूसरे आवे तो—छे-छे दूब की दतियां गवे । शयन भोग शयन में आज—गांवत गोपी मधु मृदु बानी । हरि को बिमल जस गावत ब्रजाङ्गना । सुन बड़ भागिन हो ।

आज सों मान के पद जन्माष्टमी तक नहीं होंय । केवल तानपूरासों "धन रानी जसुमति गृह"—ये पद नित्य गवे ! प्रथम दिन जो राजभोग सन्मुख में गवे वह दूसरे दिन राजभोग सरवे पर गवे ।

गोस्वामी तिलक श्री गोविन्दलालजी महाराज ने वि० २०२३ में सप्त स्वरूपोत्सव कियो ताके संग पवित्रा समस्त स्वरूपन को संग धराये श्रीजी में पधराय के यह मनोरथ हू अद्भुत अनूठो भयो तामें स्वरूपन के शृंगार या प्रकार हते सब सरूप अपने अपने घरन सों पधारे ।

श्री नवनीतप्रिय मुकुन्दराय जी श्री द्वारकानाथ जी के तो कुल्हे जोड़ तथा पिछोड़ा वस्त्र आभरण उपरोक्त विट्ठलवर एवं श्री मदनमोहन जी में पंचरंगी लहरिया के वस्त्र तथा मुकुट काछनी चन्द वाबा के पाग पिछोड़ा चन्द्रिका सादा गुलेनार नटवर प्रभु के कुल्हे, श्री मुकुन्दरायजी के कुल्हे, जडाऊधरी जोड़ सादा मयूर को । वाको बर्णन हू प्रथक् वहुत विद्वानन ने कियो सो यहाँ नहीं लिख्यो ।

पवित्रा को सरूप माहात्म्य पवित्रा की विशेषता श्रीजी में :—श्रीमदाचार्य महाप्रभु वल्लभ ने श्रावण शुक्ला ३ सोही श्री मद्भागवत सप्ताह प्रारम्भ कर आज रात्री को सम्पूर्ण करी ततपश्चात् श्रीनाथ जी स्वयं प्रकट होय दर्शन दिये । ब्रह्म संबंध करिबे की आज्ञा दीनी । जो सिद्धान्त रहस्य ग्रंथ में प्रसिद्ध है । ताही समय वल्लभ महाप्रभू ने मधुराष्टक ग्रंथ रचना कर तीन सौ साठ तार को पवित्रा

धराय मिश्री भोग धरी । ताको आशय या प्रकार है—या एकादशी को नाम पुत्रदा है । आचार्य बाल भाव के उपासक हुते तासों श्रीनाथ जी बालभाव सों अर्धरात्री में "तमद्भुतं बालकमम्बुजेक्षणं—की भांति" प्रकट भये ।

पवित्रा तीनसौ साठ तार को ही क्यों समर्पित कियो ? पहले द्विज लोग स्वयं जनेऊ बनायो करते, सूतहू कातते, जनेऊ की विधि या प्रकार बनायबे वारे बनायो करे है :—सोलह सोलह तारन को छः गुने करें। वे छियानवे तार भये । उन्हें आरोह अवरोह के रूप में बाँटि उन छियानवे तारन कों तीन बेर मिलावे । ये २२८ तार भये । बामें फेर बारह आंटा देय और फेर ६० बार बटि के तीन तार की जनेऊ बने । वह ब्रह्म गाँठ होय । ताय पहरे ।याको भाव पूर्ण पुरुषोतम षोडस कलान सो षड्रितु में लीला करे तो सोलह के छः गुने ९६ भये । उनमें राजस तामस सात्विक भक्तन के त्रिगुण रूप सों दोसौ अठ्ठाइस तार भये । तामें द्वादश मास जोड़ दिये । घड़ी में ६० पल होय है । इनको एक रूपसों साठ देबे में ३६० तार को जो सूत को जनेऊ भयो ताय प्रभु कों विनियोग कीनो ।

सूत के पवित्रा कूं पवित्रा क्यों कह्यो ? प्रभु को अपने प्रिय कों स्वच्छ पवित्र वस्तु अर्पण करनी चाहिए । सब से सुन्दर स्वच्छ पवित्र सूत है । तासों ही समस्त देव कार्यन में सूत ही लियो जैसे—लच्छा, कलायो, मोली आदि ग्रंथ-बंधन में, व्रत बन्ध में सूत सों ही बांधे कंकण बन्धन तथा कपिला बाचन में भी सूत के द्वारा बांध के कंकण बनावें है । सब से जल्दी अग्नि संयोगात्मक सूत ही है । पवित्रा दर्वी को पवित्री कहे । और वह सब कार्यन में देह पवित्रार्थ बांधे तासों ही यहां पवित्रा कह्यो । श्री हरीराय महाप्रभू ने पवित्रा मण्डन ग्रन्थ रच्यो है । वहां तीनसौ साठ तार के पवित्रा कों एक सौ आठ गाँठ लगाय के धरावे ताको आशय—

"शतायुर्वै पुरुष:" या वाक्य सों सौ वर्ष की आयु कों एक एक मृत्यु ले जाय तासों एकसो आठ गांठ की माला मनका सों जैसे भगवज्जन सिद्ध होय है तैसे ही एकसो आठ गांठ सों भगवत्संबंधी भाव सिद्ध होय है । "शतायुर्वै पुरुष:" या श्रुति वाक्य सों । "आयुर्हरति वै पुसां' या वाक्य सों आगे कहे हैं—

"कृते लक्षंतु वर्षाणि त्रेतायामयुतं तथा ।
द्वापरे तु सहस्त्राणि कलौ वर्ष शतं स्मृतम् ।।

या वाक्य सों सतयुग में लक्ष वर्ष आयु भोगे । त्रेता दश सहस्र वर्ष की आयु, द्वापर सहस्र वर्ष की आयु, कलि में तो कोऊ नियम नहीं, पचास होय तो छः महीना पचीस होय तो तीन महीना भोगे, सूक्ष्म काल होय तो क्षण भर भोगे ताको दोष निवारण कों सौ मनका सों भगवन्नाम लेय वाते काल दोष निवृत

होय । सब निधियन में षडैश्वर्य (छ: धर्म) तथा संयोगवियोगात्मक दूने करवें ते १०८ होंय । यासों ये स्वरूप हृदयारूढ़ होंय तासों प्रभू को तीन सौ साठ तार कों एक सों आठ गाँठ को पवित्रा धरावे । बाद में आचार्यन ने चार प्रकार की पवित्रा सेवा बन्धान सों भगवदाज्ञा सो और धराये जैसे सुनहरी, रुपहरी, रेसमी, असंख्य रंगन के नन्द कुमारिका व्रज भक्तन के तथा सूत को श्री जमुना महारानी के भाव को फूलन के सुनहरी स्वामिनी जी, रुपहरी चन्द्रावली जी, विविध रंगन के फूल परमानन्दजू की वाणी में पवित्रा पद गवे हैं—

सारंग—पवित्रा पहरत राजकुमार ।
तीनों लोक पवित्र किये हैं श्री विट्ठल गिरधार ।
अति ही पवित्र प्रिया बहु विलसत निरखत मवन मयो भार ।
परमानन्द पवित्रा की माला गोकुल की ब्रजनार ।।

व्रज ललनान के भाव सों हार सरूप पवित्रा धरावें हैं । मिश्री भोग को आसय यह है—सर्वतोमुखी मधुर एवं रस परिपक्व मिश्री है । ताकों धरें । आचार्यजन वैष्णवन के माथे प्रभु पधरावें तबहू मिश्री भोग की ही आज्ञा देत हैं । शृंगार में हू श्रीजी में केशरी कोर के स्वेत वस्त्र धरें ताको आशय विवाह में तथा उपनयन में संस्कार के स्वेत वस्त्र तथा मांगलिक हरदी की कोर सों जीव कों प्रभु सम्बन्ध होय है । वह विवाहवत् संस्कार है । तासों स्वेत वस्त्र प्रभु वल्लभ कों वरन किये तासों धरावे हैं । और मंगल उत्सव के भाव सों कुलहे । आज मंगला में ढाढ़ी गवे—

'आज बडो दर्बार देख्यो नन्द तेरो' तथा रात्री के प्राकट्य बाद प्रभात में ही मंगला में श्रीजी के सन्मुख पलना गवे । ताको आशय प्रभु प्राकट्य के बाद ही पलना झूलें और नौबत की बधाई कोहू आसय यह है कि जगद्गुरु ने असंख्य दैवी जीवन के उद्धारार्थ डंका बजाय घोषणा कीनी हती ।

अन्य स्वरूपन के शृंगारन के भाव भगवदीयन की वाणी सो या प्रकार सुनी है—विट्ठलबर मदनमोहनजी ये दोनों सरूप रास रसिक शिरोमणि होवे सों मुकुट काछनी ही धरिके श्री वल्लभ को दर्शन दिये तासों आप श्री ने सर्वप्रथम श्रीजी के मुकुट काछनी के ही शृंगार किये । चन्द्रमाजी चन्द्रिका के रूप में में चन्द्रिका सों दर्शन दिये तासों पाग चन्द्रिका के दूसरे शृंगार आचार्य श्री ने किये ।

स्वेत पिछोरा पाग अरु गुञ्ज माल पहराय ।
मोर चन्द्रिका सीस धरि किय सिंगार हरसाय ।। [सं० कल्प०]

दूसरे सब सरूपन में कुल्हे के शृंगार बालभाव के उत्सव रूप सों होय है। सर्वत्र पवित्रा पांच दिन धरें। ताको आशय पंचत्व शुध्यर्थ अथवा चार यूथाधिपान की ओर सों "**सर्व दोष निवृति हिदोषा पंच विधा स्मृता**" समस्त वैष्णव गोस्वामि बहू बेटीआदिन कों यथावकाश परदेस होय तोऊ पवित्रा धराय सकें। पवित्रा अवश्य धरावने कई स्थानन में सुनी है कि जन्माष्टमी तक हू बालक परदेससों पधार पवित्रा धरावते हते। पवित्रा धराय भेंट हू अवश्य धरनी कह्यो है—

"द्विजस्य वैदिक कर्माणि गायत्र्युपदेशज संस्कार वत्"

अतः समस्त वैष्णव को पवित्रा धरावने चाहिये बारह महीना के दोष परिहारार्थ तथा सेवा में ध्यान राखिते हू यदि अपराध है जाय ताके निवारणार्थ पवित्रा ३६० तार को धरामनों तथा भेंट धरनी।

अधिवासन—क्यों? कितनी बार? किन-किन भाव सों?

अधिवासन वर्ष में ६ होय परन्तु नूतन वस्तू पै भी अधिवासन होवे। जैसे प्रथम नाव में बिराजे तो अधिवासन भयो। वैसे प्रति वर्ष ७ दफे अन्य धरन में होय। श्रीजी में छै ही होंय। वसन्त, डोल, जेष्ठाभिषेक जल, अक्षय, हिंडोला, पवित्राराखी। और घरन में रथहू को होय है।

अधिवासन—कहा? अमंगल निवृत्यर्थ मंगल कामना हेतु होय है। तहाँ वस्तु को देवत्व मानि के रक्षार्थ पूजन करें। प्रथम संकल्प करे और कहे 'तदंगत्वेन अधिवासनमहं करिष्ये।' फेर पूजन कंकू अक्षत सों पुष्प सों करै फेर भोग धूपदीप आरती करै। ताको यह माने कि ये तत्तद् रस दाता होय नन्दकुमार कन्हैया की रसलीला में निर्विघ्न सम्पन्नता दै के प्रभुसुख पहुंचावे।

१—**बसन्त में** मदन कामदेव अभिवृद्धिकर सुन्दर रस दान करें। गावत चली है वसन्त बधावन नन्दराय दर्बार। "कंचन कलस सीस पै लीने मदन सिन्धुते भरि के।" अतः मदन देवता को पूजन करे।

२—**डोलोत्सव** निकुञ्ज में डोल झूले होरी खेलें तब डोल रक्षार्थ अधिवासन करे।

३—**अक्षयतृतीया** चन्दन धरावे ताको अधिवासन।

४—**जा जल** सों स्नान होय ता जल में जमना महारानी को पूजन करे। वो जल अभिमन्त्रित करै ताको अधिवासन होय। जेष्ठाभिषेक ताको अधिवासन।

५—**हिंडोला में** हू डोल की भांति एक मास झूला झूलें सो कोई अनिष्ट न होय। ताको अधिवासन।

६—ऐसे ही रक्षा बन्धन एवं पवित्राधिवास न होय। तथा अमुक वस्तु को अधिवासन होय जैसे पलना। या पै सदा झूलें ही है। हर घर में पलना रहे है यासों पलना को अधिवासन नहीं। क्योंकि गोदी में हू खेलें। कछु ही क्षण पलना पोढे सदा यशोदोत्संग लालित हैं अतः न होय। विजयादशमी जवारेन को भी नहीं कारण—प्रभू की पूजा करि विजयार्थ जवारे धरें। जैसे नन्द बाबा दूब धरें तो दूब को हू अधिवासन न होय।

श्रावण शुक्ला १२—पिछवाई गो० ति० श्रीगोविन्दलालजी कृत सात सरूपन को पवित्रा धराये वह सब सरूप बिराजेमये में समस्त निधीन के आचार्यन के चित्र भी। वस्त्र गुलाबी। ठाड़े वस्त्र हरे। पवित्रा धरे। श्री मस्तक पर चन्द्रिका। पन्ना मोती के आभरण। कर्णफूल को शृंगार। हिंडोला चांदी को। वस्त्र गुलाबी। पाग पिछोडा।

पदन में—मंगला में पलना गवे—'प्रेंख पर्यंकशयनं।' शृंगार होते में—नन्द भवन में अब ही देख्यों। सोहलानन्द महर घर। शृंगार सन्मुख में—माईरी कमलनेन श्यामसुन्दर। राजभोग में—हाँ-हाँ हो सब ग्वालना के। उत्थापन में—सुरंग हिंडोरा झूलें नागरि नागर दोऊ। वेणु में—आलीरी झूलत नन्द कुमार। दर्शन में—चार पद—(१) कमल नेन प्यारो झूलत। (२) झूलत भामिनी हिंडोरा। (३) आई सकल ब्रजनार। (४) झूलत लालन गिरधरन।

शयन में—(१) आज कहूँते या गोकुल में अद्भुत बरखा। (२) गोपाललाल चले गोकल को। और भी दो तीन बधाई होंय।

आज समस्त सेवक पवित्रा धराय के हिंडोरा झुलावें। आज ही गुरून कों पवित्रा धरावें। आज के दिन सर्वप्रथम दामोदरदासजी हरसानीजीकों ब्रह्म संबंध भयो तब से समस्त जीवन को ब्रह्मसंबंध प्रारम्भ भयो तासों पदन में पलना गवे—

ब्रह्म संबंध—अर्थात् समर्पण सर्वात्म भाव सों याते समस्त दोष दूर होय। और अपनोपन आवे।

"समर्पणेनात्मनो हि तदीयत्वंभवेद् ध्रुवम्।" (सि० मु०)

आगे आज्ञा करें "ब्रह्म संबंध करणात् सर्वेषां देह जीवयो:" सर्वदोष निवृत्ति हि।" ब्रह्मसंबंध लेवे सों समस्त जीवगत दोषनिवृत होयके प्रभुरस प्राप्ति सेवासुख भगवद् भाव को उदय।

प्रभु लीला दर्शन तथा संयोग वियोगात्मक प्रभुरस में तन्मयता।

(१) प्रभुलीलादर्शन सूरदासजी को भयो। ब्रजभयो महर० (२) संयोग वियोगात्मक तन्मयताशील गाँव वारे द्वारकादासजी को भयो देहानुसंधान भूल जाते। (३) भगवद् भाव उद्बोधन परमानन्द दास कों भयो। (४) सेवासुख आशकरणदासजी को भयो। (५) प्रभुरस प्राप्ति गज्जनधावन को भयी। या प्रकार समस्त अलौकिक रस प्राप्त होय। हरिराय महाप्रभु कहे हैं :—

सारंग—

श्रावण सुदी एकादसी अर्धरात प्रकट भये करुणा करि साधन बिन जीव सब उधारे।
आज्ञा दई श्री वल्लभ प्रभु को ब्रह्म संबन्ध की करुणाकर जीवन के पंच दोष तारे।
सेवा करवाय सब पै अपने मुख भोजन करि अधरामृत जु उनीदे परमफल विचारे।
रसिक सदा चरन आस रहत है निशिधोष पास दासन के दास तेउ भव जलते तारे।

अतः ब्रह्म संबन्ध भगवदाज्ञा ते होय। ब्रह्म सम्बन्ध के विषय में बहुत कह्यो लिख्यो गयो। तासों आज के दिन की महत्ता में संक्षेप में कह्यो है। ब्रह्म संबन्ध अर्थात् यशोदोत्संगलालित निकुञ्ज नायक के सुखार्थजीव अपनो सम्बन्ध परस्पर परब्रह्म पूर्ण पुरुषोत्तम सों करे। वह संबन्ध गुरु करावे। जैसे अरणी की लकड़ी में आग होय है। पर वाकों यज्ञ कर्ता मन्थन करिके आग प्रकट करे याही प्रकार जीव में ब्रह्मत्व रूप अग्नि तो हैं। पर ब्रह्म सम्बन्ध मन्त्र बिना प्रकट न होय। आचार्य श्री ने सिद्धान्त मुक्तावली में आज्ञा करी है।"परं ब्रह्मतु कृष्णोहि सच्चिदानन्दकं वृहत्।" पर ब्रह्म कों जीव सों परिणय कराय सर्व सुखानुभव दें या वात कों अष्ट सखान की वाणी में हू कह्यायो है। ब्रह्म संबंध होयवे पर ही जीव जागृत स्थिति में आवे। अन्यथा माया की गाँठ में बंध्यो रहे।

जमनाजी के पदन में हरिराय जी कहे है—

कहत श्रुति सार निर्धार करिके।
ब्रह्म संबंध जब होत है जीव को तबहि इनकी भुजा बाम करके॥
दौरिकरि सोर करि जाय पियसों कहें अति ही आनन्द हिय में जू भरि के॥

अतः आज को पावन दिन है जो पुष्टी प्राकट्य दिवस तथा जीवोद्धार को दिन है। तासों समस्त वैष्णव गुरुन कों पवित्रा धराये बाद परस्पर पवित्रा धराय के जय श्रीकृष्ण कहें।

श्रावण शुक्ला १३—शृंगार चूंदडी की। काछनी। सूथनी। पीताम्बर। मुकुट जडाऊ। आभरण सब जडाऊ। कुण्डल। वनमाला को शृंगार। ठाडे वस्त्र सफेद। हाल। त्रिवल पवित्रा सब धरें। पिछवाई चितराम

की। सातों बालक वल्लभ महाप्रभू गुसाईजी गोपीनाथ जी पुरुषोत्तमजी आदि श्री जी को पवित्रा धराते भये। कृष्णदास दामोदरदास आदि सेवक शंख ध्वनि झालर आदि वजाते भये। बीच में श्रीजी। दिवालगिरी चन्दोवा टेरा वन्दनवार बदलें। आज शाकघर की आडी सों फलफूल को हिंडोरा होय है। आज गोपी वल्लभ में सीरा एवं किकोडा को शाक भोग में अवश्य आवे। पद—

मंगला में—नेनभर देखो नन्द कुमार। **शृंगार होते में** बधाई तथा मल्हार तथा पलना गवे। **शृंगार सम्मुख**—श्याम सुन निपट ही आयो मेह। पलना भी गवे। **राजभोग में बधाई**—आज महामंगल महराने। **उत्थापन में**—तथा वेणु झूलें। हिंडोरा सन्मुख में श्रावण शुक्ला २ को शयन में बधाई दो बधाई जै जैवन्ती की होय।

विशेषता—[आजके दिन चतुरा भक्तनागा पै कृपा भई] वि० १५५२ आज ही के दिन प्रभु गोवर्धनधर श्रीनाथजी टोड के घना नामक स्थान पर पधारे। वहाँ प्रभु भक्त कामना कल्पतरू होइके पधारे। आचार्य वल्लभ महाप्रभू ने ही गिरर्धयाष्टक में सर्वप्रथम श्लोक के प्रथम चरण में आज्ञा करी है "भक्ताभिलाषा चरितानुसारी"—

अतः चतुरानागा नामक एक भक्त प्रभु गोवर्धनधर के दर्शन को अति आतुरता करतो। परन्तु गिरिराजपै पाँव कैसे धरे। तासों यहाँ न आवतो। तासों प्रभु भैंसा पै सवार होयके रामदास भीतरिया एवं कुम्भनदासजी को संग लैके ताको कृतार्थ करवे पधारे। मार्ग में गोखरू कांटा हुते अतः आपतो भैंसा पे बिराजे अगल-बगल रामदास कुम्भनदास चलते जाँय। जब काँटे चुभें तो दोनों भक्त उचकें आप अति प्रसन्न होंय या प्रकार वाललीलानुभव करावते टोड धना में पधारे। चतुरा नागा की प्रसन्नता को पारावार न रह्यो। वह दौड़ के किंकोडा (टेकोला) लायो। शाक कियो। तथा सीरा सिद्ध करि भोग समर्प्यो। तब श्रीजी कुम्भनदास सों आज्ञा करे पद के विना अरोगों नाहिं। तासों कछु पद गाउ। रामदास एवं कुम्भनदास के पैर कांटे के मारे लाल हे रहे। परम हास्यमय मुख कमल सों श्रीजी आज्ञा किये–तब पद गायो। परन्तु यह पद मन्दिरन में प्रभु सन्निधि में न गवे। पर श्रीजी की प्राकट्य वार्ता के आधार पर उद्धृत है।

भावत तोहि टोड को घनों।
काँटा लगे गोखरू भांगें फाटयो जात तनों॥
सिंह तो कहा लोमरी कोहू डर यह कहा बानक बनो।
कुम्भनदास तुम गोवर्धनधर यह कौन ढेढ़नी को जनों॥

या पद को आशय महाभाग कुम्भनदास जैसे भक्त को या प्रकार कहे। पर भाव सुन्दर है–वैष्णवत्व को उपदेसहू है।

आपको टोड को घनो अति सुन्दर भावै है जहाँ काँटा लगे गोखरू के काँटनते नितंग जंगल में कपड़ा फटें पांव रक्तन सों चुई रहें हैं सिह के डर की तो बात ही कहा घोर जंगल में लोमड़ी को हू डर लगै है। प्रभु आप तो गोवर्धनधर है पर (जाने आपकूं बुलाये) वह न जाने कौन ढेढ़नी को जायो है।

वैष्णव को यह धर्म है जामें प्रभुकों श्रम होय तथा तप के बल सों प्रभु पधारे किन्तु वात्सल्य स्नेह की माधुरी मूर्ति कों कितनो श्रम भयो यह बात न जानी। याते सिद्ध कियो कि वैष्णव भक्त प्रभु कूं श्रम देय तो सूद्रवत् आचरण है। तासों ढेढ़नी (सूद्रा) को जन्यौ बतायो।

मंगला में बधाई–नैन भर देखे०। चतुरा नागा के यहाँ पधारवे के आसय सों तथा राजभोग में–महामंगल महराने० के भाव के पद होंय।

श्रावण शुक्ला १४—

गोस्वामि श्री विट्ठलेशरायजी टिपारा वारेन को उत्सव :—देहली वन्दनमाल। हाँडी। जलेबी को बारा पिछवाई। खण्ड। पीरे (नीबुवा) पिछोड़ा। कुल्हे-पीरे, रूपहरी, किनारी के। ठाड़े वस्त्र लाल पवित्रा धरें। सब आभरण माणिक मोती के। कुल्हे को जोड़ चमक को। चोटी। और सब माणक मोती के कुण्डल। हिंडोरा कपड़ा को फूलवारो। माणक को दो लड़ा आप ही की तरफ को उत्सवन पै आवे।

पद मंगला—साँवरो मंगल रूप निधान। **शृंगार होत में**—बधाई तथा तुम ब्रजरानी के लाला अहो दधि मथत। **शृंगार सन्मुख में**—या पद की छेल्ली दो तीन तुक होंय कुल्हे के। **राजभोग में**—नन्द के दधिकांदो आँगन। **उत्थापन**—विट्ठलराय लाल गिरधर संग। **बेणु में**—हिंडोरना माई झूलत गोकुलचन्द। **दर्शन**—(१) दोऊ रीझे भीजे झूलत। (२) झूलो तो सुरत हिंडोरे झूला। (३) सो सावन आयो सेन काम की। (४) झूलत दोउ लाल। **शयन में**—हेरी हेरीरे भैया हेरी है। दोनों गवें।

वि० २०२३ आज के दिन श्री मुकुन्दरायजी कों श्री नवनीतप्रिय गोवर्धन लालजी के उत्सव को पधारे। मुकुन्दराय जी मदनमोहन जी बिराजे। भोग आये। झूले। वर्तमान तिलका० श्री गोविन्दलाल जी की उदारता सों आज को शृंगार सेवा देकर मुकुन्दरायजी कों झुलाये। विविध भाँति लाड़ लड़ाये। आज के उत्सव

नायक को परिचय :—

आप गुसाईंजी के प्रथम पुत्र गिरधरजी के द्वितीय पुत्र दामोदर जी के पुत्र हुते। सं० १६५७ आज के दिन आपको जन्म जी गोकुल में भयो। आपके श्रीहस्त सों श्रीजी टिपारा धरावते तासों आप टिपारावारे विट्ठलेशजी कहे गये। आप ही समस्त गोस्वामिन में प्रथम तिलकायत श्रीनाथजी द्वारा निश्चित भये। साठ दिन के शृंगार टीके तन के चालू भये।

आपने ही बादशाह जहाँगीर सों गोकुल एवं गोपालपुर की जमीन लेकर गौशालाएँ बढ़ाईं तथा श्रीनाथजी को सर्वप्रथम दूध पूड़ी (झाग पूड़ी) अरोगाई तथा दूधघर की विविध सामग्रीन के प्रकार चालू किये। तिलकायत पदासीन होयवे पर आपने प्रभु के अनेक मनोरथ कीने वा समय के पातसाहन हू कों आपने चमत्कार सों प्रभावित किये।

"प्रकटे विट्ठलनाथ फिरि दामोदर सुखकन्द।
श्रावण सुद चौदसहिकों सिन्धुतत्व रसचन्द॥" (सं० कल्प०)
"बहुरि सम्प्रदायाधिप भये विट्ठलनाथ सुजान।
दैवी जन उद्धरन को भक्ति मार्ग सुखदान॥" (सं० कल्प०)

इनके चार सन्तान भईं। प्रथम लालगिरिधर जी—

प्रथमहि गिरधरलालजू विट्ठलेश सुखकन्द।
माधव सित सातम सुभग नन्द दिगिश रसचन्द॥

द्वितीय पुत्र गोविन्दजी—

प्रकटे बहुरि गुविन्दजू विट्ठलेश सुखदान।
मृगसर बद बारसहि कों मुनि गृह साच्छत आन॥

तृतीय पुत्र श्री बालकृष्णजी—

श्रावण कृष्णा चौथ का नभ पूरन मन इन्द।
बालकृष्ण प्रकटे बहुरि भक्ति सिन्धु अरविन्द॥

चतुर्थ पुत्र काका वल्लभजी—

प्रकटे वल्लभ लाल फिर कुल वृद्धी सुखकन्द।
भादव कृष्णा चोदसहि कों बेद पूर्ण मुनिचन्द॥

आपको सरूप सुन्दर सुडौल मुख कमल गोल बड़े-बड़े चंचल चपल नेत्र श्यामवपु हो। **तिलकायत पद प्राप्ति के कारण तिलकायत परम्परा को प्रारम्भ भयो**—एक समय श्री विट्ठलेशराय जी आगरे पधारे भैया बन्धू नित्य झगड़ो करते तब उनकूं

बड़ो खेद होतो वे श्रीनाथजी सों बीनती करते और कहते—उनन की तो पातसाह बोले है। मेरे तो आप ही हो तब आपकूं श्रीनाथजी ने दर्शन दीने श्री हस्त में लाल छरी लिये हे। आपने आग्याकरी—जब गुसांईजी श्री विट्ठलनाथ जी मेरे सामे सातों बालकन कूं ठाड़ें किये और मोसों कही—जायँ आप प्रसन्न हो तायँ आप सेवा करावें। तब मैंने श्री गिरधरजी को हस्त गृहण कीनो और जो बालक सब सेवा करेंगे वो सामर्थ्य ऊठायबे लायक नाहिं। केवल गिरधरजी में है। मोकूं घर मथुरा में सतधरा में पधराय सर्वस्व समर्पण कियो। डंडोली शिलाते कन्धापे चढ़ायके निज मन्दिर तक पधराये ताते मुख्य सेवा तुम्हारी ही है। बरसदिना में तीनसो साठ दिनन में साठ दिन उत्सव के मुख्य शृंगार हैं। सो तुम करो। अन्य शृंगार सब बालक करें। ऐसी आज्ञा करिके श्रीनाथजी गिरिराज के मन्दिर पैं पधारे। दूसरे दिन पातसाहू ने श्रीजी की आज्ञा भई तैसी लिखदीनी। या प्रकार झगड़ो सब मिटि गयो। तब से आपके शृंगार कहाये। आपको सरूप रूप तथा लीला रूप दो पद यहाँ प्रकट लिखत है ये मंगला में होंय :—

सांवरो मंगल रूप निधान।
जादिन ते गोकुल हरि प्रकटे दिन-दिन होत कल्यान।
बैठी रहो स्यामगुन सुमिरो रैन दिना सब याम।
श्रीभट के प्रभु नैन भरि देखो पीताम्बर घनस्याम।

ताको आशय यह है उपरना मंगला में पील धरे तथा मंगल रूप आप है, आप श्री विट्ठलेशरायजी जा दिन ते श्री गोकुल में आपको प्राकटय भयो तादिनते नित्य आनन्द की लहर बढ़ी। क्यों कि श्रीनाथजी आपसों आज्ञा करते आप केही श्री हस्तसों टिपारा धरामते। तथा आपको कृपा करिके साठ शृंगार दिये। और बालकन कों—बैठी रहो बैठी रहो श्याम गुण (श्रीनाथ जी के गुन) समिरो। सेवा बाँधीभई कियो करो। रात्री दिन सेवा में लगे रहो। अधिकार मती चाहो। और श्रीनाथजी की रूप माधुरी निहारत रहो आग्या दिये।

दूसरो पद आपने गोचर भूमि बढ़ाई। दूध घर की सामग्री विशेष अरोगाई। तासों ये पद गवें। तुम व्रज रानी के लाला महोदधि मथत सुहाई। यामें बीच में कुछ तुक आपकी लीला परक हू है—

मेरे लाल की गैया अतिवाढ़ी चरन वृन्दावन जांय।
पान्यौ पीवें नदी जमुना को अंचम वार वे सांझ ॥
मेरे लाल प्यारे लाल तुम कंस मारि गढ लेहू।
मथुरा फिरो व्रज राज दुहाई गोकुलपति सुखदेहू ॥

या तुक सो यह सिद्ध होय है आपने जो व्रज (जतीपुरा) गोपालपुर एवं गोकुल स्थित किये। तापें व्रज राज दुहाई फेरे अर्थात् गोवर्धन नन्द राजकुमार की दुहाई फिराय गोकुल गोपालपुर के राजा कहाये। आगे झूलाहू में एक पद उत्थापन में आपकी लीला साम्य होत हैं—

विट्ठलराय लाल गिरधरन झुलावत सुरंग हिंडोरे।
सुन्दर वदन निहारत फिर फिर चितवत नयना जोरे।
अति सोभित सिर पाग सवारी केसर रंगन बोरे।
कर्नफूल अरु चिबुक वदन पर झलकत थोरे-थोरे।
तेसिय संग राधिकारानी छवि लागत तन गौरे।
श्री विट्ठल गिरधर जब झूलत जुवतिन्ह के चितचोरे।

या पद में कान्ताभावाविष्ट आचार्य श्री विट्ठलेशराय जी झुलाय रहे है श्रीनाथजी को। आपको श्रीमद्भागवत के पाठादि करायवे को विशेष व्यसन हो। आपने श्रीमद् गोकुल में पौष शुक्ला नवमी वि० १७११ को लीला प्रवेश कियो। आपके जेष्ठ पुत्र श्री लाल गिरधरजी तिलकायत पदासीन भये।

श्रावण शुक्ला १५ [रक्षा बन्धन] सलूनो

गो० श्रीदामोदर जी महाराज को उत्सव—आज सों गादी तकिया चौकी तथा समस्त साज लाल मखमल के एवं जड़ाऊ सोना के सब पात्र शैय्या जडाऊ। राजभोग आरती बाद खिलौनान सों खेल होंय। देहली वन्दन माल। हाँडी। अभ्यंग होय वस्त्र कसूमल। पाग। पिछोडा। पिछवाई। खण्ड। सुनहरि रुपहरी किनारी के। ठाड़े वस्त्र। पीरे शृंगार भारी। चार कर्णफूल के। पवित्रा धरें वन माला को शृंगार। आभरण उत्सव के माणक मोती हीरा पन्ना दिये। हिंडोरा काच को पाटियावारो। दिवालगिरी चन्दोवा खीनखापके। लाल टेरा वन्दन माल वगैरे।

मंगला में—(१) आज सोहला नन्द महर घर। (२) आज गृह नन्द महर के बधाई। **अभ्यंग में**—पूर्ववत् छः पद। **शृंगार होते में**—अहो व्रज भयो महर के पूत। **शृंगार सन्मुख**—आनन्द आज नन्द जु के द्वार। **राजभोग**— आये पर चार ढाढ़ी गवें। कृष्ण जन्म सुन अपने पति सों। **राजभोग सन्मुख**—हेरी हे आज नन्दराय के आनन्द। **उत्थापन में**—झूलत गिरधरलाल यह छवि। **वेणु में**—गोपी गोविन्द के सुरंग हैं और।

हिंडोरे सन्मुख झूला में—(१) सावन पून्यो मनभावन। (२) मनमोहन रंग बीरे। (३) सुधर रावरे की गोपकुमार (४) राधेजू झूलत रमक झमक। **शयन में**—

सावन सुन सजनी बाजे मादलरा। रक्षाबन्धन सवेरे होय तो शृंगार में आरती बताय, वेणु धराय सारंगद् दी अलापचारी होय ये पद गवें "बहिन सुभद्रा राखी बाँधत बल।" राखी धरत ही गीतन बारी तथा मादल की बधाई बैठे जन्माष्टमी की भट्टी पूजन होय अधिक में सेवक नहावें। रक्षा तिलक अक्षत लगाय दर्शन होते में धरें। पंखा की आड में दोनों पहुँची के स्थान में दोनों श्रीहस्तन में तथा दोनों बाजू के स्थान में दोनों श्रीहस्तन मैं राखी बांधि भेंट धरें। फेर भोग गोपी बल्लभ के। तथा उत्थापन भोग के। साथ उत्सव भोगहू आवे। शयन के समे पवित्रा राखी बडी होय जाय। आज सों गोपी ग्वाल की तिबारी में या अन्नकूट की रसोई में नन्द महोत्सव के लिये दधिकांदे को दही दूध इकट्ठो होय तथा सिद्ध होय।

उत्सव तथा उत्सव नायक की विशेषता

रक्षाबन्धन—जयसिंह कल्पद्रुम भविष्योतर पुराण कथा—एक समय बारह बरसलौं देवासुर संग्राम भयो अरु सदा देवराज इन्द्र हार तो रह्यो। तब इन्द्र ने ब्रहस्पतिजी कों बुलाये और कही मोय ऐसो उपाय बताओ जासों हों विजयी बनो। ब्रहस्पतिजी ने मना कीनी तब इन्द्राणी ने कही कालि पूर्णिमासी है। हों वनौषधि लाय पोटली बनाय ब्राह्मणनन द्वारा स्वस्ति बाचन कराय रक्षा बाँधोगी ऐसे ही कीनो। और इन्द्र के हाथ में रक्षा बाँधी। अरु इन्द्र विजयी भये। तबसों रक्षा बन्धन पूर्णिमा भई।

यः श्रावणे विमलमासि विधान विज्ञे।
रक्षा विधानमिदमाचरते मनुष्यः।
आस्ते सुखेन परमेण स वर्षमेकं।
पुत्र प्रपौत्रः सहितस्ससुहृद्जनस्यात्॥

बहन हू भाई की मंगल कामन सों रक्षा बाँधे है। ब्राह्मण लोग हू रक्षा बाँधे है। अष्टछाप के पदन मेंहू राखी वर्णन मिले है। राखी बांधत गर्ग श्याम कर। (नन्ददास) राखी गिरधर हाथ बिराजे। (कृष्णदास) अपुनपौ वारत बँधी प्रेम की पाजे। (कृष्णदास) राखी बाँधत गिरधर लाल। (चत्रभुज) प्रभु पर करत नोछावर देत है मुक्तामाल। (चत्रभुज) राखी बन्धन नन्द कराई। गर्गादिक से रिसिन बुलाये लालहि तिलक बनाई। परमानन्द दास की जीवन चरन कमल लपटाई।

(परमानन्द)

सलूनो ब्रज में यह त्यौहार बड़े चाव सो सर्वत्र मनावै है। यहाँ श्रीद्वारकेश जी महाराज ने एक पद सलूनो को कियो है। भली करि आये पर्व मनाय सलूनो। झूमझूम झूलवत रंगरंगन रस बरखत ब्रज दूनो। एक रूप एकगुन पूरन नाहिन ऊनो द्वारकेश स्वामिनी हंसि यो कह्यो झूलिये जु आज है पूनो।

"उत्सव नायक श्रीदामोदर जी महाराज"

आपके पिता श्री गोस्वामी विट्ठलनाथजी (गुसाईजी) के प्रथम पुत्र गिरधर जी हते आपको जन्म वि० १६३२ में आज के दिन भयो आपके बड़े भाई श्रीमुरली धरजी जो पातसाह को अंगीकृत करिये तथा वो आप श्री के स्वरूप को 'मारफते खुदा' मानि दिल्ली बुलाय राखे तासों आप ही श्रीनाथजी के प्रधानाचार्य भये आप सुन्दर मन्त्रज्ञ हुते आप अष्ट विधि प्रस्तार घनादि के ज्ञाताहुते आपने श्रीनाथजी के विविध मनोरथ किये तामें फूलन के पलना फूलनके हिंडोरादि विशेष किये।

"प्रकटे गिरधरलाल के दामोदर गृह जोत,
सोलह सों बत्तीस के रक्षाबन्धन होत।"

—सम्प्रदायकल्पद्रुम

स्वभाव एवं स्वरूप वर्णन :—

आज के पदन में दो पद आपके स्वभाव सरूप के प्रकटायवे वारे होय हैं। प्रथम पद में आचार्य श्रीवेदज्ञ हते। याही सों मंगला में ये पद बधाई को गवे।

सोहिलरा नन्द महर घर आज बाजे बाजे मादलरा अनुपम गति।
नरनारी मिल मंगल गावत रिषि मुनि वेद पढ़त ब्रह्म सिव सुर फूले सुरपति।
भयो आनन्द तिहू पुर घर घर भक्त अभय कीने दान अति।
जगन्नाथ प्रभु प्रकट भये हैं कूंख सिरानी रानी जसुमति।

या पद के भाव सों आप वेदपाठी हुते ऐसो आभास होय है। दूसरी स्वामिनी भाव भावित आप श्रीनाथजी के अनन्य होय कान्ताभाव सो आपको ये पद झूलन में होय है।

सावन पून्यो मनभावन हरि आये घर झूलोंगी पचरंग डोरी बांध हिंडोरे।
पहिरोगी सुरंगसारी कंचुकी कसि बाँधोगी कारी हीरा के भूषण सोहे तन गोरे।
धरिहों कुसुमहार निरखोगी बारंबार नयनन निहार नन्दलाल कछुक वयस थोरे।
रसिक प्रीतमसंग सुखद पावस रितु बिलसोंगी मेटोगी आनन्द भर कंठ भुजा जोरे।

आप श्री गिरधरजी के सुपुत्र होयवे सों पिता के समान कंधा पे न चढ़ाय आप कहत हैं—"आज पूरन पूनम सावन की मनभावन है सो मेरे प्यारे घर आमेंगे तब पचरंग डोरी बाँधके झूलोंगी अपनो सरूप वर्णन करे है। अनुराग रूप सारी धरूंगी लाल सारी सुरंग कसके श्यामसुन्दर के कारे रंग वारी कंचुकी बाधूँगी पहरनो न कहि बाँधनो कह्यो। याते मेरे प्रभू मेरे हिय में बिराजे। हीरा के भूषण सो शरद

चांदनी में जो रास रसिक ने रसदान कियो ता भावना सो आभूषण हीरा के पहरोंगी । फेर जयमाल रूपी पुष्पहार पहराय बारम्बार निहारती रहूंगी । नैना जोड़ती रहूंगी क्योंकि नन्दलाल छोटी अवस्था के ही किसोर रूप में है या पावस रितु में भुजान सो भुजा जोर कंठ सो लगाय भेटूगी मिलूंगी ।"

आप परम तेजस्वी हुते परन्तु मोरेऊ अति हुते । अधिकारी ने तीन लाख रुपैया देवी द्रव्य श्रीजी को जानिके अजान वृक्ष के नीचे गाढ़ दिये । महाराज सों छिपाय के । श्रीजी ने आप सों आग्या करी। और वे रुपेया मंगाय अंगीकार किये ।

आज राजभोग बाद बिछायत भई मणीकोठा में । आपको लीला प्रवेश गोकुल में वि० १६९४ कार्तिक शुक्ला १० कों भयो । मदनमोहन जी के चोरी जायबे पर वियोग में घनश्याम जी सप्तम लाल जी तथा आपने वियोगाग्नि में सदेह लीला प्रवेश करी।

गोवर्धनलालजी को उत्सव

भाद्रपद कृष्ण १—

गोस्वामितिलक श्री स्वर्णयुगदाता गोवर्धनलाल जी महाराज को उत्सव । देहली वन्दनमाल । हांडी बाराजलेबी को टेरा । चौखटा तिवारीगिरी तथा वंदनमाल वगेर सब अमरसी (केसरी) साटन की पिछवाई[1] । शृंगार सो राजभोग सरे तक चितराम की । जामें सखी भाव सों ठाडे व्रज भक्त रूप गोवर्धनलाल गोपाललाल व्रजरायजी मधुसूदनलाल लाल कृष्णलाल गोपेश्वरलाल प्रमृति निकुञ्ज लतान में समस्त सेवा सुख लिये । वस्त्र केसरी मलमल के रुपहरी किनारी के काछनी सूथनगासी को पटका । ठाडें वस्त्र सफेद डोरिया के । मुकुट हीरा को कुण्डल मयूराकृत हीरा को आभरण हीरा मोती माणक पन्ना के । जड़ाऊ हांस त्रिवल अलक धरे वनमाला को । शृंगार राजभोग सरे वाद सोना को । बंगला आवे जामें सुन्दर दोऊ आडी पीठक में सोने के कलस तथा बाल लीला द्वारन पर तथा उपर कलात्मक ढंग को ये बंगला आरती तक रहे । आरती के बाद बड़ो होय । राजभोग में पांच प्रकार भात के साथ विविधसामग्री अरु दुपहर में मणीकोठा में बिछायत होय आरती आदि आवे । सोना के तथा जडाऊ साज बासन सिंहासनादि रहे गादी तकिया जडाऊ आवे ।

हिंडोरा सोना को होय नवनीतप्रिय झूलबे पधारे । उत्थापन भोग सरे बाद नवनीत को पधराए जाय नवनीत सम्पुट में पधारें । हिंडोरा सोना को । तामें सिंहासन आवे । इतने दिन चौकी पे हिंडोरा । आवे नवनीत के

१—मथुरा वारे गोपाललाल की बनवाई

पधारवें सो सिंहासन आवे पीछे हिंडोरान के बड़ी आरसी तथा केलान के खम्भन में सेहरा की वेल चढ़ी भई । अरु आज अन्तरंग आली सखी प्रेष्ट सखीभाव सो मुखिया भीतरिया बालभोगीया ये ही चँवर करें ।

नवनीतलाल के पधारवे के बाद वेणु सहित नवनीत झूले । श्रीजी युगल जोड़ी से झूले । फेर उत्सव भोग आवे फेर समय भये भोगसरे । फेर झूले । आठ कीर्तन होंय बाद नवनीत सम्पुट सों बालकृष्णजी मदनमोहनजी नवनीत जी बालकृष्णजी मदनमोहनजी सब श्रीजी के गोद में तथा तत् तत् स्थान में विराजे । आरती होय फेर पुनः नवनीत पधार नित्य क्रम की सेवा होय । शयन में हू वड़ी बिछायत डोलतिवारी आदि में होय ।

पद—मंगला में—यह सुख देखोरी तुम माई । **शृंगार होते में**—यह सुख देखोरी तुम माई । नेन भरि देखो नन्दकुमार । गिरधर नामधारीओर हू बधाई गवे । **शृंगार सम्मुख में**—नन्दको लाल व्रज पालनो नन्दराय के नवनिधि आई । **राजभोग** आये पे ढाढी बधाई । **राजभोग सन्मुख**—सब ग्वाल नाचे **उत्थापन**—जगजीवन प्रान आधार हिंडोरा । नवनीत पधारे तब—कुँवर चलो आगे गहवर में । जहाँ आगे आवे दोनों चरन के कीर्तिनिया कमल चौक में तथा वेणु झूले तब ये पद गवे—

१—एसो श्रीपतिजू को चित्र विचित्र । भोग आये तब । २—गोकुलराय की पौरी रच्यो है हिंडोरना । ३-(खमाज में)-मनमोहन रंग हिंडोरना । सन्मुख दर्शन में—मनमोहन रंग हिंडोरना १। २—आज तो हिंडोरा झूले छैया । ३—जमुना तट नव सघन । ४—आज लाल झूलत रंग भरे । ५—व्रज के आँगन रंग मच्यो । ६—झूलत हैं बांह जोरे । ७—झूलत कुंज कुटीर । ८-सो तू राखि लेरी झोटा तरल नवनीत लाल पाछे पधारे तब देखवे आवत बनते बनवारी । शयन में—भाँदों की ही शयन आरतीतक गवे ।

आपने प्रभु सुखहेतु राजभवन की भाँति सजावट कीनी । और वह श्रीमद् भागवत के आधार पर रामराज्य प्रासाद को वर्णन । शयनागार को वर्णन । या प्रकार जो कियो ताको श्रीजी में पूर्ण करिवे की सार्थकता कीनी । सालभर में यह श्रावण में जो वड़ी बिछायत गो० ति० गोवर्धनलालजी महाराज ने इन श्लोकन[1] के आधार पे अपने जन्मदिन में भी करी तथा उपरोक्त पांच बिछायत बड़ी होइ हैं ।

गोस्वामी तिलक श्री गोवर्धन लालजी महाराज को संक्षिप्त परिचय—

आप वीरवर श्री गो० ति० गिरधारी जी के यहाँ वि० १९१८ आज के दिन प्रकटे । और आप को मुण्डन श्रीजी के रतन चौक में वि० १९१९ बैसाख में भयो । वि० १९२० में श्री गिरधारी जी सकुटम्ब बनारस पधारे और बाद वि०

१—भाग ६ । ११ । ३२—३३

१६२१ में वैसाख मास में व्रज में चन्द्रसरोवर में इन्हीं वालककों बड़ी माता बड़े जोर सों निकली। वहाँ श्री गिरधारीलालजी ने व्रज को ही माता मान मान्यता करी—"बाबा स्वस्थ होय जांयगे तो व्रज यात्रा बाबा कूं लैके करूंगो" और बड़े सुन्दर ढंग सों आप स्वस्थ भये। तब गाजा बाजा धूमधाम सों वि० १६२३ में माघ के मास आपने व्रजयात्रा करी।

जब श्री गोवर्धनलाल जी बाबा साहेब पांच वर्ष के हुते आपको व्रजलीला में बहुत आसक्ती हुती व्रज के स्थलन में बालकनकों लेके आप विविध क्रीडा करते। वि० १६२७ में चैत्र शुक्ला ४ को आपको नाथद्वारा में ही उपनयन भयो। आप उदीयमान चमत्कृत सरूप होवे सों श्रीजी ने आपको सेवा लेवे हेतु कई राजकीय घटना पैदा करी। पिता श्री गिरधारीलाल जी को मेवाड़ में प्रभु सेवा न कराय जीर्णोद्धारार्थ तथा प्रभु की अर्थसेवा हेतु व्रज निवास होवे पर आप श्री गोवर्धनलाल जी वि० १६३२ आषाढ़ कृष्णा १ को तिलकायत पदासीन भये और प्रभु सेवा तथा नगर नाथद्वारा के अभ्युदय में आप अग्रणी बने। मत्तन के पदन के आधार पर आप सारी लीला करन लगे।

"गोवल्लभ गोवर्धन वल्लभ श्री वल्लभ गुण गिने न जाई।
भुवि रेणु तरैया नभ की घन की बूंदें परत लखाई।
जिनके चरण कमल पद वन्दित सन्तत होत सदा चितचाई।
छीत स्वामि गिरधरन श्री विट्ठल नन्दन नन्दन की सब पर छाई।
गायन सों रति गोकुल सोंरति गोवर्धन सों प्रीति निभाई।
श्रीगोपाल चरन सेवा रति गोप सखा सब अमित अघाई।
गो वाणी जो वेद की कहियत श्री भागवत भले अब गाई।
छीत स्वामि गिरधरन श्री विट्ठल नन्दनन्दन की सब पर छाई।

आप जब से तिलकायत पदासीन भये तब सों वल्लभ तथा गायन सों रति प्रीति निभाई। आपने समस्त भारतवर्ष में यह घोषणा कराय दीनी—गोवध न होय और हम एक लाख गायन को पालेंगे। तासों कई स्थानन में आपने गौशाला बनवाई जो आज उनकी गाथा गाय रही है। आपने प्रयत्न करके व्रज सों गौ वध बन्द करवायो। या ही कारण आप गोवल्लभ तथा गायन सो प्रीति करिवे वारे भये। आपने गो मातान को सरूप सबन को समझायो तासों थूली अरोगानो तथा सुख सों गौमाता विराजे या कारण "चर" तथा "प्याऊ" आदि अनेक स्थल बनवाये। "गोवर्धन वल्लभ। गोकुल सो रति गोवर्धन सो प्रीति निभाई।"

आपने तिलकायत पदासीन भये बाद वि० १६३५ में असाढ़वद ५ रवि० को श्रीनवनीतप्रिय को लालबाग पधराये और जेष्ठ मास ही में नवनीतप्रिय को

पीतम पोली में गोकुलनाथजी के मन्दिर में पधराये। ताको पिछले उष्ण कालिक सेवा में बर्णन कर आये। आपने श्रीजी के सुखार्थ वैशाख कृष्णा दशमी वि० १६६६ में (वचनामृत पृष्ठ ६६) चार सरूप पधराए लालबाग[1] षड्रितु मनोरथ कर छप्पन भोग अरोगाये। ताको वर्णनहू पूर्व में करि आये। वि० १६६६ में सर्वप्रथम आपने श्रीजी के यहाँ सारंगी वाद्य चालू कियो तथा बारहमहीना के कीर्तन की प्राणालिका गंगादासजी मुखिया कीर्तनिया को बेठाय पद स्थिर किये। पदन को नियमित किये। आपने व्यवस्था करिके बजट बनाये। चारो द्वादशी शीतकाल के मंगला में विशेष सामग्री मंगल भोग के साथ अरोगायी तथा दो मंगल भोग उनके शृंगार तथा शृंगारन की प्रणलिकादि बांधी।

पहले चार घटा ही शीतकाल में होती। आपने द्वादश निकुञ्ज के भाव सो द्वादश घटा निर्मित करी तथा अनुपम चार शृंगार शीतकाल के पाछली रात को पीताम्बर के चोलना को। चन्द्रोदय की घटा को। तथा दमोदरलालजी महाराज के जन्मदिन को। हीरा की टोपी को—किये। उष्णकाल में पांच अभ्यंग तथा पांच अभ्यंगन के शृंगार सामग्री निर्णय किये तथा शयन में सामग्री बढ़ाई। कसूम्बा छटकी पिछवाई सिद्ध कराई। अनेक सेवासुखार्थ बिछायत आदि आभूषण वस्त्र तथा शृंगारन के नियम स्थिर किये। नाथद्वारा स्थित बहीन में लिखवाई सं० १६७८ से १६७६ तक सोना को पलना सोना को हिंडोला सोना को वंगला बनवायो तथा जड़ाऊ साज जड़ाऊ चोकठा जड़ाऊ मुकुट वगेरे टोपी छीट की सिद्ध कराई।

सं० १६८६ से १६८८ तक दिवालगिरी भावात्मक कपड़ा पर कारीगरी एवं कलात्मक सिद्ध कराई तथा अनेक रितुन के सुखसाज सिद्ध कराय नियमित चालू कराई। दिवाली को बंगला तथा श्रीजी नवनीतप्रिय में काच के चंदन के अनेक वंगलादि बनवाये। सामग्रीन के नियमितता तथा बंधान बनावे की प्रक्रियादि तथा सेवाकी रीति तत् तत् घरन में राखी।

परवारग स्थिर कर सेवा के अधिकार शृंगार के अधिकार की प्रणालिका चलाई। या प्रकार अनेक प्रभुसुखार्थ सुविधादि के साथ भावात्मक शृंगार भोग पद आदि निश्चित किये। चोदह शृंगार पदाधार पर स्थित किये जो आज तक होय है। तासों ही गोवर्धन बल्लभ तथा गोकुल सो रति गोवर्धन सो प्रीति निभाई। यह सिद्ध भयो। जिनके चरण कमल पद वन्दित संतत होत सदासुर चितचाई।

नाथद्वारा नगर इनके चरन कमल पद बन्दित भयो और सारी प्रजाने चितचाही वस्तु पाई। नगर अभ्युदय में बनास को पुल बधवायो। गोवर्धन हाई स्कूल गोवर्धन

---

१ देखो दिव्यचरित्र वसन्तराम शास्त्री द्वारा प्रकाशित।

कन्याशाला गोवर्धन हास्पिटल जनाना हास्पिटल विद्यामन्दिर तथा उचित कारिणी सभा । द्वादश निकुञ्ज के भाव सो बारह बाग । वैष्णव सुखार्थ कई धर्मशाला तथा औषधालय भगवदीयन के लिये गोवर्धन भण्डार, नवनीतप्रिय को बगीचा बेठक को बगीचा मन्दिर में कई जीरणोद्धार तथा नवनिर्माण कराये ।

नगर के हितार्थ सवारी निकालनी, मेला लगवाने, अनेक गुणीजन विद्वान कवि साहित्यकार कलाकारन को आश्रय देकर नवजन नागरिकन को अग्रसर करावे में अग्रणीयता लाये । दंगल अखाड़न के निर्माण किये ।

छीतस्वामि गिरिधरन श्री विट्ठल नन्द नन्दन की सब पर छाई ।
भुवकी रेणु तरैया नभ की धन की बूंद परत लखाई ।

आपके गुण या प्रकार है—घन बूंदे गिनी जाय सके, भुविकीरेणु अगणित है, तैसे ही आप के गुण भी अगणित हैं । गायन सों रति उपरोक्त गोकुल सो रति ब्रजवासिन को तत् तत् स्थान में सेवार्दिके तथा तत् तत् स्थान बांधि और उनको सेव्य सेवक भाव देई प्रीतिसो निभाय राखी तक प्रभु सेवानुरागी राखे । श्री गोपाल चरण सेवारति गोप सखा सब भनित अघाई प्रातःकाल सो लेकर तथा सतत प्रभु सुख विचार पूर्वक प्रणालिका एवं भोग राग शृंगारन में वृद्धी तथा गोप ब्रजवासीनको सखा भाव सों, झापट आदि में सखाभावना सों व्यवस्था देय उन्हें तृप्तकीने तथा दुःख सुख में तन मन धन सो सेवक मान सहयोग दीनो । गोकुल में समस्त गोस्वामि बालकन के हितार्थ जातीय झगड़ा टंटा दूर कराय असंख्य मुद्रा शिक्षार्थ सेवार्थ दे, शुद्धाद्वैत वैष्णव वेल्लनाटीय महा सभा के अध्यक्ष पद सों गोकुल सो रति प्रकट करी ।

"गोवाणी जो वेद की कहियत श्री भागवत भले अवगाही ।"

आपने चित्र मय भागवत मसन अध्ययन पठन पर्यंक निर्मित कराई तथा सुबोधिनी के प्रकाशनादि किये । आपने वेदपाठीन को राखिके संस्कृत पाठशाला में वेदाध्ययन करवायो तथा छात्रन को पारितोषिक दियो । संस्कृती संस्कृत अभ्यु-दयार्थ असंख्य मुद्रा खर्च करी । 'भागवत भले अवगाही' को प्रत्यक्ष प्रमाण में आपके सुपुत्र श्री गोस्वामी दामोदरलालजी सुबोधिनी के सुन्दर प्रवक्ता तथा अच्छे व्याख्याता भये ।

छीत स्वामि की वाणी है—इनमें और नन्द नन्दन में कोइ फरक नही साक्षात् प्रभु परछाई आप हुते । आपने राजसी ठाट बाट सों ब्रजयात्रा कीनी । आपने अपने चमत्कारनसो अनेक विधर्मीन कूं धर्मी तथा अवैष्णन को वैष्णव बनाये जैसे— भारत के गवर्नर विलिंगडन को आशीरवाद सो वाईसराय पद मिल्यो । तथा

कृष्णगढ़, कोटा, जोधपुर, पाटन, धोलपुर आदि वगेरन के राजा महाराजन को अपने प्रभाव चमत्कारन सो नतमस्तक किये ।

आपने जगन्नाथपुरी की बैठक प्रकट करि सेवा व्यवस्था करी । आपने बम्बई के टाउनहॉल में तथा अन्य कई स्थानन में विशाल जनता में सभापति पद सों भाषणादि दिये । बल्लभ यश पताका फहराय जन मोहित किये । आपने दो विवाह किये उनसे तीन लालजी भये । श्री राणी बहूजी सों दो बेटीजी एवं एक लालजी प्रकटे जो उदीयमान वा युग के सुन्दर सुडोल वीर साहसी गंभीर दयालु दामोदरलालजी महाराज श्री गुसाईजी के स्वरूप बत् प्रकटे । उनके जन्मोत्सव पर उनके चरित्र लिखेंगे । आपके जन्मदिन पैं पूर्व में श्री गिरधारीजी महाराज ने मल्लकाछ टिपारा को शृंगार कियो तथा आपने स्वर्ण युगदाता होवे सो मुकुट काछनी के शृंगार किये । आपको अलक के शृंगार बहुत प्रिय हते । अनेक लीला में यहाँ कछु लिख पाये हैं । इनके चरित्र प्रथक् हू है ।

आपके जन्मदिन के पद (मंगला में)

यह सुख देखोरी तुम माई ।
जन्मघोष गिरधरन लाल को बहुरि कुसल सों आई ।
आगम के दिन नीके लागत उर सुख लहर उठाई ।
ऐसी बात कहत ब्रज सुन्दरि आप आपने भाई ।
फिर हंसि लेत बलाय कूंख की जिहि जन्मे जु कन्हाई ।
तुमरे पुत्र भयो नन्दरानी सब तन तपत वुझाई ।
नन्द कुमार सकल या ब्रज में आनन्द बेलि बढ़ाई ।
श्री विट्ठल गिरधर पूरन निधि सबहिन भूखे पाई ।

हिंडोरा ब्रज के आंगन माच्यो ।
शिव ब्रह्मादिक कौतुक भूले संकर ताण्डव नाच्यो ।
शुक सनकादिक नारद शारद मुनिजन हिंडोरो देखन आये ।
नन्द को लाल झुलावत देख्यो बहुत तूठ हम पाये ।
जुवति यूथ अटा चढ़ि ठाडी अपनो तन मन वारे ।
परमानन्ददास को ठाकुर चित चोर्यो यह कारे ।

या पद सों या प्रकार सिद्ध होय है—पूर्व में हिंडोरा सोना को न हुतो सुन्दर सरस यह हिंडोरा बन्यो तथा ये हिंडोरा ब्रजराज श्रीनाथजीके आगन ब्रज के आँगन माच्यो ताको देखवे देवता सब आये । देखके भगवान शंकर वैष्णवाग्रगण्य प्रसन्न है गये और ताण्डव नृत्य करन लगे ता समे नन्द को लाल झुलावत देख्यो बहुत सुख

तुष्टी प्रसन्नता हम पाये। यहाँ या पद सों यह सिद्ध होय है जैसे छीतस्वामी को पद है। प्रिय नवनीत पालने झूले श्री विट्ठलनाथ झुलावे। दोनों एक होय झूले झुलावे। याही प्रकार श्री गोवर्धनधर झूले तथा श्री गोवर्धनलाल झुलावे दोनों एक हे रहे। कबहुक आप संग मिल झूले कबहुक उतर झुलावे। ऐसे ही नन्द को लाल झूले नन्द को लाल झुलावे। ये लीला दर्शन युवती यूथ अटा चढ़ि वैष्णव वृन्द युवति सरूपा उपे अटा चढ़िके देख रहे हैं और जय जय ध्वनी के साथ अपनो तन मन वारत है। आगे जब परमानन्द होय जाय तो कहत है या कारे ने अर्थात् बोलते श्रीजी ने हमारो चितचोर्यो।

या प्रकार आपकी अनेक लीला तथा सेवा शृंगार राजनीति कला कौशल में सर्वोत्तम आचार्य तिलकायत भये। तासों ही स्वर्ण युगदाता कहे गये। आपके राज्य प्रशासन में इतने महकमा हुते—पुलिस कम्पनी, रसाला, तोपखाना, न्यायालय, देवस्थान विभाग, विद्या विभाग, गामाई कचेहरी, श्री सभा, उचित करिणी सभा, हिसाबदफ्तर वारगीरन की चोकी, ताल का जंगलात, वाजाबारी लाइन, फोज बक्सी, बीडा वागात अफसर तथा जब कभी आप बाहर पधारते स्पेशल ट्रेन से पधारते तथा राजकीय पूरी साज तथा उपरोक्त सब विभागन सों सारे व्यक्ति जाते।

अन्त में आपने सिमला में विक्रमाब्द १९९० आश्विन शुक्ला २ को लीला प्रवेश करी। आपके पश्चात् आपके उदीयमान पौत्र श्री गोविन्दलालजी महाराज तिलकायत पदासीन भये।

भाद्रपद कृष्णा २ हिंडोरा विजय विवस—हिंडोला चाँदी को दिवालगिरि कल्लवारी चन्दवा लाल पिछवाई खण्ड प्रथम हिंडोरा वारे लालदुहेरा किनारीके वस्त्र लाल पाग पिछोड़ा चन्द्रिका सादा आभरण मोती के तथा हीरा के पद वारे जड़ाऊ शृंगार मध्य को ठाडे वस्त्र पीरे कर्णफूल को शृंगार प्रातः अथवा सांय हिंडोरा विजय होय तो शृंगार के दर्शन ही हिंडोरा के होय। वेणु धराय आरसी दिखाय हिंडोरा में पधारे झूले फेर सन्मुख चार पद गोविन्द स्वामी के होय। सांय नित्यवत् होय पर गोविन्द स्वामी के ही पद होय। भोग आरती सामिल होय चोथो पद समाप्तीपै समस्त प्रेष्ट सखी तथा प्रिय सखी हिंडोला सहित प्रभु की परिक्रमा चार दे और भीतर आरती में आरती चूनकी नवनीतप्रिय के यहां से थाली की आवे सो होय। सेवानित्य क्रमवत् होय। आज सो हिंडोला की बिछायत दिवालगिरी शयन में न होय आरती उतरते उतरते हिंडोला उतरे। दिवालगीरी बड़ी होय सादा नित्यवत् मंदिर घुवे शयन की सेवा होय मणिकोठा में जरीकी दिवालगिरी भाद्रपद कृष्ण ७ तक एक ही रहे बदले नहीं जडाऊ। साज सब बिदा होय। केवल गादी तकिया लाल रहे।

जब डोलतिबारी की दिवालगिरी उतर जाय तो मणिकोठा में कायकूं रहे? ताको आसय नन्दालय की भावना सों यह ७ तक रहे हिंडोला हू दुपहर के अनवसरहू ७ तक ही बाहर होय फेर शय्या मंदिर में मध्यान्ह में पोढ़े आज आरती में छेल्लो पद होय जो हिंडोरा के पीछे न होय सन्मुख ध्रुवारी के यहाँ होय।

मंगला में—नन्द नन्दन वृन्दावन चन्द। **शृंगार सन्मुख में**—घन गोकुल जहँ गोविन्द आये और सबै वधाई गवे। **राजभोग सन्मुख में**—महा मंगल महराने आज। **उत्थापन में**—झूली पावस रितु आनन्द भर झूली। **वेणु झूले तब**—हिंडोरना हो रोप्यो नन्द अवास। **सन्मुख**—गोविन्द स्वामी के। **शयन में**—जै जैवन्ती के दोनो गवे।

यदि शृंगार में विद्या होय तो—

वेणु धराय आरसी बतावे। तब कीर्तनियागली में ही नन्दनन्दन वृन्दावन चन्द गवे और फेर वेणु झूले तब। तथा सन्मुख उपरोक्त गवे उत्थापन बगेरे में सब वधाई गवें। झली झूली हो पियसंग पावसरितु आनन्द भरी। चरण कमल दोऊ खम्भ भये भुज डाडी चार शिर जुरे मयार लटकन आभूषण बहुरंग। कचघन उनमें बदन गगन पर दमकत दामिनी आड मानो ओर तिलक इन्द्र धनुष भंग। रसिक प्रीतम संग सुरत हिंडोरे यह विधि झूली मोहे करि अनंग।

ये पद हिंडोरा विजय के दिन अवश्य होय है। ताको भाव तथा रसलीला सम्बन्धित होवे सो पोढ़वे के मान में गवे। वैसे वधाई गवे। उत्थापन में हू या भाव सों गवे छेल्लो हिंडोरा होवे से।

पावसरितु आनन्द भर झूली अपने पति के साथ। जामें जुगल चरणार-विंदतो खम्भाभये श्याम सुन्दर स्वामिनी जी के चारों भुजा डाँडी भई जिन के शिर जुरे और आभूषण वह फुन्दना मयार भई। श्री अंग ही घन मण्डल भयो। और स्वामिनीजी के श्री अंग बिजुरी भई तिलक बेदी इन्द्र धनुष भयो या प्रकार सुरत हिंडोरा आप पावस रितु आनन्द भर झूली।

भाद्रपद कृष्णा ३—शृंगार ऐच्छिक छोटो शृंगार होय। पाग पिछोड़ा को भयो लहरिया डूगरसाई को। झीना। ठाड़े वस्त्र श्याम आभरण पिरोजो श्रीमस्तक पर गोल चन्द्रिका मंगला से शयन पर्यन्त बधाइ गवें श्याम पीले हरे वस्त्र तथा लहरिया नहीं धरे। सोसनी बादली हू न धरे। आज सों संध्याति प्रथक् भई भोग आरती अलग होय पूर्ववत्। आज की सेवा कुंजरीजी की आडी की है।

भाद्रपद कृष्णा ४—शृंगार ऐच्छिक—

मुकुट धरे जो भादरवा की बधाई में मुकुट वर्णन बसुदेव गृह के भाव सों।

सारे दिन बधाई गवें। आज पीरे मुकुट काछनी पिताम्बर के शृंगार भये। मुकुट सिलभा सितारा को आयो ठारे वस्त्र सफेद आमरण माफक मोती के वस्त्र खण्ड पाट पिछवाई सब पीरी किनारी के।

मंगला में—प्रथमहि भादोमास तथा शृंगार में भी येही गवें सन्मुख में भी। शृंगार सन्मुख में—पद पूर्ण होत ही—पलना रोप्यो माईरी कमल नयन श्याम सुन्दर राज भोग सन्मुख में—एरी आज नन्द राय के आनन्द। उत्थापन—मेरे गोपाल लड़ायवो हमारो नन्द बड़ो जिजमान। भोग—आज तो गोकुल गाँव केसरिया फूल के। आरती में—आज फिर बादल - तथा चलो मेरे लाडले। शयन—जन्म लियो शुभ लग्न रानी जू जायो है मोहन पूत।

भाद्रपद कृष्णा ५ आपके शृंगार आरम्भ

वस्त्र। पिछवाई। खण्ड एक। बूँदी चूनड़ी। लाल धरती पीरी। बुंदकी पाग पिछोडा ठाडे वस्त्र हरे आभरण पन्ना मोती के छोटो शृंगार कर्णफूल दो साज सब जडाऊ आवे-श्रीमस्तक पे चूम की किलंगी गादी लाल तकिया हरे जडाऊ। पद—गोरस की माखी कीच। मंगला में शृंगार होते में बधाई—आनन्द दधि को उदधि भयो शृंगार सन्मुख में—नन्द नन्दन वृन्दावन चन्द।

राजभोग आये पै ढाडी गवे। राजभोग सन्मुख—हा हा सब ग्वाल नाचे गोपी गावे। उत्थापन—ते पढि नन्द रिझावो। भोग में—हो ब्रजराज को ढाढी आरती में—सुन बडि भागिन हो नन्दरानी। शयन में—महानिशि भादो की आठें शयनार्ति में—भाग सबन ते न्यारो।

गोपी वल्लभ भोग आये बाद वस्त्र रंगे जा समें वस्त्र रंगे ता समय नगारा बजे तथा समस्त वैष्णव सेवक वर्ग सुखावें। नवनीतप्रिया के बगीचा में बासन के थान रंग केसरसों और हाथन पे सुखावे। समस्त वैष्णवगण चौक पर बारे बधाई गावे। तथा वस्त्र सुखावे। मुँह बांधके मुखियाजी महाराज रंगते जाय और दरजीखानां के सब सेवक सहयोग में रहे।

प्रश्न—क्योंजी पांचम कोही वस्त्र क्यों रंगेजाय? ताको आशय या प्रकार है?

उत्तर—पंञ्चामृत होय पंच शब्द बाजे बजे। पंच ज्ञानेन्द्रिय पंच कर्मेन्द्रिय प्रभू के रंग में रंग जाय तासों पञ्चमी को वस्त्र रंगे जाय है।

प्रश्न—और उत्सवन पे तो आपके शृंगार आठ दिन के होय। यामें दो दिन ही क्यों होय?

उत्तर—और उत्सव सखीन के भाव सों अष्ट सखी या यूथाधिपान के भाव सों होय है। जन्माष्टमी में यशोदाजी एवं रोहिणीजी दोनों की ही आडी सो दो दिन आपके शृंगार होय है। तथा चार यूथाधिपान के ही होय। जैसे—५-६-७-८ ये चार शृंगार आपके हैं।

भाद्र पद कृष्ण ६—वस्त्र सफ़ेद हरे लहरिया के पाग पिछोडा—पिछवाई। खण्ड सुनहरी किनारी के। ठाडे वस्त्र लाल सीस पे। नागफणी को। कतरा छोटे शृंगारगादीतकिया लाल जडाऊ चौकी वगैर आभरण माणक मोती के कर्णफूल को शृंगार।

पद मंगला—धन गोकुल जहँ गोविन्द आये। शृंगार होते में—पलना गावे। शृंगार सन्मुख—देत गज बाजि आज ब्रजराज। राजभोग सन्मुख—आज महा मंगल महराने। उत्थापन—फूले गोप ग्वाल नन्दराई। भोग में—बधाई माई आज सुहाई श्री गोकुल। आरती में—हेरि हेरी रे मैया हेरी है। शयन में—रायसा की बधाई गवे। ब्रज मंडल आनन्द भयो जागी। महर पुत्र मुख देख्यो आनन्दित।

देहली

प्रश्न—उत्सवन में देहली वन्दन माल क्यों तथा सरूप कैसो? भाव सो और तामेंहू छोटी बड़ी कैसे?

उत्तर—देहली यहाँ हल्दी की ही मांड़े। हरिद्रा मंगलमय मानी है। तथा नन्द महोत्सव में गायन के ग्वाल बालन के हरिद्रा तेलसो सजाये गये गायें वछरा हरदी तेल से रंजित कीने। "गावो वृषा वत्सतरा हरिद्रा तेल रूषिता" हरिद्रा तैल चूर्ण तैलाविभि:।

यहाँ यह मंदिर हू भावात्मक साकार मान देहली प्रधान द्वार इनको हरिद्रादि से रञ्जित करे है। तासो ही देहली मांडे है। यह कहत है।

घर देवालय दुकान मन्दिर येहू प्रभु देवता भावना राखि पंचोपचार पूजन करें है। जलसो भिगोय के देहली लीपे तामें चंदन गुलाल कुमकुम हलदी सो मांडे फेर वन्दन माल बाधे अक्षत डारे जा दिन देहली मण्ढे तादिन विशेष सामग्री बने। यही पञ्चो पचार पूजन भयो तासो देहली वन्दनमाल मंड़े बंधे

देहली बड़ी जामें चौक पूरे जाय वह वर्ष में तीन दफे मंड़े जन्माष्टमी गुसाई जी को उत्सव, महाप्रभूजी को उत्सव और छोटी हर उत्सव पर मंड़े यामें एक विशेषता एवं भावना परम्परा है। जो मांडले वाके वाद पोछे नहीं मिटावे नहीं

तथा दो अंगुली सो ही मांड़े। बड़ी देहली में चौक पूरे जाय अनेक पदन में मोतिन चौक पुरावो। आदि शब्द मिले है तो यहां कमल वेल तथा अनेक कलात्मक ढंग सों देहली मंड़े वह हरदी की ही मंड़े ये सुवासिनीन के भाव की है।

चन्दन के स्थान पर मांगलिक हलदी सो मांड़े श्रीमद्भागवत में अनेक स्थानन में गली द्वार बजार चन्दन जलसो छिरकवे को वर्णन मिले है।[1]

तासों ही आडी गली माला गली आदि तथा नवनीतप्रिया को बगीचादि के साथ बड़ी देहली मंड़े यामें कोर बांधे तथा चोक मांडे बीच बीच में ब्रज भक्त हू गाये हैं।

नन्द महर घर आज बधाई। आगन मोती चोक पुरायो वन्दन माल बधाई गोविन्द स्वामी आदिन के सने के भाव सो देहली मांढे।

रानीजू सब ब्रज न्योत बुलायो।
तिलक करत लालन बलिजू के मांडत हैं सिंघ द्वार।
भीतर आय देहरी मांडत जहां भये नन्द कुमार।
श्री विट्ठल गिरधरन लाल की वरस गांठ नित होऊ बधाई।

वन्दनमाल—

यह वन्दन माल सदा अशोक पल्लव की बंधें जन्माष्टमी दोहरा बधे जन्माष्टमी के जागरण के दर्शन के समें फूलधरिया कंडीर की केवडा की वन्दनमाल आशापालाकी के उपर बांधे। ताको आशय भाव तथा कहा बंधें—घर में मंदिर में प्रसूतिगृह में द्वारन में बाजार में तथा जहां जहां चोरेहे आदि में ताके नीचे मांगलिक कार्य होय ये आशापालाकी ही क्यों ?

कई पुराणन में वर्णन मिले है भूत पिसाच अनिष्ट निवृत्यर्थ वंदनमाल बांधनी चाहिए। ताही सों प्रधान मण्डपादि में वन्दनमाल बांधे। इतने प्रकार की वन्दनमाल बांधे वामें आम्र एवं आशाके की प्रधानता दीनी है खैर वेर पीलू फालसा सफेद सरसों कण्डीर आदि तथा लाजादि अक्षतादि ताके नीचे विखेरने चाहिए तो अनिष्ट निवृती होय—

१—भाग० ४।२१।२ तथा १०।५।६

लाल सफेद पीरी कडेर की वन्दन माल या लिये बांधे कि या घर में मंदिर में गणेश रिद्धि सिद्धी सहित रक्षार्थ विराजें। द्वार पर यहां पूर्ण पुरुषोत्तम सर्वेस्वर न मानकर निपट नन्दलाल बालक मान वन्दन मालादि बांधे है।

यह वन्दनमाल सूत के डोरा सों ही बंधे न कि सूतरी आदि सों। ताको आसय सूतरी अमंगल में मानी है। सूत जैसे बढ़ें याही प्रकार यह आनन्द की वेल बढ़े तथा यह बालक बढ़े। पलना हिंडोला बगीचादि सब में याही को तोरण कहे वन्दन माल कहे। सूत ही की डोरी आवे। ऊपर कह आये हैं "चैल पल्लवतोरणैः"

अहो ब्रज भयो महर के पूत जब यह बात सुनी। बर बांधी वन्दनमाल अरु ध्वजा कलश सजे" आदि वन्दनमाल बांधबे के अनेक पद हैं लक्ष्मी इन्दिरा स्वयं घर घर वन्दनमाल वर्षात फिरत है।

जन्माष्टमी पे—चौकी पाटिया छाब झांप सब वस्त्र छन्ना गादी तथा समस्त साज नयो आवे। तथा समस्त खिलौना आभरण धुवके स्वच्छ होंय। झारी के छन्ना पर वस्त्र बंटादि सब नये आवें वस्त्र हू नये आमें। सर्वत्र स्वच्छता, निर्मलता, नूतनता आवे ता पश्चात् प्रभुन को पंचामृत हू होय। ताको आशय यह भावात्मक तो नन्दराज के प्राकट्योत्सव ये सब नवीन होनी चहिए। दूसरो वर्ष पर्यन्त सेवकन द्वारा सावधानी राखते भये भी स्पर्शज दोष आय जाय ताके निवारणार्थं अपरसहू निकस जाय तथा विविध सामग्री आरोग श्रम निवारण है जाय। मंगल दिवस सो सर्वप्रथम जन्माष्टमी सो ही ब्रजराज ब्रजलीला करें। सारे वर्ष भर ब्रज में ही प्रभु नन्द राजकुमार ब्रजलीला करते रहे। ताको ही आचार्य श्री ने रसलीला के भाव सों रसमय ब्रजलीला के द्वादश मास ब्रज भक्तन के भाव सों स्थिर कर उत्सव, महोत्सव, महामहोत्सव, नित्योत्सव को सरूप दियो।

ब्राह्मण लोग श्रावणी श्रावण शुक्ला १५ को करें बामें हेमाद्री प्रायश्चित साल भर के ज्ञाताज्ञात दोषपरिहार्थ करें। स्त्रियां रिषी पंचमी में स्नानादि कर ऋषी पञ्चमी व्रत करें। दोष निवृत्यर्थ।

भाद्रपद कृष्ण ७ छठी को उत्सव स्कान्द षष्ठी

पिछवाई पीरी (निबूवा) रूपहरि दुहेरा किनारी की। खण्ड भी ऐसो ही ठाडे हू पीरे वस्त्र पिछोडा लाल पाग सादा लाल मोर पक्ष की। चन्द्रिका सादा आभरण

[1]आपूर्ण कुम्भै दधिचन्दनाक्तैः प्रसून दीपावलिभिः सपल्लवैः।
सवृन्द रम्भा क्रमुकैः सब केतुभिः स्वलंकृताद्वार गृहांसपट्टिकैः॥
(१०-४१-२३)

मोती के । मध्य को शृंगार । कर्णफूल को साज सज्जा झारी आबखोरा बेंडा सब जडाऊ सोना के । पीरे वासन वन्दन माल भीतर की कलाबतू की । सुनहरी चमक की । जडाऊ चोकी वगेर सब जडाऊ तकिया जडाऊ खिलोना वगेरे धुवके जाय तथा जडाऊ सब तरह के नये आमें । आज सों शीतल झुकमा भिजवा दाल बन्द कुञ्जा तूत्यावंद अरगजाकी वरणी । वन्द टेरा वगेरे सब केशरी । हिंडोला खाट बन्द बाहर पोढनो वन्द । मणिकोठा को दुपहर को ।

पद—मंगला में—झगरनीते में बहुत खिजाई । शृंगार होते में—जसोदा नार छेदन देऊ । और भी वधाई । शृंगार सन्मुख में—जसोदा लटकत पाँय धरें । राजभोग आयेपे वधाई सरवे पे वधाई । राजभोग सन्मुख—नन्द के दधि काँदो आँगन । उत्थापन—प्रकट भये श्रीहरि गोकुल । भोग में—जन्मदिन लाल को पुनि आयो सवन । आरती—आछो नीकी सोहत है दे दूध की । शयन में—१ आज छटी जसुमति के सुत । २ मंगलघोष छटी को आयो । ३ आनन्द वधावनो ४ रंग वधावनो । ५ आछो नीको सोहत । ६ माई बाबा लो आनन्द भयो । ७ यह धन धर्म ही ते पायो । ८ श्रावण सुन बाजे मादलरा ।

छटो कहा ? छटी पहले दिन क्यों ? छटी में का मांडे । तथा छटी भोग पूर्व में क्यों आवे ? तथा छठी कायसो मांडे ।

छटी—यह षष्टी देवी देवता है । गौरी पुत्रो यथा स्कन्द शिशु संरक्षिता पुरा तथा ममाप्ययं वालो रक्षतां षष्ठ्यं ते नमः ।"

षष्ठी भद्रा प्रभु के रक्षार्थ माने है—या सम्प्रदाय में देवी नहीं माने । फिर षष्टी देवी कायको पूजे । यह सेवा नन्दालय के शिशु भाव सों है । तासों याको देवी न मान रक्षार्थ माया सरूप माने । कई प्रान्तन में या माया के सरूप सों पूजा कर शीतल पूवादि भोग धरें तथा षष्टी देवी कथा आगे या प्रकार हू सों वर्णन करेंगे ।

पहले दिन या लिये कि छटे दिन पूतना आय गई अरु ताके उपद्रवसों उत्साह उमंग कछू न बनि सक्यो । तातें आचार्य की सेवा प्रकार में प्रथम षष्टीको उत्सव मात्र माने । पूजन तो भाद्रपद कृष्ण ६ को प्रातः पलना में विराजे बाद होय है । पूर्व में छटी के दिन की सारी सामग्री प्रभु को शयन में भोग आवे । तथा छटी पूजन के छटी के पद गानहू शयन समय होय है । तथा उत्सव हू माने है । याके तथा अन्य उत्सवन के पूर्व दिन छटी के भाव को शृंगार होय है । अन्य छटी के शृंगारन सो आज को शृंगार अद्भुत अनूठो नूतन ढंग को अनेक भाव भावित होय है । सो कछू या प्रकार है ।

पीरे ठाडे वस्त्र । पीरे खण्ड । पिछवाई । ताको आशय महाराणी जसोदा जी पीरीया धराय के कन्हैया को गोदी में लेके विराजे है । तासों पीरे खन्ड पिछवाई आमें ।"हेरी हेरि रे मैया हेरी हैं पट पीरो प्योसार को रानी जसुमति पहरे ताही ।" आभरण हू हीरा मोती के आप प्रभु के लाल पाग पिछोडा धरें चन्द्रिका मोर पक्ष की ।

पिछवाई खण्ड जसोदाजी के भाव सो मावित माने हैं । और उत्सव के प्रथम दिन लाल खण्ड पिछवाई आदि होय अरु पन्ना मोती के आभूषण धरें । बाबा नन्दरायजी ने अपने लाल की रक्षार्थ कुल देवी छटी की पूजा करवाई ताको पदाधार पे ये छटी पूजा होय है बाबा नन्द ही करे है उपरोक्त श्लोकाधार पे या पदाधार पे बालक रक्षा की प्रधानता राखी है ।

मंगल घोस छटी को आयो ।
आनन्दे ब्रजराज जसोदा मनहु अधन धन पायो ।
कुंवर न्हवाई जसोदारानी कुलदेवी के पाय परायो ।
बहु प्रकार व्यंजन आगे धारि सब विधि भलो मनायो ।
सब ब्रज नारि वधावन आई सुत के तिलक करायो ।
जय जय कार होत गोकुल में परमानन्द जस गायो ॥

अनेक पदन में अनेक देव पूजन को पुत्र रक्षार्थ पुत्र प्राप्तायर्थ वर्णन मिले है । एक पद या प्रकार है—

(देव गन्धार)

रानी जू उर के शूल मिटायो ।
पायन परत सकल ब्रज सुन्दरि जिन जाय कुमार दिखायो ।
कोन कोन की पूजा कीनी किहि किहि जतन न पायो ।
ऐसो सुत तुमही ने जायो सुकृत सू आड़े आयो ।
चिरजीवो दिन बढ़ो चोगनो सदा ही तुम हुलरायो ।
श्री विट्ठल गिरधरन लाल को नित ही मंगल गायो ।

तासो ही देवी पूजन नन्द बाबा ने करी भागवत में या प्रकार वर्णन है । "एकदा देव यात्रायाँ गोपाला जात कौतुका" अनोभिरनुडुह्युक्तैः

तत्र स्नात्वा सरस्वत्यां देवं पशुपति विभुं ।
आनर्चुरर्हणेर्भक्त्या देवीं चनृपते चन्नृपतेम्बिका ॥ (१०-३४-१-२)

याही कारण अन्याश्रय करवे हेतु । सर्प ने डस्यो परन्तु बालक के लिए सब कुछ कियो सह्यो ।

यहाँ पुष्टि मार्ग में तीन ही पूजा कही गई। वह त्रिगुणात्मिका सत रज तम प्रथम सतोगुणी गोवर्धन पूजा दूसरी रजोगुणी छटी पूजा तीसरी तमोगुणी भट्टी पूजा। सतोगुणी यासों कि गोवर्धनश्री सात्विक सरूप सों सात्विकी पूजा। छटी देवी रजरूपा पुत्र रक्षादि सो रजोगुणी तथा अग्नि तमोगुणी यश अन्नकूट में सर्वप्रथम अग्नि पूजा जरूरी है। अतः भट्टी पूजा या प्रकार पुष्टी मार्ग में सेवा के साथ यह तीन पूजा होय। देव प्रबोधनी में तुलसी पूजा यह भी सात्विकी पूजा है। परन्तु यह विवाह कार्यार्थ होवे सो पूजा रूप नहीं उनके तो मण्डपादि भी स्थित होय हैं। तासो पूजा तीन ही कही गयी।

छटी पहले दिन क्यों ? ताको कारण यह भी हो सके जब तक माया प्रकट के देवत्व को प्राप्त न होय जाय तब तक आप जन्मे और गोकुल नहीं पधारे तथा गोकुल पधारवे पर भी लोगन कूँ मालुम न पड़वे दीनी जब सायुधाष्ट महा भुजा होय पूजी ताके बाद नन्दालय फेर आनन्द भयो तासों ही श्री शुकदेवजी ने चतुर्थ अध्याय देवी की करी। नन्दालय की पाँचवी अध्याय बाद यासों छटी देवी की प्रथम पूजा को विधान बल्लभ सम्प्रदाय में राख्यो।

आज विविध सामग्रीन में विशेष सोंठ की चटनी अरोगे खाजा चन्द्रकला विलसारू तथा दूध (बासोंदी) अरोगे।

छट्टी—दिवाल पे जहाँ पूजा करिवेबारो पूर्वाभिमुख बैठे। तथा छट्टी को मुख पश्चिम की तरफ हो। यासों ही श्रीजी में मणिकोठा के बाहर छट्टी कोठा कह्यो जाय। तामें छटी मंडे जो निज मन्दिर की देहरी सो प्रत्यक्ष दर्शन पूजा करन वारे के होते रहे। तथा पूजा हू करन वारो कन्हैया जसोदाये देख सके।

पूर्व में संचो रस हरे गोबर सों दिवाल लीपें तथा सुगन्धित पत्ता हरेन को कूट के रस निकारि तासो हू लीपे। ताको आशय यह गौ माता को लालन पालन ये करेंगे। गौ सर्वदेव मय है ताको गोवर हू पवित्र करै। ताके ऊपर अथवा हरे पत्तान सो लीपे। जो बनस्पति होत है यह प्रभु वन विहारी विहार करेंगे। तासों तू बन में रस उत्पन्न कर स्नेह रूपी आर्द्रता लैयो अथवा यमुना महाराणी के कच्छार के तथा श्याम श्री अंग के भाव सों यह मांडत है। ए वन चावल कच्चेन कों भिजोय पीसें तामें हरदी मिलावे तथा पीत रंग होय जाय। यह पीत रंग श्री स्वामिनीजी को रंग है तासों वन विहार में तथा जमुनाजी के तट पे प्रिया प्रीतमा सुखेन विहार करे। तासो एपन बनाय तासो माँढें कंकूं यह ललिता भाव सों अनुराग सरूप होत है। और सफेद खड़ी यह चन्द्रावली जी के भाव सों इन पाँच चीजन सो ही छटी माँड़े।

कुंकुम हरदी केशर रंग स्वामिनी रूप और स्वेत चूना चन्द्रावली रूप-उभय संभोगात्मक होयवे सो लाल रंग अनुराग होत है यही कंकू कही गई।

प्रश्न—क्योंजी छटी मांडे तो वामें देवी मांडे अथवा कहा मांडे हैं और छटी में कौन वस्तु मांडे पूजन का वस्तु को करें ?

उत्तर—श्री स्वामिनी जी के चरण के चिह्नन में स्वस्तिका (साथिया) है। ताको वर्णन हरिराय महाप्रभु ने चरण चिह्न भावना नामक ग्रंथ में यों वर्णन कीनो है।

"इह परलोके स्वस्तिकं" तासों आरतीन में हू साथिया तिलकन के थार अन्नकूट वगेरन के थार, आरती के थारन में श्री रानी बहूजी भामिनी बहूजी आदिन के आरती की थारी में वर्णित है। साथियान को यहाँ हू साथिया की ही पूजा होय है।

छटी में बीच में चौकोर रंग-बिरंगी बेलन के बीच साथिया कुकूं को मांडे तासे ही वसुधारा होत है। उपर प्रथम दोनों दिशान में चन्द्रमा सूरज अर्थात् या बालक की रात्रि दिवस चन्द्र सूर्य रक्षा करें। उपर पट वस्त्र को पटका माँडे ताके नीचे आठ साथिया तथा कमल की बेल मांडे, ताके बाईं जेमने दिसी हाथन के थापा तथा शंख चमरादि आयुध मांडे नीचे उपर पलना खाजी खिलौना सब प्रकार के और बाइ दिशि मथना रई सहित तलवार तथा नीचे सिंहासन रूप पाट एवं अन्य साज एञ्छिक बंटा झारी हू कहीं कहीं मांडे। सारी वस्तुन में द्वादश वस्तु अवश्य मंडे वो या प्रकार है। चंद्र, सूर्य, पटका (वस्त्र), साथिया, मथनी, रई, वंशी, पलना, खिलौना, पाड़, कमल, तलवार या प्रकार चार आयुध। ये सो १६ वस्तु मांडे और चारों तरफ वेल वगेरे सो सुसज्जित करें। हरिरायजी ने द्वादश शक्ति मानी तासों यहाँ षोडस शक्तियुता षष्ठी देवी की पूजा होय है। ये छटी सौभाग्यवती बहू बेटी मांडे।

आज के दिन तो एकमात्र साथिया मंडे प्रभु श्री गोवर्धनधर को छटी की सामग्री भोग आवे तथा छटी कों हू कहीं-कहीं प्रसादी वस्तु भोग धरें।

और भाद्रपद कृष्णा ८ को पूरी मांड के सिद्ध करें तथा थाके आगे दीपक चना की दार की चावर मिलमा खिचरी पे धरें पास में छटी के रई लठिया वंशी तलवार धरि राखे प्रसादी सामग्री में छटाबर साजे तामें नग के छबड़ा में साजे उपर छटी के केवड़ा कंडीर तथा चन्दन गुलतुर्रा के बंदनमाल तिकोणी उपर

चौखट पधरावे तिकौनी पुष्पन की चौखट या लिये कि ये त्रिगुणात्मिका शक्ती । सो पूजन प्रकार में त्रिगुणा त्रिकोणी एक कील पर टांके वन्दनमाल उपर छटी के टाँके ।

(१) षष्टी देवी नमस्तुभ्यं सूतिकागृह शालिनी—पूजिता परमयाभक्त्या दीर्घमायु: प्रयच्छ मे ।

(२) जननी जन्म सौख्यानां वर्धनीधन सम्पदाम्—साधनी सर्वभूतानां जन्म देवता त्वां नतावयम् ।

(३) सर्व विघ्नानपाकृत्यसर्व सौख्य प्रदायिनीम्—जीवन्ति ये जन्मामात: पाहि न: परमेश्वरी । राका अनुमिति सिनीवाली कुहु वातघ्ना ।

'विघ्नस्यजन्मदा जन्मदा या जीवन्ति'—ये तीन देवी मांडे ।

कोटरा रेवती ज्येष्ठा पूतना मातृकादय: ।

भाद्रपद कृष्ण ८मी जन्माष्टमी महा महोत्सव—

शंखनाद चार बजे होय । मंगलापर्यन्त की सेवा नित्य क्रम सों होय । बाद टेरा आवे दर्शन खुले ही रहें । भीतर को टेरा आवे प्रभु गोवर्धनधर को स्नान के शृंगार धोती उपरना धरें तथा आभरण सूक्ष्म जो नियत ही धरें । श्री मस्तक वगेरे उतारो रहे । केवल धोती उपरना माती को धरें । केशरी लाल कोर को साज सब उठ जाय । आज बारह महीना में क्षुद्र घंटिका घंटिन की आवे । सोने के श्री हस्त एवं चर्णन में कडा धरें । पिछवाई खण्ड चोकी झारी बंटा सब हट जाय । फेर टेरा खुलें । समाज झाँझमृदंग बाजा सारंगी आदिन सों होय । शंखध्वनी झालर घंटा नगाडा थाली मादल बजें । गीतन वारी गावें । सर्वप्रथम संकल्प होय । फेर तिलक होय अक्षत लगे फेर तुलसी समर्पण होय वीडा दो धरे । फेर पञ्चामृत आरम्भ होय दूध दही घी बूरा सहत । फेर दूध सों स्नान होय दर्शन होत रहें । बधाई पदन को क्रम या प्रकार होय ।

प्रात: किवाड खुलते ही महात्म्य के पद होय । प्रात समे उठ करिये श्री लछमन सुत गान । यह भयो पाछलो पहर । आछो नीको लोनो मुख भोर ही दिखा-इये । मंगल मंगलं ब्रज भुवि मंगलं । फेर झालमृदंगादि सो कीर्तन गवे । "आज गृहनन्द महर के आनन्द" समय होय तो—नैन भर देखो नन्दकुमार । आज बन कोऊ जिन जाय । और भी समय होय—तो आज गृह नन्द महर के ।

पञ्चामृत के दर्शन में—

रानीजू आपुन मंगल गावो । मिल मंगल गावो माई । सोहत फूलन फूली । जो चाहे सुत नीको जू । और भी देवगंधार की बधाई गवे ।

नन्द महोत्सव बड कीजे । दिनभर थाली की आरती, दिन भर जमना जल आदि गवे । जब तक पञ्चामृत होय तब तक फेर दर्शन के बाद टेरा आवे ।

विशेषता—

प्रभु को श्री विग्रह को पञ्चामृत कायकों होय ? ताको आशय या प्रकार है कि सर्वप्रथम वसुदेवजी को प्रभु के चतुर्भुज रूप के दर्शन भये और ता दर्शन में धोती उपरना तथा क्रीट वगेरे धराय के दर्शन भयो । यासों ही पञ्चामृत समय धोती उपरना धरें श्रीमद् भागवत मे हु आभरण जैसे वर्णन किये तैसे सूक्ष्म धरें । "उद्दाम काञ्च्यङ्गद कङ्कणादिभि:" तासोंही सोना के चर्णन में, श्रीहस्त में कंकण सरूप कडा तथा काञ्ची घंटन की कोंधनी धरें और जन्मके प्रात: दर्शन पञ्चामृत के या भाव सों करावे "वसुदेवऐक्षत्" वसु पृथ्वी ताके समस्त देव वैष्णव उनने देखे । भक्त हू गाये है । सवन सों कहत जसोदा माय । जनम दिन लाल को पुनि आयो ।

केशर चन्दन घोरि कान्ह वलि प्रथम न्हवाये ।
नाना वसन अनूप कनक भूषण पहराये ।

अत: धोती उपरना के तथा सूक्ष्म आभूषण के शृंगार होय है । आचार्य श्री वल्लभ तथा तद् वंशज अपनी अपनी रुचि अनुसार सेवा शृंगार करे ताको आशय श्री कृष्ण वाक्य के आधार सों करें । श्रीमद्भागवत एकादश स्कन्ध में उद्धवजी के प्रति श्रीकृष्ण आज्ञा करे है ।

"अलंकुर्वीत सप्रेम मद्भक्तो मां यथोचितम् ।" ११-२६-३२

मेरो भक्त प्रेम सो यथोचित जैसो जचै मोकों अलंकारन सों सजावे ।

वसुदेवजी ने सर्वप्रथम दर्शन करत ही मानसी पूजा कीनी होयगी । ता समय मधुपर्कादि कीने जाय है । तासो प्रथम पञ्चामृत भयो भीष्मक राजा ने भगवान् को आतिथ्य कियो मधुपर्क कियो और पूजा कीनी ।

मधुपर्क अपानीय वासांसि विरजांसिस: ।
उपायनान्यभीष्टानि विधिवत् समपूजयत् ॥ १०-५३-३३

यासों पञ्चामृत कियो जाय । सर्वप्रथम संकल्प करें । ताको आशय या प्रकार है । गत वर्ष के दोष परिहार कराय संकल्प प्रतिज्ञा करे कि अब प्रभु कृपा करे तो ऐसो दोष न करूंगो ताके बाद तिलक करें वह तिलक श्रीमस्तक पर करे कुंकुम को अर्थात् हमारो अनुराग आपके मस्तिष्क में सदां बन्यो रहे । ओर वह अनुराग रूप लाल कंकू प्रतीक है । पाछे अक्षत लगावे वो अनुराग अक्षत जो

क्षत न होय तासों लगावे और ताके बाद तुलसी समर्पण करे जैसे तुलसी हरि प्रिया है तैसे ही श्री चरणन के प्यारे हम बने रहै फेर तांबूल बीड़ा भेंट धरिके पञ्चामृतारम्भ होय

दूध—सुधाणु आविर्भाव हेतु—स्वामिनी भाव सों दही। चन्द्रावलीजीके भाव सों बूरा—कुमारिकान के भावसों घृत—आर्द्र स्नेहत्व के भावसों सहत—समस्त वनौषधीन सो समुद्भूत रस संग्रह सों ब्रजभक्तन के भावसों।

ये सब सुधा आविर्भावार्थ माने है। या प्रकार पञ्चामृत होय है। और प्रभु श्री गोवर्धनधर शुद्ध समय स्नान करें भगवदीय हू गाये है।

श्रवण सुन वाजे मादलरा आज निशि लागत परम सुहाई।
पंचामृत शीशन सों ढारत नाचत नन्द नचायो॥ (श्री भगवानदास)

फेर पंचामृत भये बाद टेरा आयके अभ्यंग उबटन तथा केशर स्नान होय और ये सेवा सब भीतर होय। भीतर अभ्यंगादि होय तब ये पद गवें—

अहो व्रज भयो महर के पूत जब यह बात सुनी। श्रवण सुन वाजें मादलरा।

महाप्रभूजी के अभ्यंग होय तब—

रानीजू आपन मंगल गावो। मिल मंगल गावो।

फेर शृंगार होय। वस्त्र केशरी चाकदार बागा सूथन लाल। कुल्हे। केशरी ठाडे वस्त्र मेघश्याम। जोड कुल्हे को मयूर पक्ष पांच को। आभरण उत्सव के तीन जोड के कुण्डल वगेरे सब जडाऊ पहुँची आदि तीन जोड की चोटी हांस त्रवल वघनखा कठलादि सब भारी सों भारी शृंगार होय। चोखटा जडाऊ आवे। उपरमयूर नृत्य वारी आरती वड़ी। कमल। मोती की पिछवाई लाल सुनहरी किनारी के लफ्फाकी। खण्ड हू लाल। वनमाला को शृंगार। वैजयन्ति माला केवल गादी की चादर सफेद आवे। बाकी सब साज जडाऊ लाल।

विशेषता—

वैजयन्ति माला तथा वनमाला के शृंगार तथा भारी शृंगार को वर्णन या प्रकार ग्रन्थन में कियो है। नवरत्न के आभूषणादि धरें।

भक्ति सुधार्णव ग्रन्थ सों—

वैदूर्य मुक्ताफल नील वर्ज्यैः समाणिकैः संग्रथिताहि माला।
वायोरपाभूभिख तेजसां हि तत्वैः प्रदिष्टा खलु वैजयन्ति॥
श्वेतेसितैस्तथा रक्तैर्हरितैर्नील वर्णकैः॥
पुष्पैरेभिःसुगन्धैश्च वैजयन्त्यस्ति मालिका॥ २॥

श्रीमद्भागवत—श्रीवत्स लक्ष्मं गलशोभिकौस्तुभं पीताम्बरं सांद्र पयोद सौभगम्। कुण्डल वर्णन मकराकृत—

वक्त्राननं मकर कुण्डल चारु कर्ण। भ्राजत्कपोल सुभगं सविलासहासम्॥ ६-२४-६५

पीताम्बर के भाव सों केशरी बागा चाकदार सान्द्रपयोद को ठाड़ो वस्त्र मेघश्याम। या प्रकार वस्त्र तथा आभूषण "महार्ह वैदूर्य किरीट कुण्डलत्विषा परिष्वक्त सहस्रकुन्तलम्" उद्दाम काञ्च्यङ्गण कङ्कणादिभिः॥ १०-३-६-१०

किरीटिनं कुण्डलिनो हारिणो वन मालिनः।
श्री वत्साङ्क ददौ रत्न कम्बुकङ्कण पाणयः।
नूपुरैः कटकै भीता कटि सूत्राङ्गुलीयकैः।
अंघ्रिमस्तकमापूर्णा तुलसी वनदामभिः॥ १०-१४-४७-४८

या प्रकार विविध रत्नादि के शृंगार होंय। फेर दर्शन। खुले नित्य क्रम सेवा होय।

शृंगार सन्मुख में—आनन्द आज नन्दजु के द्वार-तिलक होय तब सारंग की अलापचारी होय—ये पद गवे—

आज बधाई को दिन नीको

वर्ष पत्र बचे जब तिलक होय तब नौबत मादल गीतनवारी गावे शंख झालर घंटा बजते भये तिलक होय। अक्षत लगे। भेट धरी जाय सन्मुख हल्दी को चोक पूरे। आरती। राई लोन नोछावर होय। वर्ष पत्र बाचे ताकू वीड़ा मिले।

विशेषता—

जन्म पत्र बंचनो तिलक आरती होनी यह वसुदेवजी के यहां जन्म दिन लीला होय है। तासों ही वर्ष बने। तिलक होय सन्मुख चोक मण्डे। और आज गोपी बल्लभ भोग आवे। ग्वाल नहीं बोले। ग्वाल भीतर ही अरोगे गुड़ तिल दूध की लोटी धरी जाय और सतिलं संमिश्र० ये श्लोक बोल्यो जाय। फेर नित्य क्रम की सेवा होय। राजभोग पर्यन्त अनवसर होय। बीच में राजभोग की आरती वाद खेल होय थापा लगें। सर्वत्र शय्या मन्दिर में सोना को वंगला आवे। तामें सारी तैयारी होय वह जड़ाऊ साज के संग ही आवे। और जड़ाऊ साज के साथ ही बड़ो होय।

सलिलं गुड़ सम्मिश्र मंजुल्यार्धमिदं पयः।
मार्कण्डेयाद्वरंलब्धा पिवाम्यायुसमृद्धये॥

राजभोग आयवे पे ये पद गवें—

(१) नन्दजू मेरे मन आनन्द भयो। (२) नन्दजू तुमरे सुख दुख गये सबन। (३) हों ब्रज माँगनो ब्रज तज। (४) ब्रजपति माँगिये जू।

भोग सरे माला बोलेपै—

(१) बधाई बाजे आज सुहाई श्री गोकुल। (२) जन्म दिन लाल को पुनि आयो। (३) बाजत कहाजु बधाई गोकुल में। (४) ग्वाल देत है हेरी घर घर। (५) तुम जो मनावत सोइ दिन आयो। (६) नन्दजू तुमारे आयो पूत। (७) वधावो आज नन्द महर के। (८) आँगन नन्द के दधि कांदो। (९) आज महा मंगल महराने। (१०) गह्यो नन्द सब गोपिन मिल।

राजभोग सन्मुख में—बडी आरसी हुस्ताजी के यहाँ की आवे। **पद या प्रकार होय**—हेरी हे आज नन्दराय के आनन्द। हाँ हाँ सब ग्वालन नाचे गोपी॥ **उत्थापन**—आज छटी मंडे बाद शंखनाद होयके सेवा होय। आज समस्त सेवकन के घर की जो भीतरिया सहचरी है उनके घर की तथा गोस्वामि बालकन के वहू बेटी छटी मांडे। आज आछी भाँति चीते तब शंखनाद होय उत्थापन होय। उत्थापन में याही भाव को पद दशोधी को होय वह या प्रकार है। माला गली आड़ी गली सर्वत्र सब जनी माँडे तासों ये भावात्मक पद होय—

माँड़े द्वार हरद रोरी सो लागत परम सुहाय।
वन्दन माल साथिये कोरन आछे चित्र बनाये।
गलिन गलिन में यही कुतूहल कहत कहा निधि पाये।
अति रस उसगि भरे नर-नारी नन्द भवन में आये।
श्री विट्ठल गिरिधरन सबन मिल ले ले गोद खिलाये॥

भावार्थ—माँडे सुवसिनी हरदी (एपन) रोरीसो सर्वत्र वह परम सुन्दर लागत है जहाँ तहाँ वन्दन माल वँधी है गलिन में अच्छे चितराम किये कहूं कमल कहूं साथिया, कहू पलना, कहू सिंहासनादि अथवा छटी जो माँडी वह आछे कोरन सों माडी और विलम्ब होवे सो गलिन गलिन प्रति यही कोतुहल कब दर्शन होंय कहत कहा निधि पाये और उल्लास उत्साह सो सब नन्द भवन श्रीजी के धाम में धोली पटिया नगार खाना पीतम पोली आय बैठे वही नन्द भवन में जब शंखनाद भये नौबत बजी तब गिरधरन श्री बिट्ठल के प्यारे सबन ने मिल के गोद खिलाये दर्शन कर जीवन धन्य कियो यही गोद खिलाये वहाँ नन्दालय में सब पहुंच के

थापे लगाये साथिया कोरे चीते और गोवर्धनधरन गिरधर को गोद लेले खिलाये। या पद के तथा अनेक पद भावात्मक सरूप अनुकूल समय के पद गवे तथा नियम में गवें। आज भोग आरती पृथक् होय तथा शयन भी बाहर होय।

आज कीर्तनिया गली में वे नांदें दधि दूध की जो रक्षाबन्धन से अन्नकूट रसोई में सिद्ध होती वे यहाँ राखी जाय है कारण-प्रभात में दधिकाँदा में काम आवेंगी।

भोग के दर्शन सन्मुख में—

गोपाल लाल चले गोकुल कों हो वलि-वलि तिहि काल।
मोद भरे वसुदेव गोद ले सकल लोक प्रतिपाल॥

आरती सन्मुख में—चलो मेरे लाडले पायन पंजनी के चाप। **शयन भोग आयवे पर**—कान्हरा की तीन अध्याय की वधाई गवे। बाल विनोद भावनी लीला अतिपुनीत सुनि। **शयन सन्मुख**—यह धन धर्म ही सों पायो।

विशेषता—

दो ढाई वजे के समय सो गोस्वामि तिलक के वड़े जनाना में ज्योतिषी साथिया माँड़ि घड़ी जल की तिरावे। तथा वरावर लग्न सिद्धि करत रहे जव समय होत तब ठीक रात्रि के ११ वजे के अनुसार आपके जन्म की सूचना दें तथा सखड़ी रसोई के स्थान पे सुद्ध होय के पलना गहना घर सों साज सहित यहाँ पधरायो जाय। शयन आरती उतर चुके वाद राजभोग को साज जामें समस्त खिलोनादि आवे और प्रभु को मणिकोठा में खिलाते रहें। कीर्तनिया समाज सहित डोल तिवारी में गोल देहली के चारों दिश बैठ के ये वधाई गावें जब तक ज्योतिषी जी लग्न सिद्धी को आयके न कहे तव तक श्रीजी खेलते रहे पद या प्रकार गवें बीच में फूलघरिया वन्दनमाल सब ठिकाने वांधे। दर्जी को मुखीया सूवा टाँगे। ये ही दर्शन शयन के जागरण के जन्म के माने हैं।

प्रश्न—श्रीजी में में तो जागरण न होय। फेर आज जागरण काय कों?

उत्तर—ब्रजवासिन के घरन में रतजगा दो होय है एक बहू आवे तब देवता को रातीजगा कहे दूसरो वालक जन्मे तव वालक जन्में तव लोग वाग रतजगो करें। जच्चा-वच्चा सोते रहे देवता के रातीजगा में सब जगे यहां यह रातीजगा वच्चा के जन्म को है तासो जागरण कह्यो गयो। श्रीजी में नन्दालय की लीला गोलोक नायक होते भये आज करें। प्रबोधनी में वहू आयवे की रातीजगा की रात्रि जागरण या लिये नहीं होय सदा सर्वदा विराजमान स्वामिनीजी है और देव जागरण स्वयं करें। स्वयं देव है। यासों मण्डप में ही विराजे। चार भोग न आवे न जागरण होय।

(१) पद्म धर्यो जन ताप निवारण। (२) मोहन नन्दराय कुमार। (३) वन्दे धरन गिरिवर भूप। (४) हरि जन्मत ही आनन्द भयो। (५) रावल के कहे गोप आज ब्रज। (६) ऐसो पूत देवकीने जायो। (७) गावत गोपी मधु मृदुवानी। (८) प्यारे हरि को विमल यश गाव। (९) भादों की अतिरेन अधियारी। (१०) आठें भादों की अधियारी। (११) अध्यारी भादों की रात। (१२) भादों की अतिरात अंध्यारी। (१३) आनन्द वधावनो। (१४) रंग वधावनो। (१५) जन्म लियो शुभ लग्न। (१६) माई आज आनन्द भयो। (१७) आछी नीकी सोहत। (१८) सुन बहु भागिन हो। (१९) भाग सबन ते न्यारो। (२०) आज निशि लागत परम सुहाई।

या प्रकार कीर्तन होत रहे साढ़े ग्यारह बजे समय होय तब सरक टेरा आवे दर्शन बन्द होय। राजभोग को साज वगेरा उठे। पञ्चामृत की तैयारी होय चारों तरफ दर्वाजादि बन्द होय हल्ला सब ठौर बन्द है जाय। और ठीक पोने बारह बजे मणिकोठा में अन्तरंग सखियां जो भीतरिया मुखिया बैठे। छठी वारे कोठा में कीर्तनिया को मुखिया बैठे दस-पन्द्रह मिनट चुप रहिके श्रीमद्भागवतोक्त कृष्ण जन्म समय पूर्व समय चित्रण के आठ श्लोक तीन बार बोलें। फेर घंटा नाद होय तोपें चले मगाड़ा बजे मादल बजे कीर्तनिया एक पद बिना साज के गावें–अहो ब्रज भयो है, महर के पूत जब यह बात सुनी। फेर श्रीबालकृष्ण लाल के पञ्चामृत जैसे मंगला पूर्व श्रीजी को भयो वा विधि सों पञ्चामृत होय फेर चन्दन सों स्नान होय बालकृष्णजी को श्रीजी की गादी में विराजे। माला धरें। फेर तिलक दोनों सरूपन के होंय। फेर शीतल भोग आवे दर्शन बन्द होय भीतर कोई कूं भी दर्शन न होय जो सखि या सेवक जाय सके उन्हें ही दर्शन होय है।

या सेवा की विशेषता, आशय, भावना—शयन आरती होय चुके बाद राज-भोग को पूरो साज आवे ताको आशय यह कि राजा इन्द्र की भाँति आप विराजे समस्त देवता आपकी स्तुति करें तासों ही बाहर कीर्तन रूप स्तुती के भाव पद गान होय। वे जितने भक्तन के पद होवे ही उपरोक्त वीस पद गान होय ताको आशय स्तुती रूप है। ब्रज ललनान ने गोपी गीत में उन्नीस श्लोक कहें आचार्य ने इन्हें भिन्न-भिन्न गोपीन की स्तुती प्रार्थना मानी है तासों ये पद ब्रज गोपीन के भाव सों होय है।

कारिका—

"एको न विंशति विधा गोप्य स्वरूपाधिकारतः।
एको न विंशति विधां स्तुतिं चक्रुर्हरेप्रियाम्॥"

"सेवारीति प्रीति ब्रज जनकी" तासों पद गवे।

कारावास में प्राकट्य होवे सों भीतर पंचामृत होय। दर्शन काहू कों न होय। जहाँ होय तहाँ गुरु कृपा है यहाँ तो कारावास में जन्म मानिके भीतर होंय।

समय भये टेरा आवे। सबन को हटावे। साज उठें याको अर्थ एकमात्र कारावास में वासुदेव देवकी हुते और वाही कारण सबन को चुप राखें।

लोकरीत्या आसन्न प्रसव में मौन रहनो लौकिक सिद्धान्त है। फेर पंचामृत तैयारी के बाद आठ श्लोक मणिकोठा में बैठके बोले वो भी तीन दफे ताको आशय तथा आठ श्लोक को आशय—

"अथ सर्व गुणोपेतः कालः परमशोभनः" यहाँसो प्रारम्भ होय के देवक्यां देवरुपिण्यां विष्णुः सर्व गुहाशयः" यहां तक बोले। यामें जब अन्तःकरण शुद्ध होय तब ही प्रभु प्रादुर्भाव होय। तासों ही काल—भगवान काल से परे है और सेवा में काल बाधा न दे यासों ये श्लोक बोले अब काल सुन्दर बनेगो। दिशा—दिशा देवी रूपा है। उनके स्वामि प्रकट होवे सो प्रसन्न भई। सेवा में पुष्टिमार्ग चारों दिशान में समस्त वैष्णवन को आनन्द मिले ये प्रार्थना हेतु। पृथ्वी—पुराणन में प्रभु पत्नि दो मानी एक लक्ष्मी दूसरी पृथ्वी। संपति के मालिक प्रभु प्रकटे। वामनजी के स्पर्श के बाद अब सुख मिलेगो। वासे प्रसन्न। यहाँ वैष्णव की मूर्धन्य ब्रज भूमि है सो जहाँ जहाँ पुष्टि मार्ग है वहां की पृथ्वी ब्रज बन जाय यासों श्लोक पढ़ें। नदियां—जिनके जल सो हमारे आचार विचार स्वच्छ रहिके अपरस मर्यादा निभी रहे। हृद्–तालाब उपरोक्त जहां तलाव है वे प्रभु सुखार्थ पूरे रहे या चाहना सोंबोले। अग्नि–अग्नि कुल वल्लभ वंश की प्रसन्नताहोयगी तो हमारे प्रभु सेवा अंगी कार करेंगे। वायु–गोवर्धनधर के प्राकट्य बाद समस्त सुखार्थ सुन्दर शीतल वायु बहे। आकाश—घटाकाश पटाकाश मनाकाश आपके प्राकट्य सों सेवा मिले। और मनाकाश स्वच्छ निर्मल बने। नक्षत्र—गृह गोचर नक्षत्र प्रभु सेवा में बाधा न देवें तासों ये पाठ करे। मन—प्रभु में लग्यो रहे—यासों श्लोक पाठ करे।

ये दशेन्द्रिय रूप तत् तत् देवतान की वन्दना करें। तीन बार या लिये बोले कि सात्विक राजस तामस भक्तन के उद्धारार्थ प्राकट्य भयो है। अथवा तीन बार निश्चयार्थ शांति पाठ में भी शांति शांति शांति तीन बार बोले तीन लोकन में आनन्द भयो तासों तीन बार बोले तीन लोक को वर्णन गोपालदासजी को पाताल शेषनागकी क्रिया—उपर देवतानभे मों सुण निशाण बजडाविया"

फेर घंटानाद होय। यह पुत्रोत्पत्ति के सूचक घंटा नाद होय और होवत ही

कीर्तनिया गावे। तोपें चलें। वेन्ड बजे नोवत नगारा बजे। अर्थात् पुत्ररूप सों कन्हैया प्रकटे या वधाई हर्षोल्लासित होय है ।

दुबारा पञ्चामृत क्यों ? याको प्रमाण—

"बभूव: प्राकृत शिशु:" जब वसुदेवजी के सन्मुख दूसरो सरूप बालक बने तबहू वसुदेवजी ने पंचामृत कियो अर्थात् मानसी पूजन करी। तासो दूसरो बालकृष्ण जी को पंचामृत होय है। यासों ये दूसरो पंचामृत राख्यो।

जब तिलक होय माला धरें पीताम्बर उढाये याको आशय विदा करत वसुदेवजी के यहाँ पञ्चामृत करके तिलक पीताम्बर धरावे और फेर शीतल भोग आवे तब पधारें या भाव सों।

शीतल भोग को आशय—

जन्म के बाद तथा पधारवे के बाद शीतल भोग अरोगावे तो मिश्री कों जल में घोल के इलायची, गुलाबजल पधराय के शीतल बनावें।

मिश्री सर्वप्रथम जगद्गुरु महाप्रभु ने प्रकट होते ही मिश्री एवं पवित्रा भेट कर भोग धर्‌यो। अत: सेवा प्रणाली में सर्वप्रथम मिश्री रसमय मधुरातिमधुर एवं वामें आद्रर्ता स्नेह परिपाक हेतु वह सौरभ फैलावे तासों सुगन्धित द्रव्य मिलावे प्रथम जो सरूप बाहर से श्रीजी के पास पधारे सर्वप्रथम शीतल आवे तथा जयन्तिन में हू शीतल आवे याही कारण शीतल भोग अरोगें। सोनाकी कटोरी तिरावे ताको आशय जब-जब भी प्रभु पेय पदार्थ अरोगे तब तब सोनाकी कटोरी सो अरोगे ताको आशय यह है कि आयुर्वेद-शास्त्र में सोना के पात्र को जल तथा पेय पदार्थ शुद्ध होय के रोगमुक्त करें छोटे बालक को जन्म होते ही जन्मघुटी दें तथा आगन्तुक व्यक्ति को आतिथ्य में जलपान करावें। माता जहाँ भी जाय के बैठेंगी सर्वप्रथम बच्चा को स्तन पान करावेगी अत: जन्म होते ही शीतल-भोग आवें।

शीतल भोग सरते ही प्रभु के केशर के कमल पत्र होय चोवा, चन्दन, गुलाल, अबीर इन चार वस्तुन सों सूक्ष्म खेल होय। ताको आशय—केशर को कमल पत्र आज ही या कारण होय है। छोटे बालक के कोइ अंग में केशर केछाँटा देवेसों रोग-दोष दूर होय है तथा कष्ट निवृती। भावात्मक प्रथम श्री महाप्रभू (श्रीस्वामिनी) जी कपोलन को चुम्बन करै तथा जसोदाजी अथवा केशर की खोर कमल पत्र को आशय यह भी है कि जसोदाजी चन्दन सों कमल-पत्र करें श्रीमद्भागवत में—

नीवी वसित्वा रुचिरां दिव्य स्रग् गन्ध मंडितौ। (१०-१५-४५)

कृष्ण उद्धवजी के प्रति एकादशस्कन्ध में पूजा प्रकार में आज्ञा करें—

चन्दनोशीर कर्पूर कुंकुमागुरुवासितैः। (११-२७-३०)

चन्दन, खस, कपूर, केशर, अगर सो मिश्रित चन्दन लगावे तासों ही पुष्टि मार्ग में चन्दन में केशर, कपूर, खस को अतर तथा अगर के स्थान में कस्तूरी गुलाब को अतर बगर डारि के लगावें तासो सर्व प्रथम प्राकट्य होवे पर केसर को कमल पत्र करें।

गुलाल, अबीर, चन्दन, चोवासो खेल—ताको आशय ब्रजलीला को प्रारम्भ होय है। वसुदेव गृह मथुरा लीला की लीला सम्पूर्ण होय नन्दालय लीलारम्भ यहाँ चार यूथाधिपान की विशेषता है। तासो ये खेल खिलाये। निकुञ्जादि में चोबा जमनाजी, चन्दन स्वामीनिजी, अबीर चन्द्रावलीजी, गुलाल ललिताजी, वल्लभाचार्य विट्ठलवर दामोदरदास एवं जमना महाराणी। अत: या सेवा क्रम में खेल आरम्भ। है। भक्तन ने भी जन्मोत्सव में इन्हें बुलायवे को वर्णन कियो है। प्रथम ही भादों मास अष्टमी रोहणी बुधवारी।

चन्द्रावली ब्रज मंगल राधे करि करि के लाड लडायो।
उनही के भाग दियो फल हम कूं उनही पै मंडवायो।
और हू पदन में वर्णन है—यह दिन कैसेहू आयो
चन्द्रावली ब्रज मंगल राधै रहसि करत मनभायो।

तासों यह सिद्ध होत है कि ये चार यूथाधिपान के भाव सों प्रभु खेले क्रीड़ा करें सर्वप्रथम।

गोस्वामी नित्यलीलास्थ द्वारकेशलालजी के वचनामृत :—

एक समें प्रसन्न मुद्रा में बिराजे महाराजश्रीसों एक ने पूछी कि गोकुलनाथजी विट्ठलनाथजी मदनमोहनजी पालने झूले तब स्वामिनीजी एवं चन्द्रावलीजी के संग पलना कैसे झूले। प्रकट होते ही युगल छवि के दर्शन कौन से भाव सों होय ?

आप बोले जब बडो उत्सव होय तब समस्त अपनो परिकर बहन बेटी सम्बन्धीन को बुलावे। वे अपने घर वे आवे उनमें बहुतन के बालक भये। २०-२५ दिन के बालक हू संग आवे तो घर में बड़ी बूढ़ी होय सो कहै—जा लाला को पलना बडो है। वामें सुवाय देय और वह जायके सुवाय देय और कामन में लग जाय। याही भाव सों यहाँ युगल सरूप पलना झूलें।

रानीजू सब ब्रजन्योत बुलायो ।
आवत जात रहे नरनारी कैसो लगत सुहायो ।
बाजे संग सकल गोपिन के ग्वाल लिये कर थारी ।
अति आनन्द सबै मिल गावत किये रुचिर शृंगारी ।
तिलक करत लालनु बलिजू के मांडत सिंध दुवार ।
भीतर जाय देहरी मांडत जहाँ भये नन्द कुमार ।
जसुमति बैठी रहसि हँसि बोली भले-भले तुम धाई ।
श्री विट्ठल गिरधरन लाल की वरस गांठ अब होत बधाई ।

पीताम्बर लाल दर्याई को धरें ताको आशय—

यह जन्म के समय पंचामृत पूर्व विछाय के धराय पंचामृत करें । पंचामृत भये बाद जा सरूप को पंचामृत होय ताको उठाय माला धराय तिलक करे । आज श्रीनाथजी कोंहू धरावे । बारह मास की जयन्तिन में आज ही पीताम्बर रात्रि में धरें सो (पोतरा) कह्यो जाय । वह पीताम्बर दर्याई नयो रेसम को सिद्ध होय है । और बाय धराये फेर बड़ो होयवे पर समस्त सेवक वैष्णवन में बटे । या वस्त्र की लीरी कंठी में यन्त्रन में बांधवे धरवे सो अनेक व्याधी दूर होय । तासों ये धरावे । वसुदेवजी के यहाँ दर्शन भये तब वर्णन मिले है । **"पीताम्बरं सान्द्र पयोद सौभगं"** सो धरावे बाद महाभोग आवे । धूप दीप होय ।

महाभोग कहा ? याको नाम महाभोग कायकों राख्यो ?

यामें विविध सामग्री के साथ विशेष में पंजीरी भोग में आवे । सारी वस्तु सखडी अनसखडी दूध घर के नेग तथा अन्य जो विधि है ता प्रकार अरोगे धूप दीप होय । भोग तुलसी शंखोदक होय फेर पट बन्द होय प्रायः एक डेढ़ बजे तक भोग सजके धूप दीप होय फेर चार बजे माला बोले भोग सरे ।

प्रश्न—महाभोग को समय तीन घंटा को क्यों लेय ताको कहा आशय ?

आचार्य महाप्रभू जन्माष्टमी को जन्म कराय मातुश्री के साथ गिरिराज की परिक्रमा देवे गये, तासों तीन साढ़े तीन घंटा भोग आवे ।

प्रमाण—श्री गोवर्धनधरन को जन्मोत्सव हि कराय ।
गिरि परिक्रमा मातु को श्री वल्लभ करवाय ॥

श्रीनाथजी

श्रीनाथ-सेवा-रसोदधि

चतुर्थ तरंग

भाद्रपद कृष्णा नवमी से आश्विन कृष्णा अमावस्या तक